प्रस्तावना.

नीति ए धर्मनो मूळ पायो छे. कारणके नीतिकुशल पुरुषोज धर्मनो वधु फेलावो करी शके छे. वळी कोइपण प्रजाना अभ्युदयनो आधार तेनी नीतिपरायणताउपरज रहेलो छे एटले के जे प्रजा जेम जेम उत्तम नीति उपर आरूढ थती जशे तेम तेम वधुने वधु आबाद थती जशे. माटे दरेक माणसे नीतिना नियमोने पूरेपूरा समजीने तेने अनुसरी वर्तवुं जोइये.

आ आर्यावर्त्तमां प्राचीनसमये लोको एटला बधा नीतियुक्त हता के ते समयने आजे सत्ययुगना नामे ओळखवामां आवे छे. अने जे प्रमाणमां तेओ नीतियुक्त हता तेज प्रमाणमां तेओ ते काळनी इतर नीतिहीन अनार्य प्रजाओ करतां वधु आबाद थएला हता एम आपणने प्राचीन इतिहास वांचतां तरत मालम पडी रहे छे.

आपणा श्रीजैनधर्मना अनुसारे आ नीतिमार्गनो पदेश प्रथम प्रसार त्रीजा आराना छेडामां सात कुलकर उत्पन्न थया त्यारथी शरु थइ प्रथम तीर्थंकर श्रीऋ[illegible] देव भगवान तथा तेमना [illegible] चक्रवर्ती श्री[illegible] राजना समयमां पूर्णरूपमां

[illegible] ळ, तथा भावना अनु-
[illegible] नो [illegible] वाय-
[illegible] वे.
[illegible] र [illegible] वक
[illegible] तेमज
[illegible] रहे छे.

प्रस्तावना.

नीति ए धर्मनो मूळ पायो छे. कारणके नीतिकुशळ पुरुषोज धर्मनो वधु फेलावो करी शके छे. वळी कोइपण प्रजाना अभ्युदयनो आधार तेनी नीतिपरायणताउपरज रहेलो छे एटलुं के जे प्रजा जेम जेम उत्तम नीति उपर आरूढ थती जशे तेम तेम वधुने वधु आबाद थती जशे. माटे दरेक माणसे नीतिना नियमोने पूरेपूरा समजीने तेने अनुसरी वर्त्तवुं जोइये.

आ आर्यावर्त्तमां प्राचीनसमये लोको एटला बधा नीतियुक्त हता के ते समयने आजे सत्ययुगना नामे ओळखवामां आवेछे. अने जे प्रमाणमां तेओ नीतियुक्त हता तेज प्रमाणमां तेओ ते काळनी इतर नीतिहीन अनार्य प्रजाओ करतां वधु आबाद थयला हता एम आपणने प्राचीन इतिहास वांचतां सरल मालम पडी रहेछे.

आपणा श्रीजैनधर्मना अनुसारे आ नीतिमार्गनो पहेलं प्रथम प्रसार त्रीजा आराना छेडामां सात कुलकर उत्पन्न थया त्यारथी शरु थइ प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव भगवान तथा तेमना ज्येष्ठपुत्र प्रथम चक्रवर्त्ती श्रीभरतमहाराजना समयमां पूर्णरूपमां प्रकाशवा लाग्यो.

नीति एटले वर्त्तमान द्रव्य, क्षेत्र, काळ, तथा भावना अनुसारे स्वपरहितावह आचार पाळन करवानो कायदो. आ कायदाप्रमाणे वर्त्तनार पुरुषो शिष्ट एटले भलावायक वर्गमां गणायछे. अने तेथीज नीतिने घणीवेळा "शिष्टाचार" एटले भलावायक जनोनो आचार एवा नामथी पण ओळखवामां आवेछे. तेमज नीतिमार्गने न्याय मार्ग एटले इन्साफनो रस्तो पण कहेवामां आवेछे

आर्यलोको पोताना पुत्रपुत्रीर्डने नीतियुक्त बनाववामाटे एटला उमंगी रहेता के तेर्ड तेमने पांच वर्ष पूर्ण थतां लागलाज निशाल एटले "नीतिशालार्ड" मां सारा उपाध्यायो (टीचरो) ना हाथमां सपुरद करता; ज्यां कुमार आर्यपुत्रो वीस वर्षलगी मावापनुं मुख जोया वगर केवल गुरुना तावामांज रहीने ब्रह्मचर्य राखवासाथे अने नीतिपालन पुरस्सर सकल विद्यार्ड तथा कलार्डनो अन्यास पूर्ण करी पहेलो ब्रह्मचर्याश्रम पूर्ण करता; अने आर्यपुत्रीर्ड चार वर्षनी उमरे आवतां स्त्रीशिक्षकोना हाथतले रही बारवर्ष पर्यंत सरस्वतीदेवीनुं आराधन करी तेनी प्रसन्नता मेलवती एटले के सकल उपयोगी विद्या तथा कलार्डमां हुशीआर थइ पोते साक्षात् सरस्वतीजेवी दिव्य प्रज्ञावंत बनीने सोल वर्षनी थवा बाद स्वयंवरना रिवाजथी विद्याकलावंत अने गुणरूपसंपन्न नीतिमान् आर्यकुमारने पति तरीके पसंद करती हती.

आ रीते आर्यलोको ज्यारे नीतिने चाहता हता, त्यारे जुदा जुदा नीतिकारोए पोतपोताना विचारो प्रमाणे अनेक नीतिग्रंथो रच्यार्छे, जेवाके;—शुक्राचार्यकृत शुक्रनीति, विदुरप्रणीत विदुरनीति, चाणक्यप्रणीत चाणक्यनीति, पंचतंत्र, वगेरा वगेरा.

परंतु ए बधा नीतिग्रंथो सामान्य हिंदुसमाजना नीतिविचारो बतावता होवाथी ए बाबतमां लोकोत्तर अने दयापरिपूर्ण जैनधर्मना शा शा विचारो रहेला छे, ते दरेक नीतिमर्मजिज्ञासु जनने अवश्य जाणवुं जोइए अने तेना माटे उत्तममां उत्तम साधन ते आ "अर्हन्नीति" नामनो ग्रंथ छे.

अर्हत् एटले पूजा करवा लायक वीतराग देव तेमणे बतावेल नीति ते "अर्हन्नीति."

आ ग्रंथ कलिकालमां सर्वज्ञमान अनेक जैनग्रंथकर्त्ता जगत्प्रसिद्ध श्री हेमचंद्राचार्ये श्रीमान् चौलुक्यवंशीय जीवदयाप्रतिपालक परमार्हत कुमारपाल नरेश्वरना आग्रहथी प्रथमना

" बृहदर्हन्नीति " नामना ग्रंथथी सारूपे उध्धरीने रच्योछे. ए-टले जैनोमां ते सर्वमान्य प्रामाणिक ग्रंथ छे. अने तेटलातातर तेनी वधु चरचाए करवानी कशी जरुर रही नथी.

आ ग्रंथनुं पहेलां तो मूलसाथे भाषांतर छापी प्रसिद्ध करवानो अमारो इरादो हतो, पण तेम करतां तेनुं कद वधी जइ ते बिनजरुरमां मोंघो थवा जाय तो साधारण माणसथी तेनो लाभ लेतां अटकाय एम धारी साधारण प्रसंगोमां केवल भाषांतर अने खास जेवा गंभीर प्रसंगोमां मूलसाथे भाषांतर प्रसिद्ध कर्यो छे, जेथी वाचकवर्गने वधु सवल थशे एम अमे आशा राखीए छीये.

छेवटे अमारे एटलुंज कहेवुं घटे छे के आ ग्रंथ दरेक नीति-अभ्यासिने पोताना प्राइवेट पुस्तकसंग्रहमां राखवालायक छे, दरेक जैनभंडारमां अवश्य संघरवा योग्य छे, दरेक जैनविद्यार्थीने अवश्य वांचवा लायक छे अने दरेक जैनबंधुने अवश्य सांभळवा उचित छे, माटे अमारा जैनभाइओ आवा अमूल्य ग्रंथनी योग्य कदर करवामां कदापि पछात नहि पडशे एवी अमे पूर्ण आशा राखिए छीए.

मुंबइ.
ता. १ ली नवेंबर सने १९०१

श्रावक
भीमसिंह माणेकना
कार्यप्रवर्त्तको.

अनुक्रमणिका.

प्रथमोऽधिकारः

द्वितीयोऽधिकारः

तृतीयोऽधिकारः

श्री जिनाय नमः

अर्हन्नीतिनुं गुजराती भाषांतर.

(कर्ता श्रीहेमचंद्राचार्य)

श्रीमंतं नाभिजं वंदे, प्रथमं तीर्थनायकम् ॥
नृपं च योगिनं योग-विज्ञश्यं रम्यविग्रहम् ॥ १ ॥

अर्थ– पेहेला तीर्थंकर, पेहेला राजा, पेहेला योगी, योगने जाणनाराओने प्रथमज दृष्टिगोचर थएला, तथा मनोहर शरीरवाला एवा श्रीमान ऋषभदेव प्रभुने हुं वंदन करुं छुं.

आ भरतक्षेत्रमां जेनाथी संसारसमुद्रने तारनारुं श्रेष्टुं शासन प्रवर्तेलुं छे, एवा श्री देवार्य महाराजने हुं नमस्कार करुं छुं.

विघ्नोनो नाश करनारा एवा श्री पुंडरिक महाराज आदिक गणधरोने पण हुं मन, वचन अने कायाथी नमस्कार करुं छुं.

जेमनी वाणीथी उपदिष्ट थएलुं गपलुं श्रुतज्ञान लोकोमां चाले छे, एवा पांचमा गणधर श्री सुधर्मास्वामिने हुं नमस्कार करुं छुं.

जेमनी कृपाथी उत्पन्न थएलुं ज्ञान मारामां स्फुरायमान थइ रह्युं छे, एवी श्रुतदेवता तथा एवा सद्गुरुने मारो वारंवार नमस्कार थाओ !

(हवे आ ग्रंथना कर्ता श्री हेमचंद्राचार्य कहे छे के) पूर्वे बनावेलां बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रमांथी कुमारपाल राजाना आग्रहथी किंचित् सार उधरीने राजा अने प्रजाना हित माटे, तुरत स्मरणमां आवे, एवुं आ अर्हन्नीति नामनुं संक्षेपेलुं शास्त्र हुं रचुं छुं.

एक दहाडो श्री महावीर प्रभु गौतम आदिक गणधरोथी स्तुति कराता थका राजगृही नगरीनी बहार उद्यानमां समोसर्या. तेमना पधारवानो वृत्तांत सांभळीने तुरत तेमने वांदवामाटे श्रेणिक राजा परिवारसहित परम उत्कंठाथी त्यां गया. त्यां प्रभुने

नमस्कार करीने तथा उचित जगोए बेसीने देशना देयाबाद अवसर मेळवीने राजाए प्रभुने पूछ्युं के हे जगवन्! पूर्वे राजनीतिनो मार्ग कोणे, केटला जेदोवाळो तथा केवो बतावेलो ने? ते जाणवानी मने घणीज उत्कंठा छे, माटे मारापर कृपा करीने ते आप प्रकाशो? केमके, महान् पुरुषो परार्थ करवामां तत्पर होय छे.

ते सांजळी प्रजुए कह्युं के, हे मगधेश्वर! तमो सांजळो? आ काळमां पेहेला राजा श्रीऋषजदेव प्रजु थएला छे. ते श्रीऋषजदेव प्रजु लोकोनुं हित करवामां तत्पर हता, अने तेटलामाटे काळना दोषथी ज्यारे कल्पवृक्षो फळोने आपतां बंध थयां, अने जरत क्षेत्रना लोको तेथी क्लेश आदिक दुःखोथी दुःखी थयां, त्यारे तेमनापर करुणा लावीने प्रजुए पूर्वथी चालता आवता युग्मीधर्मने दूर करी, वर्णाश्रमोना विजागो कर्या, तेउना संस्कारोनी विधि करी, खेती, व्यापार, तथा कारीगीरी आदिक व्यवहारो स्थाप्या, तेम राजाउने माटे नीतिमार्ग, तथा नगरनी रचना आदिकनी विधिउ बतावी, तेम आ लोक अने परलोक संबंधी सघळी विद्याउ तथा सर्व क्रियाउने पण प्रगट करी. त्यारबाद नव निधानमांथी प्राप्त थएला नीतिधर्मादिक मर्मने जाणनारा एवा तेमना पुत्र जरतचक्रीए तेमनुं वचन हृदयमां धरीने जगतनी स्थिति माटे चार आर्यवेदो बनाव्या, के जेथी सर्व प्रजा पुरुषार्थोने उपार्जन करवामां दक्ष थइ. कालांतरे चारे वेदो नष्ट थया, अने सुविधिनाथ प्रजु आदिकना आंतरामां मिथ्यात्विउए हिंसा आदिकथी दूषित वेदो बनाव्या. ते वेदोने तजीने उत्तम पूर्वाचार्योए अनेक ग्रंथो रच्या, के जे ग्रंथो आजे पण पृथ्वीपर हयात छे. ते ग्रंथोनो आधार लेइने लोको व्यवहारमां प्रवर्ते छे, एवी रीते हे मगधराज! तमारा पेहेला प्रश्ननो उत्तर तमो जाणजो?

एवी रीते पेहेला प्रश्ननो उत्तर दीधाबाद प्रभुए बीजा प्रश्नो जे उत्तर आप्यो, ते कहे छे.

तेमां पेहेलां राजा अने मंत्रिना गुणो उपयोगी होवाथी तेउनुं वर्णन तथा तेउने माटेनीज केटलीक शिखामणो कहे छे.

तेमां प्रथम राजाना गुणोनुं वर्णन करे छे.

संपूर्ण अंगोपांगवालो, (उत्तम) लक्षणोथी परिपूर्ण, रुपालां शरीरवालो, अहंकार विनानो, तेजस्वी, यशवालो, दयालु, बलवान, शुद्धराजकुलमां उत्पन्न थयलो, पूर्वजोनुं अनुकरण करनारो, त्रण प्रकारनी शक्तिवालो, प्रजापर प्रेम राखनारो, प्रजापर अमल करवाने योग्य, त्रणे पुरुषार्थोने तुल्य रीते साधनारो, लजावालो, वचन पालनारो, गुप्त पुरुषो मारफते सघल राखनारो, दीर्घदृष्टी, कार्य पार पाडनारो, उद्योगी, शास्त्रविद्या अने शस्त्रविद्या ए बन्नेमां प्रवीण, दंडनीति अने कृपानीति बन्नेमां तत्पर, दुष्ट अने उत्तम बन्नेनी लांच (रुशवत) नहीं लेनारो, उपायथी राज्यलक्ष्मीने मेलवनारो, दातार, निश्चयथी जय मेलवनारो, न्यायपर प्रेम राखनारो, न्यायने जाणनारो, व्यसनोने दूर करनारो, धीर्य, आचार, गंभीरता, उदारता, तथा चतुराइथी शोभित थयलो, क्षमायाचनपर्यंत कोपवालो, तथा सत्यगुणवालो, एवी रीतना गुणोवालो राजा सात्विक राजा कहेवाय छे.

एवी रीते राजाना गुणो जाणवा.

एवे राजाउनी शिक्षाउनुं वर्णन करे छे.

हे राजन्! तमारे देव, गुरु, द्विज, कुलना श्रेष्ट मनुष्यो तथा लिंगधारीउं एटलाउ सिवाय बीजाउने नमस्कार करवो नहीं. वली हे राजन्! तमारे खुल्ली रीते, तेम कोइनी साथे बेसीने पण भोजन करवुं नहीं, तेम आळभोजन न करवुं, तथा दीजाने घेर पण भोजन करवुं नहीं. अगम्य तथा जेनो स्पर्श कर-

संधि, विग्रह, वाहन, आसन, आश्रय, अने द्वैधजाव ए ठ गुणोने राज्यना स्तंजो कहेला ठे. पोतानी अने परनी अपेक्षाविनाज सर्व प्रजानुं पालन करवुं, दुष्टोने, प्रजाने पीडनाराउंने, राज्य लेवानी अजिलाषा राखनाराउंने, देवगुरुनो नाश करनाराउंने, शत्रुउंने, तथा चोरोने राजाए प्राण रहित करवा, तेम लांच खानारा कारजारीउंने हमेशां दंडवा. वधारे शुं कहेवुं ? हे राजन् ! जेम सर्व प्रजा हमेशां सुखी रहे, तेम करवुं, एवी रीतनी नीतिशिक्षाने दृढतायी चित्तमां धारण करवी.

एवी रीते राजाउं माटेनी नीतिशिक्षा जाणवी.

हवे मंत्रिउंना गुणो कहे ठे.

कुलीन, कुशल, धीर, दानेश्वरी, सत्य बोलनार, न्यायी, बुद्धिवान, शूरो, शास्त्रोने जाणनारो, सर्व व्यसनोथी मुक्त थएलो, दंडनीतिमां चतुर, पुरुषोना अंतरोने जाणनारो, सत्य असत्यनो तोल करनारो, अपराधी एवा मित्र अने शत्रुप्रते तुल्य दृष्टि राखनारो, धर्मकार्यमां रक्त, आगामिकालनो विचार करनारो, आस्तिकता आदिक चार प्रकारनी बुद्धिउंवालो, ठए दर्शनोनो जक्त, गुरु देवादिकनी उपासना करनारो, हमेशना चालता आवता आचारमां रक्त थएलो, बीजां कार्यथी विमुख रहेनारो, क्षीरनीरना विवेचननी पेठे न्याय अन्यायने जोनारो, कुलक्रमथी चालता आवता रिवाजोथी राजाने वाकेफ करनारो, एवी रीतना गुणोथी युक्त थएलो मंत्रि राज्यनी वृद्धि करनारो थाय ठे.

एवी रीते मंत्रिना गुणो जाणवा.

हवे मंत्रिमाटेनी शिक्षा कहे ठे.

क्रोधथी, लोजथी, उछृंखलपणाथी, तथा अहंकारथी हमेशां मंत्रिए कुमार्ग पकडवो नहीं, अने हमेशां (राज्यनुं) हितज चिंतववुं. वली हे राजन् ! मंत्रिए व्यवहारनी बाबतमां कोइनो

पण पक्षपात करवो नहीं. हमेशां प्रजानुं शीरीते हित थाय ? तेवा उपायोपरज मनने चोंटाडवुं. विचार करीने राज्यना अंगो, तथा वैरीउं माटे मंत्रिए एवा उपायोने योजवा, के जेथी पोताना स्वामिना कार्यनी जरा पण हानि थाय नहीं.

एवी रीतनी मंत्रिमाटेनी शिक्षा जाणवी.

उपर जणावेला गुणोने धारण करनारा ज्यारे राजाउंने मंत्रिउं होय, त्यारे राज्यमां नीतिनी प्रवृत्ति थाय छे, अने शत्रुउं आवी चडता नथी. उपर कहेली शिखामणथी युक्त थएला राजाए मांगलीक वाजित्रो सांजळतांज प्रजातमां जागृत थवुं, तथा पंच नमस्कारनुं स्मरण करवुं. पछी प्रातःकाल संबंधि सघळुं कार्य करीने, स्नान करी राजाए जिनालयमां जवुं; त्यां उंचे प्रकारे जिनजक्ति करीने, जो गुरु महाराजनो योग होय तो परिवार सहित तेमनी पासे जवुं; त्यां तेमने वंदन करीने तेमनी पासे वेसी समतापूर्वक तेमना मुखथी धर्मदेशना सांजळवी. पछी सर्व राज्यचिन्ह सहित, मंत्रिनी साथे राज्यसजामां आवी राजाए सिंहासनपर वेसवुं. त्यां सेनापति, कोटवाल अने पोताना गुप्त माणसो आदिक राज्यकारजारीउंनी राजाए मुलाकात लेवी.

हवे अहीं प्रस्तावना योगथी, नीतिशास्त्रोना पंडितोए आगमोमां, ते सेनापति आदिकनां जे लक्षणो अने कार्यो कहेलां छे ते कहे छे.

तेउंमां प्रथम सेनापतिनां लक्षणो कहे छे.

चतुर, यशस्वी, महाबलवान, स्वजावथी हमेशां करडो, तेजस्वी, सात्विक बलवालो, पवित्र, यवनादिकनी लीपीउंने जाणनारो, म्लेच्छ जाषामां प्रवीण, म्लेच्छादिको प्रते शाम, दाम आदिक उपायोनो उपयोग करनारो, विचारपूर्वक जाषण करनारो, अवसरोचित वचनने जाणनारो, गंजीर अने मधुरा शब्दो

बोलनारो, नीतिशास्त्रोनां अर्थोने जाणनारो, जागृत रहेनारो, लांबी दृष्टि पहोंचाडनारो, सर्व शास्त्रोने जाणनारो, युद्धना प्रकारोने जाणनारो, तेमां पण चक्रव्यूहादिकने विशेष प्रकारे जाणनारो, कपटीपणाना तथा निष्कपटीपणाना भावोने जाणनारो, समयसूचकतानी बुद्धिवालो, (पोताना संबंधविनाना) एवा सेंकडोगमे कार्योनी दरकार नहीं करनारो, स्वामिप्रते भक्तिवालो, प्रजाने प्रिय थइ पडेलो, प्रसन्नमुख अने प्रसन्न चक्षुवालो, जेना दर्शनथी वैरीउने ताप थाय तेवो, वीररसना आवेश समये भयंकर, लांच आदिक लोभ तरफ नहीं खेंचाएलो, फक्त स्वामीनुं कार्यज साधनारो, उत्तम लक्षणवालो, करेला उपकारने जाणनारो, दयालु, विनयवालो, न्यायी, जीतवाना मुलकना उंचाण निचाणना प्रदेशोने, जयमार्गोने, पर्वतोने, तथा कील्ला आदिकोने जाणनारो, नाना प्रकारना विषम किल्लाउने तोडवानी क्रियामां चतुर तेम संधिविग्रहना भेदोने पण जाणनारो एवो सेनापति होवो जोइए.

एवी रीते सेनापतिना लक्षणो जाणवां.

हवे सेनापतिनी शिक्षा कहे छे.

हे सेनापति ! तमारे शत्रुना लश्करने बुद्धिबलथी तथा बाहुबलथी भांगवुं, अने कोइनो पण विश्वास करवो नहीं. बीजा राज्यमां जइने जरा पण गफलती राखवी नही, शत्रुनुं नानुं लश्कर होय तो पण तेनो पराजय करवाने मोटा पायापर तैयारी करी राखवी. देश, काल, बल आदिकने बरोबर ध्यानमां राखी शत्रुमाथे लडवुं. पोताना प्राणोनी रक्षामाटे बनता प्रयत्नथी पोताना स्वामीने जीत अपाववी.

एवी रीते सेनापति संबंधि शिक्षा जाणवी.

हवे सामान्यथी सर्व राजकारजारीउंनां लक्षणो कहे छे.

कुलीन, चतुर, शूरा, शास्त्रोने जाणनारा, स्वामिजक्त, धर्ममां आस्तावाला, प्रजानुं हित इच्छनारा, सर्व व्यसनोथी मुक्त थएला, पवित्र, निर्लोजी, समदृष्टि राखनारा, प्रजानुं रक्षण करनारा, परनी उपेक्षाविनाना, गुरुपर जक्तिजाव राखनारा, प्रियवचनो बोलनारा, महान् आशयोवाला, महा जाग्यशाली, हमेशां न्यायधर्ममां रक्त थएला, प्रमादविनाना, हसमुखा, अने प्रायें करीने कीर्तिने पण चाहनारा एवा राजपुरुषोने योग्य जाणवा.

एवी रीते सामान्यपणाथी सर्व राजकारजारीउंनां लक्षणो कह्यां.

हवे सामान्यपणाथी सर्व राजकारजारीउ माटे शिक्षा कहे छे.

पोताना स्वामिए विश्वास राखी जे कार्य सोंप्युं होय, तेमां प्रमाद नहीं करतां स्वामिनी इच्छा परिपूर्ण करवी. प्रजाने कुःख आपवुं नहीं, तेम स्वामिना कार्यनो जंग करवो नहीं, न्यायथी रूव्य मेलववुं, अने सत्य मार्गने तजवो नहीं. प्रजाना धननी अने नरपतिपणानी वांछा न करवी, एवी रीते सर्व राजकारजारीउंए पोतानी फरज ध्यानमां राखवी.

एवी रीते सामान्यपणाथी सर्व राजकारजारीउं माटेनी शिक्षा जाणवी.

हवे दूतनां लक्षणो कहे छे.

मीठां, खाटां, तीखां, अने कडवां एवी रीतनां वचनजेदोमां दूत चतुर होवो जोइए, उत्पातिकी आदिक बुद्धिउंथी युक्त होवो जोइए, तुरत कार्य करनारो होवो जोइए, वली ते दूत विनयी, स्वामिजक्त, फक्त स्वामिना कार्यमांज तत्पर, अने सप-

ली जाणाई जाणनारो होवो जोइए. प्रायें करीने दूतकार्यमाटे द्विजो (ब्राह्मणो) लायक गणाय छे.

एवी रीते दूतनां लक्षणो जाणवां.

हवे दूतनी शिक्षा कहे छे.

दूते कदापि पण फोगट उतावळ करीने पोताना स्वामिने उत्साह आपवो नहीं, परना प्रमादनी अपेक्षा करवी नहीं, अने सत्यवात निवेदन करवी. वळी हे दूत ! तारे सर्व जगोए पोताना स्वामीना प्रतापनी वृद्धि करवी, तेम अन्यना भावने जाणीने, ते भाव जो स्वामिना अर्थने साधनारो होय तो तुरत ते स्वामीने निवेदन करवो.

एवी रीते दूतनी शिक्षा जाणवी.

हवे तेउ सर्वनी विनंति सम्यक् प्रकारे सांजळीने मंत्रिसहित राजाए हिताहितनुं विवेचन करीने जेम बने तेम विशेष प्रकारे राज्यनुं हित करवुं.

इत्याचार्य श्रीहेमचंद्रविरचिते चौलुक्यवंशभूषण कुमारपाल सुश्रुषिते श्रीअर्हन्नीतिशास्त्रे भूमिका भूपालादि गुणवर्णनो नाम प्रथमोऽधिकारः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

जगन्नाथं जिनं चैवा--द्भुत लक्ष्म्योर्जितमञ्जम् ॥
मत्यूहनाशने दक्ष, मजितं समुपास्महे ॥ १ ॥

अर्थ—जगतना स्वामि, तथा अद्भुत लक्ष्मीथी तेजस्वी कांतिवाला, अने विघ्नोनो नाश करवामां चतुर एवा श्रीअजितनाथ प्रभुनी हुं उपासना करुं छुं.

हवे पूर्वना अधिकारमां जे हिताहितनुं विचारण कह्युं छे, तेना संबंधमां नीतिना प्रवर्तनरूप राजानुं कार्य कहे छे.

त्यां आदिमां राजाए क्यां, केवी रीते अने कोनी साथे विचार करवो ? ते कहे छे.

राजाए एकांत स्थानकमां रहीने स्वस्थ थइने समतापूर्वक मंत्रिओनी साथे विचार करवा बेसवुं. कह्युं छे के, राजाओना मंत्रोनो अने कार्योनो भेद थइ जाय, माटे विचार करवानी जगोपरथी सघळा मंत्रभेदकोने दूर करवा. एवी रीते विचार कर्याबाद नीति पूर्वक राज्यनुं हित करवुं. हवे ते नीति केटला प्रकारनी छे ? ते कहे छे.

युद्धनीति, दंडनीति अने व्यवहारनीति एम त्रण प्रकारनी छे. तेओमां पेहेली युद्धनीतिनो अवसरे खप पडे छे, अने पाछलनी बन्ने नीतिओ हमेशने माटे उपयोगी छे.

हवे अहीं उद्देश निर्देशथी युद्धनीतिना वर्णननो प्रस्ताव होवाथी, (तेमां अंतर्गत रहेला) संधी आदिक गुणो उपयोगी होवाथी तेओनुं स्वरूप कहे छे.

संधि, व्यवस्था, वैर, विग्रह, शत्रुनी सन्मुखगमन, वाहन, उपेक्षा अने आसन (ए युद्धनीतिना अंगो छे.)

पोताना लश्करना बे भागो करीने जे स्थापवा ते " द्वैध " कहेवाय छे, अने बीजा बलवान राजानो जे आश्रय लेवो तेने " संश्रय " कहेलो छे.

एवी रीतना छए गुणोने राजाए हमेशां चिंतववा, तथा समयने अनुसरी तेने विधिपूर्वक योग्य जगोए गोठववा.

कंइक पण खलाणपूर्वक परस्पर उपकारना नियमबंधननी जे व्यवस्था करवी तेने " संधि " कहे छे. ते संधि बे प्रकारनी छे. सत्यसंधि अने कपटनी संधि. कह्युं छे के, सत्यसंधि तेने कहीये के, तेमां कहेली (या लखेली) बाबत प्रमाणे चालवुं, अने कपट संधि तेने कहीये के, तेथी उलटुं चालवुं.

स्वार्थने माटे अथवा मित्रनेमाटे केटलीक सेना सहित किल्लामां रहेवुं, अने पोताना सैन्यना जे बे भागो करवा तेने " द्वैध " कहे छे. शत्रु तरफथी संकट आवती वेलाए सहाय

मेळववानी इच्छाथी, दुःखने दूर करवा माटे बीजा बळवान राजानी जे सहायता लेवी तेने " संश्रय " कहे छे.

हवे ते गुणोने अवसरोचित योग्य स्थानके जोडवा, ते देखाडे छे. राजाए आगामीकाळना शुभ फळनी प्राप्तिमाटे अल्प हानिने सहन करीने पण तुरत संधि करवी. वळी राजाए विचारवुं के, पोते जो बळवान मंत्रिआदिकथी युक्त होय, अने पोतानुं सामर्थ्य होय तो लडाइ करवी. शत्रुना लश्करने हठाववा-माटे जो पोताने पुष्ट जाणे, तोज राजाए शत्रुनी सन्मुख जवुं. जो शत्रु बळवान अने दुर्धर्ष जणाय तो राजाए लश्करना बे भागो पाडीने समताथी कील्लामां रहेवुं. वळी कदाच ते किल्लामां पण जो पोतानुं रक्षण थइ शके तेम न होय तो, बळवान अने धर्मिष्ट राजानो तुरत आश्रय लेवो. ते बळवान राजाप्रते पण जो शंका थाय तो, तेने पण तजवो, अने निःशंक थइने युद्धज करवुं. कह्युं छे के, " रणसंग्राममां जय थवाथी लक्ष्मी मळे छे, मृत्यु थवाथी देवांगनां मळे छे, एम विचारि आ क्षणभंगुर कायाने सार्थक करवी."

हवे साम आदिक चारे उपायोनुं स्वरूप वर्णवे छे.

मिष्ट वचनोथी जे कार्योनी सिद्धि करवी, तेने " साम " कहे छे. दान देइने कार्यनी सिद्धि करवी ते "दाम" कहेवाय छे. शत्रुना अधिकारीओने फोडवा ते " भेद " कहेवाय छे. अने छेक वध करवो ते "दंड" कहेवाय छे. आ चारे उपायोनो अनुक्रम ध्यानमां राखवो. आदरसत्कारवाळां प्रीति भरेलां वचन आदिकथी शांत करवाना उपायने " साम " कहे छे. सुवर्ण, हाथी घोडा तथा रुपा आदिकना दानपूर्वक जे कार्यने साधवुं ते " दाम " कहेवाय छे. द्रव्य आदिकनो लोभ देखाडीने अथवा चतुराइ भरेलां वचनोथी शत्रुना अमात्य आदिकोने फोडवा ते " भेद" कहेवाय छे. धनने हरवुं, तथा वध बंधन करवां, तेने "दंड" कहे छे.

हवे साम, दाम, अने जेदथी जो कार्यनी सिद्धि थाय तो युद्ध न करवुं,अने जो तेम न बने तो युद्ध करवुं,एवुं देखाडता थका कहे छे.

जो शत्रुउने साम, दाम, अने जेदथी जीती शकाय, तो राजाए कदापि पण युद्ध करवुं नहीं. युद्ध करवामां जय तो संदेहवाळो होय छे, माटे ते सामादिक उपायो होते छते,तेउने तजीने एकदम युद्ध करवुं नहीं.

हवे ते सामादिक त्रणे उपायोथी पण जो कार्यनी सिद्धि न थाय, तो तेणे शुं करवुं ? ते हवे कहे छे.

पेहेलां तो राजाए शत्रुना पण, व्यूह एटले युद्ध रचना, ते रचना संबंधि बुद्धिना जावो, अने आववा जवाना मार्गनी परीक्षा माटे मनोहर बुद्धिवाळा चतुर दूतने मोकलवो. ते दूते पण शत्रुपासे जइ प्रथम मधुरवाक्यथी बोलवुं, तथा पछी (अनुक्रमे) खाटां अने कडवां वचनो बोलवां. ते साथे ते दूते (शत्रु राजाना अने तेना कारजारीउना) आकारोथी, तेउना वचनोथी, तथा तेउनी चेष्टाउथी, तेउना मनना अभिप्रायोने जाणवा; तेम तेउनी बुद्धि, कळा, तथा आववा जवाना मार्गोनी पण बारीकीथी परीक्षा करवी, अने त्यारबाद तुरत पाछा वळीने सघळी हकीकत ते दूते पोताना स्वामिने यथार्थ कही संजळाववी.

पछी दूत मारफत ज्यारे एम खबर मळे के, शत्रु लडवाने तैयार छे, त्यारे राजाए उत्तम मंत्रिउ साथे मळीने (युद्धमाटे) विचार करवो. त्यारबाद राजाए तेवी गोठवण करवी के, जेथी सेनानो घणो नाश न थाय, अने कोइक एवो नीतिनो मार्ग शोधवो के,जेथी शत्रु संतोष पामे. त्यारबाद कोइ पण प्रकारथी ज्यारे शत्रु रणसंग्रामनो आग्रह न तजे, त्यारे परस्पर तुल्यता जोइने राजाए लडाइ माटे तैयार थवुं. बलवान राजानी साथे बलवानना आश्रयविना लडवुं नहीं, अने तेवी रीतना युद्धथी प्रायें करीने हमेशां जय थाय छे. पोताथी निर्बळ राजानी साथे

मेळववानी इच्छाथी, दुःखने दूर करवा माटे बीजा बळवान राजानी जे सहायता लेवी तेने " संश्रय " कहे छे.

हवे ते गुणोने *अवसरोचित योग्य स्थानके जोडवा*, ते देखाडे छे. राजाए आगामीकाळना शुभ फळनी प्राप्तिमाटे अल्प हानिने सहन करीने पण तुरत संधि करवी. वळी राजाए विचारवुं के, पोते जो बळवान मंत्रिआदिकथी युक्त होय, अने पोतानुं सामर्थ्य होय तो लडाइ करवी. शत्रुना लश्करने हठाववामाटे जो पोताने पुष्ट जाणे, तोज राजाए शत्रुनी सन्मुख जवुं. जो शत्रु बळवान अने दुर्धर्ष जणाय तो राजाए लश्करना बे भागो पाडीने समताथी कील्लामां रहेवुं. वळी कदाच ते किल्लामां पण जो पोतानुं रक्षण थइ शके तेम न होय तो, बळवान अने धर्मिष्ट राजानो तुरत आश्रय लेवो. ते बळवान राजाप्रते पण जो शंका थाय तो, तेने पण तजवो, अने निःशंक थइने युद्ध करवुं. कह्युं छे के, " रणसंग्राममां जय थवाथी लक्ष्मी मळे छे, मृत्यु थवाथी देवांगनां मळे छे, एम विचारि आ क्षणभंगुर कायाने सार्थक करवी."

हवे साम आदिक चारे उपायोनुं स्वरूप वर्णवे छे.

मिष्ट वचनोथी जे कार्योनी सिद्धि करवी, तेने " साम " कहे छे. दान देइने कार्यनी सिद्धि करवी ते "दाम" कहेवाय छे. शत्रुना अधिकारीओने फोडवा ते " भेद " कहेवाय छे. अने छेक वध करवो ते " दंड " कहेवाय छे. आ चारे उपायोनो अनुक्रम ध्यानमां राखवो. *आदरसत्कारवाळां प्रीति भरेलां वचन आदिकथी* शांत करवाना उपायने " साम " कहे छे. सुवर्ण, हाथी घोडा तथा रुपा आदिकना दानपूर्वक जे कार्यने साधवुं ते " दाम " कहेवाय छे. द्रव्य आदिकनो लोभ देखाडीने अथवा चतुराइ भरेलां वचनोथी शत्रुना अमात्य आदिकोने फोडवा ते " भेद" कहेवाय छे. धनने हरवुं, तथा वध बंधन करवां, तेने " दंड "कहे छे.

हवे साम, दाम, अने भेदथी जो कार्यनी सिद्धि थाय तो युद्ध न करवुं. अने जो तेम न बने तो युद्ध करवुं, एवुं देवाचार्य कहेछे.

जो शत्रुने साम, दाम, अने भेदथी जीती शकाय, तो राजाए कदापि पण युद्ध करवुं नहीं. युद्ध करवामां जय तो संदेहवालो होय छे. माटे ए सामादिक उपायो होते छते, तेओने तजीने एकदम युद्ध करवुं नहीं.

हवे ए सामादिक त्रणे उपायोथी पण जो कार्यनी सिद्धि न थाय, तो तेणे शुं करवुं ? ते हवे कहे छे.

पहेलां तो राजाए शत्रुना पक्ष, व्यूह एटले युद्ध रचना, ते रचना संबंधि युक्तिना भावो, अने आववा जवाना मार्गनी परीक्षा माटे मनोहर बुद्धिवाला चतुर दूतने मोकलवो. ते दूते पण शत्रुपासे जइ प्रथम मधुरवाक्यथी बोलवुं, तथा पछी (अनुक्रमे) खाटां अने कडवां वचनो बोलवां. ते साथे ते दूते (शत्रु राजाना अने सेना कारभारीओना) आकारोथी, तेओना वचनोथी, तथा तेओनी चेष्टाओथी, तेओना मनना अभिप्रायोने जाणवा; तेम तेओनी बुद्धि, कळा, तथा आववा जवाना मार्गोनी पण बारीकीथी परीक्षा करवी, अने त्यारबाद तुरत पाछा वळीने सघळी हकीकत ते दूते पोताना स्वामिने यथार्थ कही संभळाववी.

पछी दूत मारफत ज्यारे एम खबर मळे के, शत्रु लडवाने तैयार छे, त्यारे राजाए उत्तम मंत्रिओ साथे मळीने (युद्धमाटे) विचार करवो. त्यारबाद राजाए तेवी गोठवण करवी के, जेथी सेनानो घणो नाश न थाय, अने कोइक एवो नीतिनो मार्ग शोधवो के, जेथी शत्रु संतोष पामे. त्यारबाद कोइ पण इलाजथी ज्यारे शत्रु रणसंग्रामनो आग्रह न तजे, त्यारे परस्पर तुल्यता जोइने राजाए लडाइ माटे तैयार थवुं. बळवान राजानी साथे बळवानना आश्रयविना लडवुं नहीं, अने तेवी रीतना युद्धथी प्रायें करीने हमेशां जय थाय छे. पोताथी निर्बळ राजानी साथे

राजाए पोते सन्मुख जइ युद्ध करवुं नहीं, केमके, तेमने जीत-वाथी कंइ यश मळतो नथी, अने पराजय थवाथी उलटी अघु-ता थाय छे. (तेवा निर्बळ राजाने जीतवामाटे सेनापतिने मोकलवो.)

हवे राजाए युद्धमाटे क्यारे प्रस्थान करवुं? ते कहे छे.

पोताना राज्यनी रक्षामाटे उत्तम प्रधानने, तथा (केटलीक) सेनाने राखीने, तथा पोताना संबंधिओने अत्यंत संतोषीने, वाहन, हथीआर तथा बखतर आदिकनी सामग्री करीने, अने शांतिकार्यसहित देवगुरुनी पूजा करीने, उत्तम मुहूर्त तथा उत्तम शुकन जोइने, कालादिकपर ध्यान राखीने मागसर आदिक सात मासनी अंदर राजाए युद्धमाटे प्रयाण करवुं. (अहीं मागसर आदिक सात मासो कहेवाथी युद्धमाटे चतुर्मासनो निषेध कर्यो. अने मुहूर्त तथा शकुन आदिकनो विचार तो निमित्तशास्त्रथी जाणी लेवो.) एवी रीते मंत्री, सामंत, उत्तम मित्रो निमित्तीआ, उत्तम वैद्यो, तथा भंडारी, आदिकथी युक्त थइने चतुरंगीसेनासहित, पगले पगले वेषधारी गुप्तपुरुषोथी वाकेफ थइने, आगळ प्रयाण करता माणसोथी शोधन कराएला मार्गे राजाए समतापूर्वक जवुं. आवता जता चाकरपर, तथा गूढ भक्तिवाळा मित्रनो पण (ते समये) राजाए विश्वास करवो नहीं.

हवे चारे बाजुथी जो (शत्रु तरफनो) भय होय तो राजाए दंडव्यूहथी गमन करवुं, पाछलनी बाजुथी भय होय तो अनोव्यूहथी गमन करवुं. पार्श्वभागनी बाजुथी भय होय तो तार्क्ष्य अने शूकरव्यूहथी गमन करवुं. मुखना भागथी जो भय होय तो मकरव्यूहथी प्रयाण करवुं. अग्र भागमां जो भय होय तो राजाए सूचिव्यूहथी प्रयाण करवुं, तथा पत्री जे बाजुनो भय होय, ते बाजुए लश्करने विस्तारवुं. हमेशां राजाए पद्मव्यूह रचीने निवास करवो. अने सेनापति, तथा लश्करी अमलदारोए

चारे तरफथी तेनी रक्षा करवी. अगाडीना जागमां लश्करी अमलदारे रहेवुं, वचे राजाए, तथा पाछलना जागमां सेनापतिए रहेवुं. बन्ने बाजुए हाथीउं, पछी घोडा, तथा पछी पाला एवी रीते दंडाकार व्यूह जाणवो. अगाडीना जागमां सुक्ष्म,तथा पाछलथी विस्तारवालो, तेने शकटव्यूह जाणवो. तेथी उलटो ते मकरव्यूह जाणवो. मोतीनी मालानी पेठे जोडाइने चालवुं, ते सूचीव्यूह जाणवो. वचे रहेला राजाने चारे बाजुथी वलयने आकारे घेरी लेवो, ते पद्मव्यूह जाणवो. एवी रीते अविच्छिन्न प्रयाणथी सीमाना अंतजागसुधी जइने राजाए पडाव नांखवो.

हवे ते लश्करनो पडाव क्यां नाखवो ? ते कहे छे.

ज्यां जलाशयो, तथा घास, तथा धान्य घणुं होय, अने ऊंची टेकरीउं सुलभ होय तेवी जगोए राजाए लश्करनो पडाव नाखवो.

पछी शुं करवुं ? ते कहे छे.

पडाव नाख्याबाद जो हजु शत्रु न आवी पहोंच्यो होय,तो फरीने तेना मननो अभिप्राय जाणवा माटे तेनी पासे पोतानो दूत मुकवो. तेम कर्याबाद शत्रु जो लडवामाटे तैयार थएलो जणाय, तो रणजमिने साफ करवी, के जेथी सैन्यनी गति स्खलायमान थाय नहीं. अने नहीं गणकारनारा एवा उत्तम पुरुषोथी अधिष्ठित थएला निपुण गुल्मोने संकेतसहित युद्धना स्थानमां राजाए राखवा. (नव हाथीउं; नव रथो, सत्तावीस घोडाउं, अने पत्तालीस पालाउं, एटली संख्यासहित रक्षण करनार सैन्यना समुदायने " गुल्म " कहे छे.) अने ते गुल्मे करेला शंख, भेरी तथा पटह आदिकना शब्दानुसारे, सेनानुं युद्धसमये अवस्थापना तथा अपसरण (पाछा हठवापणुं थाय छे.)

हवे युद्धसमये राजाए देव, गुरु तथा शस्त्रोने, पूजीने, शुभ शुकनो लेइने, तथा सर्वथा प्रकारे योद्धाउंने संतोषीने, प्रयाणना

धाजित्रोपर स्पृहा राखीने, बखतर पेहेरीने, राज्यचिन्होसहित ज-यहस्तीपर चडवुं, तथा आसपास नजर नाखीने तपासवुं के, पोतानुं लश्कर कया व्यूहमां गोठवाएलुं छे? रणसंग्राममाटे पूर्व दिशा उत्तम छे, माटे सैन्यनुं मुख ते दिशातरफ राखवुं. वळी ते समये शत्रुना लश्करनो केवी रीते नाश थाय? ते विचारिने चक्र, सागर आदिकव्यूहनी रचनापूर्वक पोताना सैन्यने गोठववुं. युद्धसमये जेम बने तेम थोडाओने मारी घणासाथे लडवुं, अने ते समये बनतांसुधी वज्रव्यूह अथवा तो सूचिव्यूहथी लडवु.

हवे क्षेत्रविशेष तथा शस्त्रविशेष युद्धनुं स्वरूप कहे छे.

खाडा खचूचडाविनानी रणभूमिपर तलवार तथा भालां आदिक शस्त्रोथी लडवुं; (तेमां पण) विषमभूमिपर हाथीओथी लडवुं, तथा समभूमिपर घोडा अने रथोथी लडवुं. झाडीवाळी रणभूमिपर विशाख स्थाननो आश्रय लेइने बाणोथी लडवुं. ते विशाख स्थानमां उभती वखते हस्त प्रमाणथी बन्ने पगोने विस्तारवा.

हवे शूरताना अभिमानवाला, तथा बलवान योद्धाओने राजाए सैन्यना अगाडीना भागमां राखवा, अने तेओने बंदिओ मारफते वीररसपूर्वक उत्साह आपवो.

अग्नि आदिक मांत्रिक शस्त्रोने दूर करवामाटे राजाए वारुणादिक शस्त्रोनो उपयोग करवो. वळी राजाए ते योद्धाओना (रणसंग्राममाटे) हर्षितपणानी तथा लीनतापणानी परीक्षा करवी, तेम तेओनी चेष्टानी तथा तेओना विपरीतपणानी पण परीक्षा करवी. अत्यंत रुक्ष, झेर चडावेलां, तथा पत्थर अने माटी आदिकनां कूट हथीआरोथी अने अग्निथी तपावेलां हथीआरोथी पण राजाए लडवुं नहीं. सर्व प्रकारनां शस्त्रो अने वाहनोथी नीतिपूर्वक लडवुं अने शत्रु जो अनीतिथी लडे, तो पछी राजाए समयोचित करवुं. वळी तापस, ब्राह्मण, हथीआरवि-

नासतो, बीकण, नाशतो, कुरसी थएलो, नपुंसक, नग्न, हाथ जोडी ऊजो रहेलो, नहीं लडतो, निष्क्रिन थएलो, रोगथी पीडाएलो, शरणे आवेलो, मुखमां घास (तृण) धारण करनारो, अने घरे आवेलो एटला माणसोने राजाए मारवा नहीं. जे शत्रु राजा नहीं लडतां केवल किल्लामां जराइ बेसे, तेने घेरी लेवो, अने तेनी अंदर रहेला माणसोने धान्य तथा जलथी पीडवा. (एटले) बाहारथी तेमां जता धान्य अने जलनो अटकाव करवो.) पछी तेना किल्लाने तथा तेना तलावने तोडीने शत्रुने वशवर्त्ति करवो, तथा तेना सोबतीउने मारवा. वली ते शत्रु राजाना मंत्रि आदिक सघला कारजारीउने, तथा तेना कुटुंबीउने (द्रव्यादिकनी लालचथी) पोताना पक्षमां लेवा, अने उत्तम मुहूर्त जोइने राजाए त्यां पोतानी आज्ञा प्रवर्तावची. पछी देवगुरुनी पूजा करीने, तथा घणुं दान देइने, शत्रु राजाना पूर्वना सेवकोने अभयदान आपवुं. पछी सामान्यरीते सर्व कारजारीउना मननी परीक्षा करीने ते शत्रु राजानो कोइ संबंधि, के जे पोतानी आज्ञा मानवामां तत्पर होय, तेने त्यां गादीपर बेसाडवो. पछी ते नवीन राजाने इनाम आपी संतुष्ट करवो, तथा पछी सघाइना यत्नपूर्वक त्यां पोतानी आज्ञाने स्थीर करवी.

हवे जीत थयाबाद पराक्रमथी मेलवेलुं द्रव्य राजाए योद्धाउने केवी रीते आपवुं? ते कहे छे.

जीत थयाबाद जे जे योद्धाए, धान्य, बकरां, गायो, तथा भेंसो आदिक जे कंइ (लुंटमां) मेलव्युं होय, ते ते वस्तुउ ते ते योद्धाने आपी देवी. वली जे सुभटोए पोताना पराक्रमथी रणसंग्राम थयते, रथो, घोडा, हाथी, अमूल्य रत्न, सुवर्ण, तथा स्त्रीउ मेलवेली होय, ते सघलुं तेउए राजाने समर्पण करवुं. एवी रीते पूर्वे कहेली रीतिप्रमाणे जय मेलवीने, तथा पोताना यशनो

घाजित्रोपर स्पृहा राखीने, बखतर पेहेरीने, राज्यचिन्होसहित ज-यहस्तीपर चडवुं, तथा आसपास नजर नाखीने तपासवुं के, पोतानुं लश्कर कया व्यूहमां गोठवाएलुं छे ? रणसंग्राममाटे पूर्व दिशा उत्तम छे, माटे सैन्यनुं मुख ते दिशातरफ राखवुं. वळी ते समये शत्रुना लश्करनो केवी रीते नाश थाय ? ते विचारिने चक्र, सागर आदिकव्यूहनी रचनापूर्वक पोताना सैन्यने गोठवबुं. युद्धसमये जेम बने तेम थोडाओने मारी घणासाथे लडवुं, अने ते समये बनतांसुधी वज्रव्यूह अथवा तो सूचिव्यूहथी लडवु.

हवे क्षेत्रविशेष तथा शस्त्रविशेष युद्धनुं स्वरूप कहे छे.

खाडा खबूचडाविनानी रणभूमिपर तलवार तथा भालां आदिक शस्त्रोथी लडवुं; (तेमां पण) विषमभूमिपर हाथीओथी लडवुं, तथा समभूमिपर घोडा अने रथोथी लडवुं. झाडीवाळी रणभूमिपर विशाळ स्थाननो आश्रय लेइने बाणोथी लडवुं. ते विशाळ स्थानमां उभती वखते हस्त प्रमाणथी बन्ने पगोने विस्तारवा.

हवे शूरताना अभिमानवाळा, तथा बळवान योद्धाओने राजाए सैन्यना अगाडीना भागमां राखवा, अने तेओने बंदिओ मारफते वीररसपूर्वक उत्साह आपवो.

अग्नि आदिक मांत्रिक शस्त्रोने दूर करवामाटे राजाए वारुणादिक शस्त्रोनो उपयोग करवो. वळी राजाए ते योद्धाओना (रणसंग्राममाटे) हर्षितपणानी तथा लीनतापणानी परीक्षा करवी, तेम तेओनी चेष्टानी तथा तेओना विपरीतपणानी पण परीक्षा करवी. अत्यंत रुक्ष, झेर चडावेलां, तथा पत्थर अने माटी आदिकनां कूट हथीआरोथी अने अग्निथी तपावेलां हथीआरोथी पण राजाए लडवुं नहीं. सर्व प्रकारनां शस्त्रो अने वाहनोथी नीतिपूर्वक लडवुं अने शत्रु जो अनीतिथी लडे, तो पछी राजाए समयोचित करवुं. वळी तापस, ब्राह्मण, हथीआरवि-

नानो, बीकण, नासतो, दुःखी थएलो, नपुंसक, नग्न, हाथ जोडी ऊभो रहेलो, नहीं लडतो, निश्चिंत थएलो, रोगथी पीडाएलो, शरण आवेलो, मुखमां घास (तृण) धारण करनारो, अने घरे आवेलो एटला माणसोने राजाए मारवा नहीं. जे शत्रु राजा नहीं लडतां केवल किल्लामां जराइ बेसे, तेने घेरी लेवो, अने तेनी अंदर रहेला माणसोने धान्य तथा जलथी पीडवा. (एटले) बाहारथी तेमां जता धान्य अने जलनो अटकाव करवो.) पछी तेना किल्लाने तथा तेना तलावने तोडीने शत्रुने बलरहित करवो, तथा तेना योद्धाउने मारवा. पछी ते शत्रु राजाना मंत्रि आदिक सघला कारभारीउने, तथा तेना कुटुंबीउने (द्रव्यादिकनी लालचथी) पोताना पक्षमां लेवा, अने शुभ मुहूर्त जोइने राजाए त्यां पोतानी आज्ञा प्रवर्ताववी पछी देवगुरुनी पूजा करीने, तथा घणुं दान देइने, शत्रु राजाना पूर्वना सेवकोने अभयदान आपवुं. पछी सामान्यरीते सर्व कारभारीउना मननी परीक्षा करीने ते शत्रु राजानो कोइ संबंधि, के जे पोतानी आज्ञा मानवामां तत्पर होय, तेने त्यां गादीपर बेसाडवो. पछी ते नवीन राजाने इनाम आपी संतुष्ट करवो, तथा पछी महाजना लखतपूर्वक त्यां पोतानी आज्ञाने स्थीर करवी.

हवे जीत थयाबाद पराक्रमथी मेलवेलुं द्रव्य राजाए योद्धाउने केवी रीते आपवुं? ते कहे छे.

जीत थयाबाद जे जे योद्धाए, धान्य, बकरां, गायो, तथा भेंसो आदिक जे कंइ (लुंटमां) मेलव्युं होय, ते ते वस्तुउ ते ते योद्धाने आपी देवी. पछी जे सुभटोए पोताना पराक्रमथी रणसंग्राम वखते, रथो, घोडा, हाथी, अमूल्य रत्न, सुवर्ण, तथा स्त्रीउं मेलवेली होय, ते सघलुं तेउए राजाने समर्पण करवुं. एवी रीतें पूर्वे कहेली रीतिप्रमाणे जय मेलवीने, तथा पोताना यशनो

विस्तार करीने, जीतना वाजित्रोना शब्दोथी दिशाओने बेहेरी करीने, हर्ष मंगलपूर्वक राजाए पोताना नगरमां प्रवेश करवो.

एवी रीते अहीं सामान्य प्रकारे युद्धनीतिनुं वर्णन कर्युं, तेनुं विशेष प्रकारनुं वर्णन बुद्धिवानोए महाशास्त्रथी (एटले बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी) जाणी लेवुं.

एवी रीते युद्धनीतिनुं प्रकरण समाप्त थयुं.

हवे अनुक्रमथी प्राप्त थएला दंडनीति प्रकरणनो प्रारंभ करे छे.

प्रणम्य परया भक्त्या, संभवं श्रुतसंभवम् ॥
प्रजानामुपकाराय, दंडनीतिः प्रवक्ष्यते ॥ १ ॥

अर्थ– उत्कृष्ट भक्तिथी श्री संभवनाथजी प्रभुने नमस्कार करीने, प्रजाना उपकारमाटे हवे दंडनीतिनुं स्वरूप कहे छे.

जैनशास्त्रोमां दंडनीति सात प्रकारनी कहेली छे. हाकार, माकार, धिक्कार, परिभाषण, बंधन, केदखानुं, अने अंगछेदन ए सात प्रकारनी दंड नीति छे. तेम वळी नीति शास्त्रोना पारंगामीओए द्रव्य दंडने साथे लेइ आठ प्रकारनी पण कहेली छे. (परिभाषण एटले " नहीं जवुं " इत्यादिक वचनो आदेशथी कहेवां) स्थानांगसूत्रमां पण कह्युं छे के,

" सत्तविहादंडनीइ पण्णत्ता, तं जहा, हक्कारे ।१। मक्कारे ।२। धिक्कारे ।३। परिभासे ।४। मंडलीबंधे ।५। कारागारे ।६। छविछेदे अ ।७।

(अहीं छविछेद एटले अंगछेदनथी वधादिकने पण जाणी लेवुं)

एवी रीतनी दंडनीतिनो, आगमार्थीओना आशयना प्रमाणमां व्यवहार उपयोग करवो.

हवे ते सात प्रकारनी दंडनीतिओमांथी पहेली रीत (एटले

हाकार, माकार, अने धिकार) नीतिउं पूर्वे श्री ऋषभदेव प्रभुनी पेठेलां युगलीआंउने कालना दोषथी क्लेश करता जोइने कुल-करोए प्रवर्तावेली हती. अने बीजी दंडनीतिउं भरत महाराजथी चालेली छे. माटे एवी रीतें दंडनीति कालानुसारी छे, एवो निश्चय थाय छे. अने तेथीज उपलक्षणथी द्रव्यदंड, ज्ञातिदंड (एटले ज्ञातिबहार मेलवो) अने ताडनादंड आदिक नीतिउं ग्रहण कराय छे, अने ते सर्व दंडनीतिउंने देश कालने अनुसरीने उपयोगमां लेवाथी साध्य वस्तुनी सिद्धि थनारी थाय छे. कह्युं छे के,

यथापराधं देशं च, कालं बलमथापि वा
व्ययं कर्म च वित्तं च, दंडं दंड्येषु पातयेत् ॥ १ ॥

अर्थ–जेवो अपराध, जेवो देश, जेवो काल, जेवुं बल, जेवुं खरच, जेवुं कार्य, अने जेवुं द्रव्य, तेने अनुसरीने अपराधिउंने दंड करवो.

हवे त्यां ब्राह्मणने "माकारनो" दंड देवो, क्षत्रिय अने वैश्यने "हाकारनो" दंड देवो, तथा शूद्र मात्रोने "धिकारनो" दंड देवो, अने बाकीना दंडो चारे वर्णोने माटे छे.

हवे अहीं ते दंडनीतिनो अपवादमार्ग कहे छे.

स्त्री, ब्राह्मण, तथा तपस्वी लोके मोटो अपराध करे, तो पण राजाए तेउंनां अंगो छेदवां नहीं, तेउंनो वध करवो नहीं, तथा तेउंने देशनिकाल करवां नहीं. (आ श्लोकनो वली एवो पण अर्थ थई शके छे के, तेउंनां अंगो छेदवां नहीं, तेम तेउंनो वध करवो नहीं, पण तेउंने देशनिकाल करवा.)

वैश्य थईने जो मांस वेचे, तथा जूठुं सुवर्ण वेचे, तो राजाए तेना उपांगनुं छेदन करी तेनो दंड करवो.

मनुष्यना प्राणने हरनार माणसने चोरनी पेठेज दंड करवो.

तथा गाय, हाथी अने उंट आदिक मोटां प्राणीउंनो नाश करनार माणसने तेथी अरधो दंड करवो.

क्षुद्रप्राणीनो नाश करनार माणसने बसोनो (एटले ते समये ते राजमां चालता बसो सिक्काउंनो) दंड करवो, हरिण अने पक्षिउंनो विघात करनार माणसने पचासनो दंड करवो.

बकरा, गाडर, अने गधेडानो घात करनार माणसने पांच मासनी (एटले तेटली मुदत सुधीना केदखानानी) सजा करवी, कुतरा अने सूकरनो विनाश करनार माणसने बे मासनी सजा करवी.

ब्राह्मण जो अजक्ष्य वस्तु खाय, तो तेने उत्तम दंड करवो. (उत्तम दंड कोने कहेवो ? तेनुं लक्षण आगल जणावशे) क्षत्रिय जो अजक्ष्य वस्तु खाय तो तेने मध्यम दंड करवो, वैश्य जो अजक्ष्य वस्तु खाय तो तेने जघन्य दंड करवो, तथा शूद्र जो अजक्ष्य वस्तु खाय तो तेने तेथीपण अरधो दंड करवो.

राजानो आक्रोश करनार, तथा तेनुं बुरुं बोलनार, राजदरबारनी (खानगी) वातोने प्रगट करनार, राज्यना खजानाने लुंटनार, तथा राजानी सामे थनार एटला माणसनी जीज छेदीने तेने देशनिकाल करवा. तेम (वगर परवानगीए) राजानी सेज करनार माणसने उत्तम दंड देवो.

पोतानी स्त्रीपर थनारा कलंकना डरथी, तथा राजा तरफथी थता दंडना जयथी, जार पुरुषने पण (एटले पोतानी स्त्रीसाथे खोटो व्यवहार राखनार यारने पण) जे " चोर " कहे तेवा पुरुषने पांचसोनो दंड करवो.

[illegible] शेठ, धन उपार्जन करी, जे कारभारी चोरने अने जार पुरुषने (सजा नहीं करतां) छोडी मेले, ते कारभारीने उपर कहेली रकमथी आठ गणो दंड करवो, तेम उत्तम दंड पण करवो.

झांपो तोडनार माणसनो पांचसोनो दंड करवो, पोते गुरु

होवा छतां ब्राह्मणनो वेष लेइ आजीविका चलावनारने आठ-सोनो दंड करवो.

पोते हार्या छतां पण अभिमानथी जे एम माने के, हुं जीत्यो छुं, ते माणसने राज्यद्वारमां लावीने बेवडो दंड करवो.

अन्यायथी करेला दंडथी प्राप्त थएला धननुं शुं करवुं ? ते कहे छे.

कोइ कारणसर राजाए जे जे अन्यायथी दंड करेलो होय, तो ते दंडथी प्राप्त करेला धनने त्रीशगणुं करीने गुप्त मार्गे ते धन खरची नांखवुं.

हवे सजाना भेदो कहे छे.

पेट, उपस्थ, जीभ, हाथ, कान, द्रव्य, शरीर, पग, नासिका, अने चक्षु एवी रीते दश प्रकारनां दंडनां स्थानको छे.

शरीरना जे अवयवनो जे माणसे अपराध कर्यो होय, ते माणसने तेना शरीरना तेज अवयवनी सजा करवी.

हवे जे अपराधी माणस (दंड तरिकेनुं) द्रव्य आपवाने असमर्थ होय, ते माणसने केदखानामां पूरीने, तथा तेनीपासे पोतानुं कार्य करावीने राजाए तेने द्रव्य दंडथी मुक्त करवो.

हवे उत्तम दंडनुं स्वरूप कहे छे.

अपराधिनी सर्व मालमीलकतने हरी लेवी, अथवा तेनो वध करवो, अथवा तेने देशपार करवो, अथवा तेना अंगो छेदवां, अथवा तेने (डांभथी) अंकित करवो. ए सर्व सजाओनो उत्तम दंडमां समावेश थाय छे.

उंच जातिवालो जे माणस मदिरापान करे, तेने गधेडापर चडाववो, गुरुना आसनपर बेसनार माणसने गधेडे चडावी तेना हाथमां पताका आपवी, चोरी करनारने केदखानानी सजा करवी, अने ब्रह्महत्या करनार माणसने शिरमुंडन करावी गधे-

डे चढावी देहांतदंडनी शिक्षा करवी. वळी ब्रह्महत्या करनार जो स्त्री अथवा तपस्वी आदिक होय तो तेनुं सघळुं द्रव्य लुंटी, गधेडे चडावी नगरनी बहार कहाढवां.

गुम थयापछी फरीने प्राप्त थएली वस्तुनो मालीक जो तेनी खरी निशानि आपे, तो राजाए ते वस्तु तेने पाछी सुप्रत करवी, अने जो जूठी निशानि आपे, तो ते वस्तुनी किंमत जेटलो तेनो दंड करवो.

(वनतांसुधी वृद्ध, बहुश्रुत, बालक, ब्राह्मण, गर्भिणी स्त्री, गुरु, माता, पिता, पंडित अने तपस्वीने सजा करवी नहीं.)

आचार्य, उपाध्याय तथा गायनो घात करनार माणसने देहांतदंडनी शिक्षा करवी.

हाथमां शस्त्र धारण करीने द्रव्य लुंटनार, आग लगाडनार, झेर आपनार, स्त्रीनो अतिक्रम करनार, क्षेत्रमांथी (धान्यनी) चोरी करनार, स्त्रीहरण करनार, चुगलीखोर, छिद्रो जोनार, तथा गर्भपात करनार, एटलां माणसोने राजाए सख्त सजा करवी.

एवी रीते अहीं सामान्यपणाथी दंडनीतिनुं स्वरूप कह्युं. वळी प्रसार आव्ये, शास्त्रोमां कह्याप्रमाणे तेनुं विशेष वर्णन करीशुं.

एवी रीते दंडनीति प्रकरण संपूर्ण थयुं.

इत्याचार्य श्रीहेमचंद्रविरचिते श्रीचौलुक्यवंशावतंसश्रीकुमार-पाल नृपप्रार्थिते अर्हन्नीतिशास्त्रे, गुरुनीति, दंडनीतिवर्णनो नाम त्रितीयोऽधिकारः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

विशदशारदसोमसमाननः,
कमलकोमलचारुविलोचनः ॥
शुचिगुणः सुतरामभिनंदनो,
जयतु नाभिजनेप्सितसिद्धिदः ॥ १ ॥

अर्थ- निर्मल एवा शरद ऋतुना चंद्रमरखा मुखवाला, तथा कमलसरखां कोमल, अने मनोहर लोचनवाला, पवित्र गुणवाला, तथा जगत् माणसोने इच्छित सिद्धि आपनार एवा श्री अजिनंदन प्रभु मारी रीते जय पामो! ॥ १ ॥

हवे राजाए सुवर्णना सिंहासनपर बेसीने गजाना मंत्रिओ सहित विद्वान माणसोनी समक्ष व्यवहारसंबंधि विचार करवो. एक बाबतमां परस्परविरुद्ध धर्मवाला एवा वादि प्रतिवादिना दाखलाओने ध्यानमां लेइ योग्य न्याय करवो, तेने "व्यवहार" कहे छे.

अहीं कोइ शंका करे के, बन्ने धर्मना आधारभूत एवी एक बाबतमां अन्य धर्मने दूर करीने, तेथी उलटो धर्म स्थापवाने वादी साधन कहे, अने तेमांज दूषण प्रगट करीने, वादिए साधेला पक्षथी उलटी रीतनुं, अने पोतानाज वचनने समर्थ करनारुं एवुं प्रतिवादिनुं वचन शीरीते टकी शके? केमके तेमां तो परस्पर व्याघात थयो. हवे ते शंकानुं समाधान करे छे के, एम नहीं. केमके, पोतपोताना अभिप्रायने अनुसारे एकज बाबतमां वादि प्रतिवादिए निरूपण करेला साधनने दूषण लगाडनारां वचनो कहेवामां कंइ पण विरोध नथी. जेमके, वादी पोताना अभिप्रायमुजब साधन आपे छे, अने पाछलथी प्रतिवादी पण पोताना अभिप्राय मुजब तेमां दूषण देखाडे छे; पण एकज बाबतमां (केसमां) साधन अने दूषण बन्ने तात्विक रीते होतां नथी, पण ते बन्ने पोतपोताना अभिप्रायमुजब होय छे. व्यवहारजाष्यमां कहुं छे के, " अत्थी पचीणं हरणं एगस्स ववइ विइयस्स एएणय ववहारो अहिगारो चेत्थग्रविहीए. "

हवे ते व्यवहार बे प्रकारनो छे, एक लोकोत्तर अने बीजो लौकिक. तेओमाना पेहेला एटले लोकोत्तर व्यवहारनुं स्वरूप व्यवहारसूत्रादिकमां वर्णव्युं छे, माटे अहीं तेनुं विवेचन करता नथी; अहीं राज्यकार्यमाटे तो लौकिकव्यवहारनीज आवश्य-

कता छे. हवे ते लौकिकव्यवहार बे प्रकारनो छे. एक संदेहात्मक अने बीजो तत्वात्मक. तेओमां पेहेलो संदेहात्मक सत्संगथी जणाय छे. अने तत्वात्मक चिन्हथी जणाय छे. वळी ते विध्यात्मक अने निषेधात्मक एम बे प्रकारनो छे. जेमके, आ मारुं क्षेत्र लेइ जाय छे, ते विध्यात्मक छे. तथा आ मारी पासेथी रुपीआ लेइने आपतो नथी, ते प्रतिषेधात्मक छे.

जे न्याय करवाने इच्छतो नथी, अने अन्याय करे छे, एवो व्यवहारने लुप्त करनारो माणस नरके जाय छे, तेमां कंइ पण संशय नथी. हवे ते न्याय नीचेप्रमाणे अढार भेदोवाळो छे. करज करवुं, अने करज देवुं ॥ १ ॥ घणाजणे एकठा थइ कार्य करवुं, ॥ २ ॥ देवायोग्यनो विधि ॥ ३ ॥ दायभाग ॥ ४ ॥ सीमाडानो विवाद ॥ ५ ॥ वेतनादान ॥ ६ ॥ क्रयविक्रयनो संताप ॥ ७ ॥ ढोर चाकरपशुनो विवाद ॥ ८ ॥ मेलवेली वस्तुनी कोइ उत्तम माणसपासे थापण राखवी ॥ ९ ॥ शेठनी गेरहाजरीमां तेनी वस्तुने वेचवी ॥ १० ॥ वचननुं कठिनपणुं ॥ ११ ॥ मर्यादानो व्यतिक्रम करवो ॥ १२ ॥ परस्त्रीनुं ग्रहण करवुं. ॥ १३ ॥ जुगार १४ ॥ चोरी ॥ १५ ॥ साहसपणुं ॥ १६ ॥ दंडादि कठिनता ॥ १७ ॥ अने स्त्रीपुरुषोसंबंधी व्यवहार ॥ १८ ॥ ए अढार प्रकारनो न्याय होय छे. वळी मनुष्योनी विपत्तिओना भेदथी तेना एकमां अनेक भेदो पण थाय छे. जेमके, एक वादिने घणा प्रतिवादिओनी साथे विरोध होय, घणा वादिने एक प्रतिवादिनी साथे विरोध होय, एक वादिने एक प्रतिवादि साथे विरोध होय, घणा वादिने घणा प्रतिवादि साथे विरोध होय. वळी रीते एवा केटला प्रकार प्रकारोने चार गुणवाथी अनेक भेदो थाय छे.

हवे वादनो निर्णय केवी रीते करवो? तेना आठ भेदो कहे छे.

जेमके, आ माणसे मारा आटला रुपीआ अमुक व्याजथी चार मासनी बंधीए लीधा हता, हवे ते मुदत पूरी थयाबाद में ते लेनार माणसपासेथी माग्या, पण ते आपतो नथी, अने उलटो लडवाने तैयार थयो छे, माटे मारी एटली अरजी सांभलीने, अने तेनो निर्णय करीने मारुं द्रव्य ते करजदारपासेथी अपाववुं. आ बाबतने " प्रतिज्ञा " ॥ १ ॥ कहे छे.

हवे एवी रीतना वादीए कहेला साधनने बाधा करनारुं प्रतिवादीनुं जे वचन ते तेनो " उत्तर " ॥ २ ॥ कहेवाय छे.

एवी रीते वादि प्रतिवादि बन्नेनुं वचन सांभलीने, आनुं कहेवुं सत्य होशे ! के आनुं कहेवुं सत्य हशे ? एवी रीते न्यायाधीशनुं मन जे दोलाय छे, तेने " संशय " कहे छे. (एक धर्मवाली वस्तुमां, विरुद्ध एवा नानाप्रकारना धर्मोनुं जे ज्ञान थवुं, तेने " संशय " कहे छे.)

वादि प्रतिवादिए कहेला साधन अने दूषणने समर्थ करनारुं जे कारण तेने " हेतु ॥ ४ ॥ कहे छे.

बन्ने हेतुओमां कयो हेतु कोनो साधक छे ? एवी रीतना विचारने " परामर्श " ॥ ५ ॥ कहे छे.

साक्षि आदिकोथी जेना वचननी यथार्थपणानी खातरी थाय, तेने " प्रमाण " ॥ ६ ॥ कहे छे.

वारंवार मंत्रिओ अने सभासदोनीसाथे मलीने सघला लेखादिकोने आदरथी ते स्वतबुधि वांचीने, तथा सांभलीने, बन्नेना जय, पराजयसंबंधि सर्वनी सम्मतिपूर्वक उत्तर आपवो तेने " निर्णय " ॥ ७ ॥ कहे छे.

हवे ते निर्णयने अनुसारे न्यायाधीश बन्नेने जे हुकम फरमावे ते " फेसलो " ॥ ८ ॥ कहेवाय छे.

एवी रीते आठ प्रकारे वादनो निर्णय करवो.

हवे ते वादसमये केवी रीते व्यवहार चलाववो ? कहे छे.

राजाए सन्नानी अंदर संवेगन्नावने धारण करीने, निस्पृही थइने, तथा सन्नासदोनी सम्मति लेइने राज्यकार्य करवुं. वली जो राजाने अक्षय सुखनी इच्छा होय तो तेणे ते समये समन्नावमां रहीने कोइना वचनने पण मानवुं नहीं, फक्त न्यायपर दृष्टि राखवी.

एवी रीते राजा ज्यारे राज्यकार्यमां गुंथाया होय, त्यारे जो कोइ अरजदार आवे, तो ते वखते कारज्ञारीए ते अरजदारपासेथी अरजीनो पत्र लेइने मंत्रिने आपवो. पछी मंत्रिए ते अरजीमाटे राजाने निवेदन करीने, तेनी पहेलांना केसो खलास थयाबाद ते अरजीपत्रपर आज्ञा लखवी.

हवे मुकरदमानी योग्यता तथा अयोग्यतानुं वर्णन करे छे.

मुकरदमानी अरजी सार्थक, सघला अर्थे करीने युक्त, साध्य धर्मवाली, प्रगट रीते समजाय तेवी, संक्षेपमां लखेली, उत्तम वाक्यरचनावाली, वादी अने प्रतिवादीना नामवाली, साध्य प्रमाणनी संख्यावाली, अने देश तथा राजाना नामें करीने युक्त, एवी रीतनी राजापासे आवेली अरजी योग्य गणाय छे. (उपर कहेली अरजीनी रीति जंगम मुकरदमाना विषयनी छे.) स्थावर मुकरदमानी अरजीमां देशनुं नाम, स्थाननुं नाम, पोतानी जातिनुं नाम, पोताना रहेठाणनुं नाम, प्रमाण, पोताना बाप दादानुं नाम, तथा पोताना मोटा न्नाइओ आदिकनुं नाम पण होवुं जोइए. तेम वली स्थावर मिल्कतना मुकरदमानी अरजीमां रा-

जानी महोरछाप होवी जोइए, अने तेवी रीतनी जो मोहोरछाप (स्टांप) न होय तो न्यायाधीशे ते अरजी सांजलवी नहीं. हवे तेमां दाखलातरि के देश एटले "मध्यदेश, अथवा द्रविड देश, के बंगादिक देश" स्थान एटले "वाराणसी" आदिक, जाति एटले "क्षत्रियादिक" रहेवाण एटले नगरीनो पूर्व, पश्चिम, उत्तर के दक्षिणजाग, प्रमाण एटले "दश रज्जु लांबुं पहोळुं क्षेत्र" बापदादानुं नाम एटले "देवदत्त, यज्ञदत्त" इत्यादि, क्षेत्र एटले यवनुं क्षेत्र अथवा शालिनुं (जातनुं क्षेत्र). एवी रीतिथी लखेली अरजी न्यायाधीशे सांजळवी, पण तेथी विपरीत रीते लखेली अरजी सांजळवी नहीं.

न्यायाधीशे नीचे लखेली रीतिवाळा मुकरदमानी अरजीने तजवी. असाध्य, अप्रसिद्ध, विरुद्ध, प्रयोजनविनानी एटले निरर्थक, अने कोइने बाधा न पहोंचे तेवा मुकरदमानी, अरजीओने पक्षाजास सरखी जाणीने तजवी.

जेमके आ माणस मारी तरफ जोइने थुंक्यो, ए असाध्य छे. माटे तेवा मुकरदमानी अरजी ग्रहण करवी नहीं. मारा घरमां रहेलुं आकाशपुष्प लेइने आ माणस चाल्यो गयो, हुं ते आकाशपुष्प तेनीपासेथी पाछुं मागुं छुं पण ते आपतो नथी, ए "अप्रसिद्ध" वात छे, माटे तेवा मुकरदमानी अरजी पण स्वीकारवी नहीं.

आ माणसे मने श्राप आप्यो, ए "विरुद्ध" छे माटे तेवा मुकरदमानी अरजी पण सांजळवी नहीं.

मारा पिताए पूर्वे आ माणसनो अधिकार चलाव्यो छे, अने हवे ते अधिकार ते माणस मने आपतो नथी, ए "निरर्थक" छे, माटे तेवी अरजी पण न्यायाधीशे ग्रहण करवी नहीं.

मारा घरमां बळता दीपकना प्रकाशथी आ माणस पोताना घरनुं कार्य करे छे, ए "निराबाध" एटले कोइने बाधा कर-

नारुं नथी, माटे तेवा मुकरदमानी अरजीपर पण न्यायाधीशे ध्यान आपवुं नहीं.

हवे अनेक प्रकारना मुकरदमाओथी जरेली एकज अरजी न्यायाधीशे स्वीकारवी नहीं, पण प्रत्येक मुकरदमानी जुदी जुदी अरजी स्वीकारवी, ते माटे कहे छे.

जुदी जुदी क्रियाओवाळी अने अनेक विषयोथी गर्जित थयेली एकज अरजी स्विकारवी नहीं, (पण तेमां अपवाद एटलो के, वहार गामना रहेवासी एवा कोइ खेतीकार आदिक अरजदारनी तेवी अरजी पण स्वीकारवी. केमके, जो तेम करवामां न आवे, तो तेवा अरजदारने घणी अथडामणी थवाथी तेना कार्यनो अतिपात थवा संजव छे.) वळी न्यायाधीशोए दरेक मुकरदमानी तुरत साक्षिओ लेइने जेम बने तेम जलदिथी फेसलो आपवो.

वादीए अरजी कर्याबाद प्रतिवादी जो दूरना जागमां होय तो, राजाए पोतानी मोहोरछापसहित प्रतिवादीने बोलाववा माटेनो समन तुरत दूतद्वाराए पहोंचाडवो, अने जेम बने तेम तुरत हाजर थवानी फरज पाडवी.

(तेमां पण अपवाद एटलो के, अशक्त, स्थविर, (बुढा) बालक, कुलीन स्त्री, राज्यकार्यमां गुंथाएला माणसो, धर्मक्रियामां जोडाएला, जेओने जूत या पिशाच वळगेलो छे तेवा, अने वातपित्तादिकना रोगवाला, एवा माणसोने देशकालने अनुसारे वाहन आदिकना साधनथी तेओने जेम दुःख न थाय, तेम तेओनी सगवडप्रमाणे, पण जेम बने तेम तुरत बोलाववा.)

एवी रीते दूतमारफते प्रतिवादीने बोलाव्याबाद, ते प्रतिवादिना, पिता, जाइ, पुत्र, पौत्र, के चाकरने ते मुकरदमाना संबंधमां कंइ बोलवानो हक छे के नहीं? ते कहे छे.

मुकरदमो चालती वखते प्रतिवादीना उपर कहेला कोइपण

संबंधिने पक्षमां बोलवानो हक नथी. अने ते छतां जो तेउमानो कोइ बोले, तो न्यायाधीशे तुरत तेनो दंड करवो.

(तेमां पण अपवाद एटलो के, ते प्रतिवादी जो हाजर थइ शके तेम न होय, अने पोतानो पूर्ण अधिकार तेणे जो उपर कहेला कोइपण संबंधिने आपेलो होय, तो ते संबंधि मुकरदमाना संबंधमां जुबानी आपी शके छे, एवुं न्यायनुं धेधारण छे.)

हवे न्यायाधीशे प्रतिवादीपासेथी उत्तर मेळववामाटे वादीए करेली अरजीनो लेख प्रतिवादिने देखाडवो, अने तेमां रहेलो अभिप्राय तेने समजाववो. तेम ते अरजीपत्रमां रहेला वादीने लगता कुल, जाति, उमर, वर्ष, मास, पक्ष, अने दिवस विगेरे सर्व बाबतोनी न्यायाधीशे प्रतिवादीने समज पाडवी. पछी ते प्रतिवादी ते अरजीने सारी रीते वांचीने, जो तेनी तपास करवामाटे मुदत मागे, तो तेने न्यायाधीशे योग्य मुदत आपवी.

तेमां पण जो मुकरदमो करजसंबंधि होय तो वधारेमां वधारे त्रण दिवससुधिनी मुदत आपवी, अने मुकरदमामां जो पण साक्षी आदिकनी जरूर होय तो छेवट एक पखवाडीआनी मुदत आपवी, पण तेथी वधारे मुदत आपवी नहीं.

(अपवाद एटलो के, मुकरदमो जो गायना वधसंबंधि, मारामारीनो, चोरीनो, वचनपारुष्यनो, साहसनो, झेर आपवा संबंधि, शस्त्राघात संबंधि अने स्त्रीना संबंधनो होय तो तेनी बिलकुल मुदत आपवी नहीं, अर्थात् तेनो उत्तर तुरत लेवो. केमके, जो तेम करवामां न आवे तो जुठा साक्षी आदिकथी न्यायने बदले अन्याय थवानो संभव छे.)

ज्यांसुधी प्रतिवादितरफथी उत्तर न मळे त्यांसुधीज वादीने पोतानी अरजीमां फेरफार करवानो हक छे, पण प्रतिवादीतरफथी उत्तर मळ्याबाद वादीथी तेमां फेरफार करी शकायज

नहीं; माटे वादीनी अरजीपर ध्यान राखी न्यायथी चुकादो न्यायाधीशे आपवो.

प्रतिवादी पण ज्यारे उत्तर आपी रहे, अने त्यारबाद तेमां जो फेरफार करवानुं कहे, तो ते न्यायाधीशे स्वीकारवुं नहीं.

साक्षीमानो जो कोइ माणस रागथी, द्वेषथी, अथवा लो. जथी जुठी साक्षी आपे, तो ते साक्षीनो राजाए दंड करवो.

हवे प्रतिवादीए आपेलो उत्तर बे प्रकारनो होय छे, एक " श्राव्य " एटले न्यायाधीशे सांभळवालायक, अने बीजो " अश्राव्य " एटले न्यायाधीशे नहीं सांभळवालायक.

वादीनी अरजी जोइने तुरतज प्रतिवादीने उत्तर आपे, ते उत्तरने सांभळवालायक जाणवो.

हवे ते सांभळवालायक उत्तर चार प्रकारनो होय छे; सत्य, प्रसिद्ध, व्यापक, अने असंदिग्ध.

जेम के, वादी कहे छे के, हुं आनीपासे सो सोनामोहोरो मागुं छुं. एम कहेताज प्रतिवादी कहे छे के, खरेखर मारीपासे ते सो सोनामोहोरो मागे छे. ए उत्तरने " सत्य उत्तर " जाणवो.

वादिनी अरजी जोइने तेनाथी विरुद्ध बाबतनो प्रतिवादी जे प्रतिपादन करे, तेने " प्रसिद्ध उत्तर " जाणवो.

देश, काल आदिकना नाम करीने युक्त एवा उत्तरने " व्यापक " जाणवो.

वादीनी अरजी जोइने प्रतिवादी एम कहे के, खरेखर तेनी सोनामोहोरो ते मारीपासे मागे छे, पण में तेना (बदलामां) तेनुं व्याजनुं कार्य करी आप्युं छे, ते उत्तरने " असंदिग्ध उत्तर " जाणवो.

वळी, ए रीते सांभळवालायक उत्तरना चार भेदो जाणवा.

हवे नहीसांभळवालायक उत्तरना पांच भेदो कहे छे. " संदिग्ध " (एटले संदेहवाळो) " प्रकृतार्थ " (एटले

मागती रकमथी जुदीज रीते उत्तर आपवो ते) " अत्यल्प " (एटले घणुंज थोडुं) " अतिचारि " (एटले हदथी वधारे) " पक्षैकदेशव्यास " (एटले वादीए लेणी कहाडेली वस्तुनो अमुक भाग.)

जेम के, वादी कहे के, आ माणसे मारीपासेथी एकसो सोनामोहोरो लीधी छे. त्यारे प्रतिवादी कहे के, खरेखर मारे एकसोनी रकमतो तेने देवानी छे; पण ते एकसो सोनामोहोरो छे के, एकसो रुपामोहोरो छे, तेनी मने मालुम नथी. एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने " संदिग्धउत्तर " (एटले संदेहवालो उत्तर) जाणवो.

ते मारी पासे एकसो सोनामोहोरो मागे छे, पण हुं तेने एकसो रुपामोहोरो आपीश. एवी रीतना प्रतिवादीना उत्तरने " प्रकृतान्निन्न " (एटले मागती रकमथी जुदीज रीतनो उत्तर जाणवो.)

ते मारीपासे एकसो सोनामोहोरो मागे छे, पण तेने बदले हुं पांचज सोनामोहोरो आपीश. एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने " अत्यल्प " (एटले घणीज थोडी रकमवालो उत्तर) जाणवो.

ते मारीपासे एकसो सोनामोहोरो मागे छे, पण हुं तेने बदले तेने एक हजार सोनामोहोरो आपीश. एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने " अतिचारि " (एटले हदथी वधारे रकमवालो उत्तर) जाणवो.

वादी कहे के, में आ माणसने आन्नूषणो अने वस्त्रो वगेरे आप्यां छे, त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, में वस्त्रो तो लीधां छे, पण आन्नूषणो लीधां नथी; एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने " पक्षैकदेशव्यास " (एटले वादीए लेणी कहाडेली वस्तुना अमुक न्नागवालो उत्तर जाणवो.

एवी रीते पांच प्रकारे प्रतिवादीए कहेला अथवा लखेला उत्तरने न्यायाधीशे सांभळवो नहीं.

हवे एवी रीते प्रतिवादीनो उत्तर लीधाबाद न्यायाधीशे फरीने ते उत्तर वादीने वंचाववो. अने तेना संबंधमां पाछो वादीपासेथी प्रत्युत्तर मागवो.

पछी ते उत्तरने जोइने फरीने वादी, करजदारना उत्तरने नष्ट करनारो जो न्यायवी उत्तर आपे, तो ते उत्तर वादीने लाभकारक थाय छे.

वादीए प्रतिज्ञा करतीवखते पूर्वे जे लख्युं होय, तेवीज रीतना विस्तारपूर्वक प्रतिवादिए कहेला उत्तर वखते पण फरीने लखवुं; अने जो तेम करवामां न आवे तो, पूर्वापरना विरुद्धपणाथी प्रतिज्ञानो भंग तथा पक्षनी हीनता थाय छे.

एवे ते पक्षनी हीनता पांच प्रकारनी छे, ते कहे छे.

" निरुत्तर " (एटले उत्तर नहीं आपवो ते) ॥ १ ॥ " क्रियाद्विष्ट " (एटले उलटी रीते लखनार) ॥ २ ॥ " नोपस्थाता " (एटले चालती वातथी पलायमान थवुं ते)॥३॥ " अन्यदुत्तर " (एटले उलटी रीते उत्तर आपवो ते) ॥ ४ ॥ " आहूत प्रपलायन " (एटले बोलाववाथी नाशी जवुं.)॥५॥

हवे ते पांचे प्रकारनी हीनतानो विस्तारथी अर्थ कहे छे. पूछतां छतां कंइपण जे उत्तर न आपे, ते " निरुत्तर " कहेवाय छे. लखवानी कलानी चतुराइथी उलटी रीते लखनारो " क्रियाद्विष्ट " कहेवाय छे. उत्तर पूछवाथी चालती वातथी जे पलायमान थाय ते " नोपस्थाता " कहेवाय छे. पूछवाथी जे आडा अवळा जवाबो आपे, ते " अन्यदुत्तर " कहेवाय छे. बोलाववाथी जे नाशी जाय ते " आहूतप्रपलायन" कहेवाय छे.

करीने अधिकारीए ते मगलो लेख प्रतिवादीने वंचाववो. अने प्रतिवादिए पण ते लेख वांचीने तेनो प्रत्युत्तर लखवो. तेमां जो तेना मुद्दा सत्य होय तो ते सिद्ध थाय छे; नहींतर असिद्ध थाय छे. पछी अधिकारीए ते चारे पत्रोने न्यायाधीशपासे मेलवा. त्यारबाद न्यायाधीशे सजासदोनी साथे तेनुं विवेचन करवुं, अने साक्षी आदिकोनी जुबानी लेवी.

हवे ते समये सन्नासदो केवा जोइयें? ते कहे छे.

शत्रु अने मित्र बन्नेपर तुल्य दृष्टि राखनारा, शांत स्वजाववाला, जरापण लालच विनाना, सत्य बोलनारा, शास्त्रोना अन्यासथी युक्त थएला, परलोकनो जय राखनारा, क्रोधविनाना, आलस रहित, धर्मने जाणनारा, चतुर, एवा पांच अथवा सात सन्नासदो राजाए राखवा.

हवे ते सजासदो लोजादिकना हेतुथी उलटुं कार्य करवा मांगे, तो तेउनो राजाए दंड करवो. कह्युं छे के, राजाना कारजारीउ लोजथी, द्वेषथी, तथा ईर्षाथी जो अकार्य करे, तो तेउनो राजाए दंड करवो.

पछी ते वादि अने प्रतिवादि बन्नेने पोतपोताना साक्षीउना नामोसहित राजापासे लाववा.

हवे ते साक्षिउ केवा होवा जोइए? ते कहे छे.

लांच नहीं लेनारा, शुद्ध कुलमां उत्पन्न थएला देश कालना विचारने जाणनारा, जुनुं नहीं बोलनारा तथा प्रतिज्ञा पालनारा एवा ते गामना अगर अन्य गामना साक्षिउ होवा जोइए.

साक्षिउने तेउना पोतपोताना धर्मनी प्रतिज्ञा आपीने, तेउनी साक्षी नोंधवी. दरेक साक्षिउनी साक्षी लेती वेलाए बीजा साक्षिउने दूर राखवा. कह्युं छे के, मुकरदमामां बोलावेला सा-

क्षिर्उने जूदे जूदे स्थानके राखवा, अने एक वीजानी जुवानीर्ड न सांजली शके तेवी रीते तेर्डनी जुवानीर्ड लेवी.

वली साक्षी लेती वेलाए ब्राह्मणने तेनी यज्ञोपवीतना (एटले जनोइना) सोगन आपवा, क्षत्रियने तेनी तलवारना सोगन आपवा, वैश्यने गाय, देव, अने ब्राह्मणना सोगन आपवा, अने शूद्रोने पापोना सोगन आपवा.

पापो कयां कयां? ते हवे कहे छे.

जे साक्षी जुठुं बोले, तेर्डने स्त्रीहत्या, बालहत्या, तथा गर्भहत्या, विगेरेनुं पाप थाय छे.

वली असत्य बोलवाथी, दान, पूजा आदिकथी उत्पन्न थएलुं पुण्य नष्ट थाय छे, एम विचारि मुकरदमामां साक्षिर्उए सत्य वात कहेवी.

हवे केवा साक्षिर्उ मान्य गणाय छे? ते कहे छे.

यथार्थ बोलनारा, लोजविनाना, क्षमारूपी धर्ममां तत्पर, मोहरहित, जयविनाना, दान देनारा, एवा साक्षिर्उने माननीक कहेला छे.

हवे केवा साक्षीर्उ अमाननीक होय छे? ते कहे छे.

लोजी, गद्गद्वाणी बोलनारो, दुष्ट, बोलतां बोलतां जे अचकाइ जाय तेवो, विरुद्ध जापण करनारो, क्रोध करनारो, साते व्यसनो सेवनारो, अथवा तेमाना एक पण व्यसनने सेवनारो, एटला साक्षिर्उने अमाननीक कहेला छे.

राजाए पेहेलां वादीना साक्षिर्उनी जुवानी लेवी. अने त्यारबाद प्रगट रीते प्रतिवादीना साक्षिर्उनी जुवानी लेवी.

वादीना साक्षिर्उए साक्षी आप्याबाद, मुकरदमाने खुलो करवामाटे प्रतिवादिना साक्षिर्उ जो जूठी साक्षी पूरे, तो ते वखते न्यायाधीशे शुं करवुं? ते हवे कहे छे.

प्रतिवादीनो कोइ चाकर, मित्र, संबंधि, कुटुंबी, करजदार, अथवा पडोशी विगेरे जो पक्षपात राखीने जूठी साक्षी आपे,

तो न्यायाधीशे, तेउं दरेकने दंडवा. (वादीना साक्षिउंना संबंधमां पण उपरलीज हकीकत जाणवी.)

हवे बन्नेना साक्षिउं लीधावाद शुं करवुं ? ते कहे छे.

न्यायाधीशे बन्नेना साक्षिउंना लेखो वांचीने, तेउं बन्नेमांथी कोनुं वाक्य प्रमाण (एटले सत्य) छे ? ते माटे मजासदोनो अभिप्राय मागवो.

जो वादी पोताना साक्षी आदिकोथी पोतानो पक्ष सावित न करे, तो तेने दंडवो. कह्युं छे के,

न शक्नोति नियोगं स्व-मर्थी साक्ष्यादिहेतुभिः ॥
समर्थयितुमेषः स्या-द्राज्यदंडस्य मत्युतः ॥ १ ॥

अर्थ– जो वादी साक्षी आदिकना पुरावाउंथी पोतानो पक्ष सावीत करी न शके, तो (राजाए) उलटो तेनो दंड करवो.

जूठो मुकरदमो दाखल करी पोताना पक्षमाटे वादी जो हठ ले, ता न्यायाधीशे तेनो बेवडो दंड करवो.

जो साक्षिउं जूठी साक्षी भरे तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

वादीना साक्षिउं जो राजापासे असत्य बोले, तो तेउं दरेकने तेउंनी शक्तिमुजब रुपामोहोरोनो दंड करवो.

प्रतिवादीना साक्षिउं जो असत्य साक्षी आपे, तो करजदार एवा प्रतिवादीनुं जे करज होय, ते करज ते साक्षिउंपासेथीज वसुल लेवुं. अने ते देवाने जो तेउं समर्थ न होय, तो तेउंने बीजी शिक्षा करवी.

कोइक साक्षी मुकरदमाना स्वरुपने जाणतां छतां पण कदाच मुंगो रहे तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

जे साक्षी खरा अने खोटा भावोने जाणतां छतां पण, बोले नहीं, तेने जूठो साक्षी जाणीने राजाए तेनो एकसो रुपीआनो दंड करवो.

वन्नेना साक्षिर्ज ज्यारे असत्य बोले त्यारे राजाए शुं करवुं ? ते कहे छे.

ज्यारे बन्नेना साक्षिर्ज जूग पडे, त्यारे राजाए बीजा गुणवान साक्षिर्जने पोते बोलावीने निर्णय करवो.

मुकरदमामां जो ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य जूठुं बोले, तो तेर्जनो दंड करीने तेर्जने नगरबहार कहाडी मेलवा, अने शूद्रने साक्षिमाटे अयोग्यज कहेलो छे.

बीजा साक्षिर्ज न मली शके, तो राजाए शुं करवुं ? ते कहे छे.

वादी अने प्रतिवादी बन्नेनी अनुमती लेइने, एकज धर्मनिष्ठ साक्षी करवो, अने ते साक्षी, शुद्ध, गुणवान्, सत्य बोलनारो, तथा समतावंत होवो जोइए.

हवे अहीं कोइ शंका करे के, सीमाडा आदिकना मुकरदमार्जमां तो राजा पोते करेला साक्षिर्जथी निर्णय करी शके, पण बीजा लेवडदेवड आदिकना मुकरदमार्जमां, जो साक्षी न मली शके, तेम कंइ लेखपत्र पण न मली शके तो राजाए केवी रीते फेंसलो आपवो ? ते हवे कहे छे.

(तेवा मुकरदमार्जमां) वादी अने प्रतिवादी बन्नेना जो साक्षिर्ज न मली शके, तो राजाए तेर्जने नीचेप्रमाणे सोगनो आपवा. ब्राह्मणने तेना देवना सोगन आपवा. क्षत्रियने अग्निना सोगन आपवा. अने वैश्यने तेना गुरुना सोगन आपवा.

उपर लखेला प्रमाणने लोकोना अधिकारीर्जए " दिव्यप्रमाण " कहेलुं छे. अने तेवा सोगन खाधा छतां पण जे जूठुं बोले छे, तेर्जनुं लगलग मृत्यु थाय छे.

हवे त्यारबाद राजाए वादी अने प्रतिवादी बन्नेना पक्षोनी

सत्यतानो निर्णय करीने, तथा सज्जासदोनी तेमां सम्मति लेइने चुकादो आपवो.

एवी रीते व्यवहारमार्गना विधिनो क्रम टुंकामां कह्यो; के जेना स्मरणथी मनुष्य (आ जगतमां) कोइथी पण ठगातो नथी.

॥ इति व्यवहारकृतिप्रकरणम् ॥

हवे ऋण (एटले करजनुं) स्वरूप कहे छे.

सुवर्णवर्णोऽभ्रनरेंद्रसूनुः, क्रौंचांकितः श्रीसुमतिर्जिनेंद्रः
ऋणप्रदानग्रहणाधिकारं, प्रवक्तुकामं सुमतिं प्रदेयात् १

अर्थ-सुवर्णसरखी कांतिवाला, तथा अभ्रनामना राजाना पुत्र, अने क्रौंच नामना पक्षिना लांछनवाला एवा श्रीसुमतिनाथ प्रभु, करज देवाना अने करज ग्रहण करवाना अधिकारने केहवानी इच्छावाला एवा मने उत्तम बुद्धि आपो!

हवे करज कोने कहेवुं ? तेनुं लक्षण कहे छे.

कोइक माणसे याचना करवाथी, जे द्रव्यवान माणस व्याजना दरथी द्रव्यनी वृद्धिमाटे अमुक नियमथी तेने उचितुं द्रव्य आपे छे तेने पंडितो ऋण एटले " करज " कहे छे.

हवे तेवुं करज कोण अने कये वखते करेछे? ते कहेछे.

निर्धन माणसने ज्यारे पोतानुं, कुटुंबनुं अथवा मित्रनुं अवश्य कार्य आवी पडे छे, त्यारे ते विचारी करज करीने द्रव्यवान माणसपासेथी धन लावे छे. हवे तेवुं द्रव्य लेइने ते निर्धन करजदारे दरमासे तेनुं व्याज भरी देवुं जोइए, अने नियमित मुदते ते सघलुं मूल द्रव्य तेना मालिकने भरी आपवुं.

एवी रीते मुदत गयाबाद पण जो करजदार माणस लेणदारे माग्यां छतां पण द्रव्य पाछुं न आपी जाय, तो लेणदारे ते वात राजाने जाहेर करवी.

[illegible]ज्ञान मेळववाने होशदारने केवी रीते
[illegible] आपवु ? कहे छे.

[illegible] पोतानुं नाम [illegible]. ([illegible]) [illegible] [illegible] तेनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] पण [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible]. तेणे तेने [illegible] ([illegible]) पण [illegible].

[illegible]

[illegible] " [illegible] " [illegible] " कविता " [illegible] छे.

[illegible] ॥
[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

एदार माणस जो एक कोडीपण न आपे, तो ते व्याजनी
मुधां मूलरकमनुं जे व्याज लेवुं. (एटले व्याजनुं पण जे
लेवुं) तेने पंडेली " चक्रवृद्धिनी " रीति कहेली छे.

हवे बीजी कालिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

मासपक्षदिनेष्वेत-द्ऽजतानामहं ध्रुवम् ॥
वृद्धिं दास्यामि नियतां, कालिका सा स्मृता बुधैः॥२

अर्थ- द्रव्य लेनार माणस, द्रव्य आपनारने एम कहे के
आटला रुपीआना व्याजतरिके दरमासे, दरपखे, अथवा दर-
दियसे हुं चोक्स आटली रकम आपीश. एवा प्रकारनी रीतिने
पंडितोए " कालिका " नामनी बीजी रीती कहेली छे.

हवे त्रीजी कारिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

मासाकृतप्रतिज्ञायां, नोचेद्दास्यामि किंचन ॥
दास्यामि द्विगुणान् रौप्या-निति वृद्धिस्तु कारिका३

अर्थ- आ (एक) मासनी करेली प्रतिज्ञानी अंदर जो हुं
कंईपण न आपुं, तो तेथी बमणा रुपीआ मारे आपवा; एवा प्र-
कारनी व्याजनी रीतीने त्रीजी "कारिका" नामनी रीति कहेली छे.

हवे चोथी कायिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

कृतमासप्रतिज्ञोऽपि, मिषं दातुमशक्नुयात् ॥
देहेन सेवां धनिनो, वृद्धिः सा कायिका मता ४

अर्थ- एक मासनी प्रतिज्ञा कर्या छतां पण जो व्याज न देइ
शके, अने ते व्याजना बदलामां ते लेणदार माणसनी पोतानां
शरीरथी चाकरी करे, तो तेने चोथी " कायिका " नामनी
व्याजनी रीती कहेली छे.

हवे करज करीने (एटले नाणुं व्याजे लेइने) जे माणस देशां-
तरमां नासी जाय, तेने माटे शुं करवुं ? ते कहे छे.

गृहीत्वार्णं ऋणी गच्छे-द्देशाद्देशांतरं यदि ॥
तदा गतेऽब्दे मासवृद्धि-र्द्विगुणा स्यादिति स्थितिः १

अर्थ– करज करीने जो करजदार माणस पोताना देशमांथी बीजे देश नाशी जाय, तो एक वर्ष गयाबाद, दरमासे तेनापर बमणुं व्याज चडे, एवी रीति छे.

पोताना देशमां रहेलो एवो पण करजदार माणस, लेणदारे माग्या छतां पण जो धन आपे, तो पछी लेणदारे शुं करवुं ? ते हवे कहे छे.

गत्वाभिमायसर्वस्वं, राजानं प्रविबोधयेत् ॥
तद्विविच्य नृपः सभ्ये-रुभावप्याह्वयेत्ततः ॥ १ ॥

अर्थ– ते पछी ते लेणदारे राजापासे जइ, तेने सर्व वृत्तांत जाहेर करवो. राजाए पण ते संबंधि सभासदो साथे विचारिने ते बन्नेने (एटले लेणदार अने करजदार बन्नेने) (पोतानीपासे) बोलाववा.

पछी ते लेणदारनुं सर्व द्रव्य तेने थएला खर्चसहित करजदारपासेथी राजाए अपाववुं.

हवे ते समये करजदारपासे जो रोकड नाणुं न होय, तो राजाए ते करजदारना तेटली किंमतनां दागीना, धान्य, अथवा वस्त्रो लेणदारने सोंपाववां. अने ते दिवसथी अनुक्रमे करजदारपर तेनुं बमणुं, त्रमणुं अने चोगणुं व्याज चडे. पछी करजदारनी ते सघळी मिलकत लेणदारे (राजाए ठरावी आपेली मुदत सुधि यत्नपूर्वक सांचवी राखवी.)

पछी करजदारपासेथी दागीना, धान्य अथवा वस्त्रो जो न मळी शके, अने तेने बदले गाय, भेंस आदिक पशुओ मळे तो ते दिवसथी करजदारपर व्याज चडे नहीं. अने पछी पोतानी लब्धि थये मूळ रकम आपी ते पशुओने करजदार छोडावी शके.

हवे करजदारपासेथी द्रव्यने बदले उपरप्रमाणे आभूषण आदिक लेणदारपासे जे आव्यां होय, ते वस्तुओने कदाच चोरो चोरी जाय तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

ते समये राजा चोरोने शोधी कहाडी, तेमनीपासेथी ते द्रव्य अपावे, अने जो चोरो न मली शके, तो खातरी कर्या-बाद राजाए तेटली वस्तुओनी किंमत जेटलुं द्रव्य पोताना भंडा-रमांथी आपवुं. (केमके, चोरोथी प्रजानुं रक्षण करवुं, ए राजानी फरज छे.)

हवे कोइए प्रीतिने लीधे पोताना मित्र अथवा सगाने उछि-तुं द्रव्य आप्युं होय, तो तेनुं व्याज होय नहीं. कह्युं छे के,

प्रीत्या दत्तं तु यद्द्रव्यं, वर्धते नैव तत्कदा ॥
याचिते वर्धते दत्तं, प्रतिमासमिषक्रमात् ॥ १ ॥

अर्थ–प्रीतिथी जे द्रव्य आप्युं होय, तेनुं कदापि पण व्याज होय नहीं. पण मागणी करवाथी जे द्रव्य अपायुं होय, तेनुं दरमासे व्याज चडे छे.

" पितानुं करज पुत्रे आपवुं जोइए " एवुं नियत (निश्चित) होवाथी नपुंसकपणा आदिकना दोषोवालाओने पण करज दे-वानो प्रसंग आवे छे, माटे तेओना निवारणमाटे हवे कहे छे.

सत्सु पुत्रेषु तेनैव, ऋणं देयं सुतेन च ॥
येन पितृवसु प्राप्तं, क्लीबांधबधिरादिषु ॥ १ ॥

अर्थ– घणा पुत्रो होते छते, तेज पुत्रे करज देवुं के, जेणे (पोताना) नपुंसक, अंध, अने बेहेरा आदिक भाइओमांथी पितानुं धन मेलव्युं होय.

विभक्त नहीं थएला एटले जुदा नहीं थएला एवा भाइओ, स्त्रीभरतार, तथा पितापुत्रे, जे करज करवुं ते तेओ सर्वेनी पर-

स्पर अनुमति लेइने करवुं (अर्थात् तेओ सघलाए एकठा थइने करज करवुं.)

हवे तेओ सघला जो विभक्त एटले जुदा होय तो, तेओने द्रव्यवान माणसे (कोइने) साक्षी राखीने द्रव्य आपवुं, ते कहेछे.

भ्रातृणामविभक्तानां, दंपत्योः पितृपुत्रयोः ॥
ऋणलाभस्त्वेकमत्या, विभक्ते मातिभांव्यतः ॥१॥

अर्थ– जुदा नहीं थएला एवा भाइओनेमाटे, स्त्रीभरतारनेमाटे, अने पितापुत्रमाटे, करजनो लाभ तेओ सर्वनी अनुमतिप्रमाणे छे. अने जो तेओ जुदा होय तो, साक्षी राख्यापूर्वक छे.
(उपलक्षणथी करजदारपासेथी लेणु लेवाना संबंधमां पण उपलीज हकीकत जाणवी.)

हवे तेवा संबंधमां जे साक्षिओ राखवा, ते साक्षिओना त्रण भेदो छे. ते कहे छे. " दृष्टि ॥ १ ॥ " " प्रत्यय " ॥ २ ॥ अने " दान " ॥ ३ ॥

" दृष्टि " एटले (धन धीरनार माणसने) साक्षी एम कहे के, जे वखते तुं आ करजदारनी मारीपासे मागणी करीश, तेज वखते हुं ते आसामीने तने बतावी आपीश. ॥ १ ॥

" प्रत्यय " एटले (धनधीरनार माणसने) साक्षी एम कहे के, आ माणस आ अमुक माणसनो पुत्र छे, तेम ते कुलवान छे. माटे मारी खातरीथी तेनी मागणीप्रमाणे तुं तेने द्रव्य आप. ते माणस तने कदापिपण ठगशे नहीं. ॥ २ ॥

" दान " एटले (धन धीरनार माणसने) साक्षी एम कहे के, तुं आ माणसने द्रव्य आप ? ते तने पाछुं तुरत आपी देशे. अने जो ते नहीं आपे, तो नीमेली मुदते ते नाणां हुं तने आपीश. ॥३॥

एवी रीते साक्षीना त्रण भेदो जाणवा.

हवे साक्षिनी फरज शुं छे ? ते कहे छे.

गृहीतद्रव्यो निःस्वश्चे-त्प्रतिभूर्धनवान् यदा ॥
मूलं दद्यैव सर्वं तत्, कुर्यात्तं निर्ऋणं तदा ॥ १ ॥

अर्थ- द्रव्य लेनार माणस जो निर्धन थयो होय, अने साक्षी (एटले जामीन) जो धनवान् होय, तो मूळरकम साक्षीए आपीने ते बिचाराने करजरहित करवो.

जो एकज कार्यमां घणां साक्षिओ होय, तो ते साक्षीओए पोतपोताना हिंसाबप्रमाणे द्रव्य एकठुं करीने लेणदारने आपवुं. ते कहे छे.

एककृत्ये प्रतिभुवः, बहवः स्युः परस्परम् ॥
स्वस्वशक्त्यनुसारेण, धनिने दद्युरेकशः ॥ १ ॥

अर्थ- एकज (करजदारना) काममां जो घणां साक्षिओ होय, तो तेओए परस्पर एकठा थइ पोतपोतानी शक्तिने अनुसार दरेके, ते धन लेणदारने आपवुं.

हवे करजदार जो देशांतरे भाग्यो गयो होय, अने तेथी तेनो " दर्शनसाक्षी " ते करजदारने नीमेली मुदतदरम्यान तेना लेणदारने देखाडी न शके, तो लेणदारे ते साक्षीपासेथी ते नाणां वसुल करवां, ते युक्त छे. पण न्यायनी रीतिथी ते लेणदारे ते साक्षीने त्रण पखवाडीआनी बीजी वधारे मुदत आपवी जोइए. अने ते मुदत दरम्यान जो ते साक्षी ते करजदारने तेना लेणदारने देखाडी आपे, तो ते साक्षी पोताना साक्षीपणाथी मुक्त थाय छे. अने ते मुदतदरम्यान पण जो न देखाडी शके, तो साक्षीए ते नाणां आपवांज जोइये. ते कहे छे.

प्रतिभूरधमर्णार्थं, गृह्णात्पक्षत्रयं प्रभोः ॥
दर्शयित्वा स्वयं काले, मुक्तः स्यो्ऽन्यथा ददेत्स्म॥१॥

अर्थ- साक्षीए करजदारनी शोधमाटे लेणदारपासेथी त्रण पखवाडिआनी मागणी करवी. अने ते मुदतदरम्यान तेने देखाडीने ते साक्षी पोताना वचनथी खरेखर मुक्त थाय छे.

हवे रोकड नाणुं लेवामाटे मुकेला मालनुं विवेचन करे छे.

विश्रंभाय मन्नोर्वस्तु, दत्वा गृह्णाति रौप्यकान् ॥
स आधिर्द्विविधः प्रोक्तो, नियतेतरभेदतः ॥ १ ॥

अर्थ- धन आपनारना विश्वासमाटे आघ तरिके कंइक वस्तु मुकीने (माणस) रुपीआ ले छे; ते आघना " नियत " अने " अनियत " एवा बे भेदो कहेला छे.

गोप्यभोग्यतया सोऽपि, द्विविधः संप्रकीर्तितः
वर्धिष्णितरभेदाभ्यां, पुनः स द्विविधः स्मृतः ॥ २ ॥

अर्थ- वळी ते आघ " गोप्य " एटले सोंपवावाळायक, अने " भोग्य " एटले वापरवावाळायक एम बे प्रकारनो कहेलो छे। वळी ते वधीशके तेवो, अने न वधी शके तेवो, एम बे प्रकारनो कहेलो छे.

" आघ " एटले करज आपनार माणसने विश्वासमाटे जे वस्तु गीरोमां आपे छे, ते "आघ" कहेवाय छे. तेना "नियत" अने " अनियत " एवा बे भेदो छे. तेम " गोप्य " अने " भोग्य " एवा पण तेना बे भेदो छे.

हवे " नियत " एटले, जेमके, (करजदार माणस लेणदारने कहे के) वैशाखसुदि पांचमने दिवसे तमारा रुपीआ आपीने हुं घरेणुं आघ छोडावीश. अने जो हुं तेम न करुं तो आ घरेणुं तमारी वस्तु समजीश छे. (अर्थात् तेपर तमारोज हक छे) तेने " नियत आघ " कहे छे.

अने केटलाक मुदतविना पोतानी (करजदारनी) इच्छाप्रमाणे

(एटले अचोकस मुदते) करजदार थापण छोडावे, ते " अनियत थापण" कहेवाय.

हवे " गोप्य " एटले सोनुं, रुपुं, तथा रत्न आदिक जे वस्तुओ लेणदारथी भोगवी शकाय नहीं, पण (पेटी आदिकमां) राखी मेलाय. अने वली कालांते तेनो नाश पण थाय.

" भोग्य " एटले खेतर, बगीचा आदिक तेनो भोगवटो लेइ शकाय छे. अने तेनी त्रीस वर्षोनी मुदत होवाथी तेनो कंई नाश थतो नथी.

आधिस्तु नैव भोक्तव्यो, भुक्ते तु वृद्धिहानिता ॥
गोप्यस्य नियते काले,ऽतीते स्वामी धनी भवेत्॥१॥

अर्थ— " गोप्य " थापण लेणदारे भोगववोज नहीं, (अर्थात् तेनो तेणे उपयोग करवो नहीं) अने जो तेनो ते उपयोग करे, तो व्याज लेवुं नहीं; अने मुदत पूरी थयाबाद ते गोप्य थापणनो लेणदार मालीक थइ शके.

नष्टे तु मूल्यं देयं स्या-द्दैवभूपापदं विना ॥
भोग्यस्यावधिपूर्तौ च, धनी स्वामी न जायते॥१॥

अर्थ— अकस्मात अने राज्यतरफना संकटने बाद करीने थापणतरीके राखेली वस्तु जो नष्ट थाय, तो नाणा धीरनार आसामीए ते वस्तुनुं मूल्य करजदारने पाछुं आपवुं.

तेम मुदत गयाबाद भोग्य वस्तुनो लेणदार मालीक थइ शके नहीं. करजदारे थापणतरीके राखेली वस्तु जो लेणदार वापरे, अने ते जो करजदारना जोवामां आवे, तो लेणदारने व्याज मले नहीं. ते थापण मुकेली वस्तु जो नाश पामे तो लेणदारे तेनुं मूल्य करजदारने देवुंज जोइए. (तेमां अपवाद एटलो के, तेना संबंधमां राज्यतरफथी अथवा अकस्मातथी कंई आपदा न आवे, तो)

सुवर्ण, रुपुं विगेरे " गोप्य थापण " निमेली मुदत व्यतीत

थयावाद लेणदारनी मालेकीनुं थाय. पण " जोग्य " एवी खेतर आदिक स्थावर मिल्कत, नीमेली मुदत पूरी थयावाद पण लेणदारनी मालीकीनी थइ शके नहीं. पण जंगम मीलकन मुदत पूरी थयावाद लेणदारनी मालीकीनी थाय.

हवे जो कोइक करजदारे पोतानुं खेतर थालमां राखीने धनवानपासेथी रुपीआ लीधा होय, अने दैवयोगे ते खेतर (एटले तेमां रहेलुं धान्यादिक जो नदीनी रेल आदिकथी नष्ट थाय, तो करजदारे ते रुपीआने बदले बीजो थाल आपवो जोइए, अने तेम जो न करे, तो करजदारे लेणदारने आगला रुपीआ आपी देवा जोइए. ते कहे छे.

नद्या नृपेन वा क्षेत्रं, हृतं चेद्दणिना पुनः ॥
आधिरन्यः प्रदेयो वा, दीनत्वे धनिने धनम् ॥ १ ॥

अर्थ– जो नदी क्षेत्रनो नाश करे, अथवा तेने राजा हरी जाय, तो करजदारे बीजो थाल (लेणदारने) आपवो अने तेवो बीजो थाल आपवानुं जो न बने तो लेणदारने तेनुं मागतुं द्रव्य आपी देवुं (केमके, तेमां कंइ लेणदारनो अपराध नथी, ते तो पोताना (करजदारना) कर्मोनुं फल छे.)

हवे कोइक कपटी धनवान, प्रपंच करीने थाल तरीकेनी वस्तु पोताना स्वाधिनमां लेइले, तेम रीतिपूर्वक रुपीआनुं लखत पण करावी ले, ते छतां जो रुपीआ न आपे, तो पछी ते करजदारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

ज्ञापयित्वा तद्वृत्तं-मृणी नृपाधिकारिणाम् ॥
गृह्णीयादाधिलेखं स्वं, स दंड्यः शतरुप्यकैः ॥ १ ॥

अर्थ– (ते समये) करजदारे ते वृत्तांत राजाना न्यायाधीशोने जणावीने, पोतानो थाल, तथा (पोते करी आपेलुं) ल-

ख्त पाछुं लेवुं; अने (राजाए) पण लेवा दुष्ट लेणदारने एकसो रुपीआनो दंड करवो.

हवे व्याज केटलुं लेवुं ते कहे छे.

एकसो रुपीआ व्याजु जो लीधा होय, तो दरमासे तेनुं (व-धारेमां वधारे) बे रुपीआ जेटलुं व्याज जाणवुं.

करजदार माणस जो मृत्यु पामे, तो तेना पुत्रे पोताना बा-पनी सही तथा मुद्रा खतमां जोइने, ते करजना पैसा लेण-दारने आपवा जोइए.

हवे तेनो अपवाद कहे छे.

सुराकैतवद्यूतार्थं, परस्त्रीहेतुकं तथा ॥
ऋणं पितृकृतं पुत्रो, देयान्नैव कदाचन ॥ १ ॥

अर्थ– मद्यपानमाटे, ठगाइमाटे जुगारमाटे, तथा परस्त्रीमाटे जो पिताए करज करेलुं होय, तो ते करज पुत्रे कदापि पण देवुं नहीं.

आर्तातिवृद्धबालास्वा-धीनोन्मत्तकमद्यपैः ॥
याच्यते च ऋणं नैव, धनी दद्यात् कदापि तान् ॥१॥

अर्थ–रोगी, अतिवृद्ध, बालक, परवश थएलो, गांडो थएलो तथा मद्यपान करनारो, एटला माणसो जो व्याजु द्रव्य लेवा आवे, तो तेओने द्रव्यवान माणसे कदापि पण व्याजु द्रव्य आपवुं नहीं.

कुटुंबना पोषणमाटे पिताए करेलुं करज, तेना मृत्युबाद तेना पुत्रोएज देवुं जोइये, तेनेमाटे कहे छे.

कुटुंबार्थं कृतं पित्रा, ज्येष्ठभ्रात्रा ऋणं यदि ॥
तयोर्मृत्यौ समत्वेन, दद्युस्ते सर्वबांधवाः ॥ १ ॥

अर्थ–कुटुंबना पालणपोषणमाटे पिताए अथवा मोटा भाइए जे करज करेलुं होय, ते तेओना मृत्युबाद सर्व भाइओए (जुदा होय अथवा साथे होय तोपण) सरखे हिस्से अदा करवुं.

स्वामीनी गेरहाजरीमां चाकरे करेलुं करज स्वामीए देवुं जोइए तेमाटे कहे छे.

प्रभवसत्वे कुटुंबार्थं, ऋणं दासेन यत्कृतम् ॥
तत्स्वामी वितरेत्सर्वं, सामियं च ससाक्षिकम् ॥ १ ॥

अर्थ– स्वामीनी एटले शेठनी गेरहाजरीमां (ते शेठना) कुटुंबना पोषणमाटे चाकरे जे करज कर्युं होय, ते सघळुं करज, व्याजसहित साक्षीपूर्वक ते स्वामीए आपवुं जोइए.

नाणां धीरनार आसामीए पोताना घरमां रहीने गुप्त रीते करजदारसमेथी दागन करावबुं नहीं, अने जो तेम करे तो ते दागन नकुं ठरे छे. (अर्थात् प्रगट रीते त्रियात साक्षिओनी साक्षीपूर्वक दागन करावबुं जोइए)

शेठदार मागणे करजदारपासेथी (स्त्रीआदिक) नहीं ग्रहण करवालायक वस्तुओ ग्रहण करवी नहीं, केमके, तेथी लोकोमां निंदा थाय छे, अने तेमज निर्धनपणुं प्राप्त थाय छे.

हवे व्यापारमार्गनो विषय कहे छे.

[illegible]मार्गे [illegible], [illegible] ॥
[illegible] गुर्वाम्या-[illegible] द्विवर्षं [illegible] च साक्षिता ॥ २ ॥

अर्थ– [illegible] मार्गना, अने पाणीना [illegible] [illegible] (अर्थात् [illegible]) [illegible] [illegible].

[illegible]

कथी पूर्वापरनो निश्चय करीने, (एटले प्रथम ते खेतरना थाल-पर कोणे नाणां धीर्यां ? अने पाछलथी तेपर कोणे नाणां धीर्यां छे ते बाबतनो निश्चय करीने) प्रथम नाणां धीरनारने तेनुं द्रव्य अपाववुं.

हवे जमीनना संबंधनुं स्वरूप कहे छे.

परेण भुज्यमाने ज्यां, पश्यन्यो न निषेधते ॥
विंशत्यब्देषु पूर्णेषु, स्वामी प्राप्नोति नैव ताम् ॥ १ ॥

अर्थ– जमीननो मालीक, पोतानी जमीन बीजो माणस भोगवे छे, एम जोतां छतां पण जो तेने अटकावे नहीं, तो वीस वर्षो गयाबाद पोतानी ते जमीन मेळवी शके नहीं. (अर्थात् वीस वर्षो गयाबाद तेनो हक घाल्यो जाय छे.)

हस्त्यश्वादिधनस्यापि, मर्यादा दशवार्षिकी ॥
ततःपरं न शक्तः स्या-द्वाप्तुं तद्धनं प्रभुः ॥ १ ॥

अर्थ–हाथी, घोडा आदिक द्रव्यनी मर्यादा पण दश वर्षोनी छे, त्यारबाद एटले ते मुदत वीत्याबाद ते वस्तुओनो स्वामी पोतानी ते वस्तुओने मेळवी शके नहीं.

हवे थापणरीके मुकेली वस्तुओने नाणां धीरनार आसामी जो बगाडे, तो साक्षी आदिकथी ते बाबतनो निर्णय करीने राजाए ते लेणदारपासेथी ते वस्तुनी किंमत करजदारने अपाववी अने विशेषमां ते लेणदारनो दंड पण करवो.

बडबाओए उपार्जन करेली मीलकतपर पिता अने पुत्र, बन्नेनो सरखो हक छे.

एवी रीते आ ग्रंथमां संक्षेपथी "ऋणादाननुं" स्वरूप कह्युं; तेनुं विस्तारथी वर्णन "बृहदर्हन्नीति" नामना शास्त्रथी जाणी लेवं.

॥ इति ऋणादानप्रकरणं समाप्तम् ॥

एवी रीते पूर्वना प्रकरणमां "ऋणादाननुं" स्वरूप कह्युं. हवे एवी रीते नाणां व्याजु लेइने केटलाक माणसो एकठा थइने (एटले कंपनीरूप थइने) व्यापार आदिक करे छे. तेउनुं स्वरूप कहे छे.

पद्मप्रभं जिनं नत्वा, पद्माभं पद्मलांछनम् ॥
संभूय च समुत्थान-क्रमं वक्ष्ये समासतः ॥ १ ॥

अर्थ– कमलसरखी कांतिवाला, तथा कमलना लंछनवाला एवा श्री पद्मप्रभु नामना जिनेश्वरने नमस्कार करीने, संक्षेपथी मंडलीरूप थएला माणसोनो क्रम कहीशुं.

सर्वैर्मिलित्वा लाभार्थं, वणिजो नृत्यकारिभिः ॥
क्रियते वृत्तिरन्योन्य-संमत्या सद्भिरुच्यते ॥ १ ॥

अर्थ– नृत्यकारो (आदिक) घणां माणसो एकठा थइने लाभनेमाटे जे व्यापार करे छे, तेने पंडितो "एक बीजानी सम्मतीवाली आजीविका" कहे छे.

तेथी मंडलीमां जे माणस अग्रेसर थइने सर्व भोजन, वस्त्र, धान्य विगेरे आपे छे, ते "मुखी" कहेवाय छे.

अथवा घणा व्यापारीउ एकठा थइने सुवर्ण, रुपुं, अफीण, कपास, धान्य, घी, तेल, गोल आदिक वस्तुउनो व्यापार करे छे, अने तेमां थनो नफो अथवा नुकसानी सघला पोताना हिस्सा प्रमाणे वेची ले छे हवे तेउमां द्रव्यनी मूडी देनार जो एक होय, अने बाकीना सघला जो निर्धन होय तो तेउ सघला ते द्रव्य देनारने पोतपोताना नाणमांथी तेनी मूडीनुं व्याज आपे छे. अने वधेली मुद्दले पोतपोतानो हिस्सो वेंची ले छे.

एम करतां थकां तेउवच्चे जो कंइ टंटो थाय, तो राजादिके तेउनां टंटानो निकाल करवो जोइए अने तेटलामाटेज तेनी मंडलीना टंटाने पण व्यवहारमां गणेलो छे.

उपर कहेली रीतीमुजब नटादिको एकठा थइने पोतानी आजीका चलावे छे. अने तेओ चर्चेला करारमुजब जे नफो अथवा नुकसान थाय छे, ते तेओ सरखे हिस्से वेंची ले छे.

राजाज्ञातो विरुद्धं य, त्कृत्य मुद्रांकनादिकम् ॥
परद्रव्यापहरण-मेतेष्वेकः करोति चेत्॥ १ ॥
जाते विवादे दंड्याः स्युः, सर्वेऽनुमतिदानतः ॥
यथाद्रव्यं यथैश्वर्यं, नृपेन न्यायवर्तिना ॥ २ ॥

अर्थ–हवे एवी मंडलीमांनो एक मनुष्य, राजानी आज्ञाथी विरुद्ध एवुं, सिका पाडवा आदिकनुं,अथवा परद्रव्य हरण आदिकनुं जो कार्य करे, तो तेनो मुकरदमो चलाव्याबाद, न्यायी राजाए ते मंडलीमांना सर्व माणसोने तेओनी शक्तिमुजब दंडवा; केमके,तेवां कार्यमां मंडलीमाना सर्व माणसोनी अनुमति होय छे.

हवे तेवी मंडलीमानो कोइ माणस जो पुत्रविना मरण पामे, तो तेनुं सर्व द्रव्य तेनी ज्ञातिना माणसोए एकठा थइने राखी मेलवुं. ते समये राजाए ते माणसना वारसनी शोधमाटे एक वर्षमुधीनी नोटीस आपवी. अने ते मुदत दरम्यान जो तेनो वारस मली आवे, तो तेनी खातरी करीने ते द्रव्य तेने सोंपवुं; पण तेमांथी चोथो हिस्सो ते द्रव्यनुं रक्षण करनाराओने राजाए आपवो. अने कदाच ते मुदत दरम्यान जो तेनो वारस न मली शके, तो ते द्रव्य राजाए ते माणसनी ज्ञातिने भोजन करावयामां, तथा प्रतिष्ठादिक कार्यमां वापरवुं.

गाय जेम पोताना वाछरडानुं पोषण करे छे, तेवी रीतथी राजाए पोतानी प्रजानुं पालण करवुं; पण लोभवृत्ति राखीने अन्यायथी द्रव्य उपार्जन करवुं नहीं.

एवी रीते संक्षेपथी संभूयोत्थाननुं वर्णन कर्युं.

॥ इति संभूयोत्थान प्रकरणं समाप्तम् ॥

हवे "देयप्रकरणनो" प्रारंभ करे छे.

श्रीसुपार्श्वजिनं नत्वा, सप्तमं तीर्थनायकम् ॥
देयादेयविधिं सम्यक्, विवृणोमि समासतः ॥ १ ॥

अर्थ– सातमा तीर्थंकर श्रीसुपार्श्व प्रभुने नमस्कार करीने, संक्षेपथी देयादेयनी विधिनुं सारी रीते हुं विवरण करुं छुं.

पूर्वना प्रकरणमां "संभूयोत्थाननुं" वर्णन कर्युं. हवे तेमां कोइ साधारण द्रव्यथी दान पण करे छे. तेथी "देयादेयनी" व्यवस्थाने निरुपण करवामाटे हवे देयविधिनुं व्याख्यान करे छे.

व्यवहारविधौ देय-विधिः स द्विविधः स्मृतः ॥
दत्ताप्रदानिकं नाम, दत्तस्यानपकर्म च ॥ १ ॥

अर्थ–व्यवहारनी विधिमां देयविधि बे प्रकारनो कहेलो छे. एक "दत्ताप्रदानिक अने बीजो "दत्तानपकर्म" एम बे प्रकारनो छे.

द्रव्यं दत्वा च यः सम्यक्, आदातुं पुनरिच्छति ॥
दत्ताप्रदानिकाख्यः स, विकल्पः प्रथमो मतः ॥१॥

अर्थ– सारी रीते द्रव्य देइने, फरीने ते पाछुं लेवाने जे इच्छवुं, तेने "दत्ताप्रदानिक" नामनो पेहेलो "देयविधि" कहेलो छे;

सम्यग् दत्तं च यद्द्रव्य-माहर्तुं तन्न शक्यते ॥
व्यवहारपदे दत्ता-नपकर्मेति नामतः ॥ २ ॥

अर्थ– सम्यक्प्रकारे दीधेलुं जे द्रव्य पाछुं लेवामां आवतुं नथी, तेने व्यवहार मार्गमां बीजो "दत्तानपकर्म" नामनो "देयविधि" कहेलो छे.

पुनश्चतुर्विधं दानं, प्रोक्तं दत्तं तथेतरम् ॥
अदेयं देयमिति च, व्यवहारे विचक्षणैः ॥ ३ ॥

अर्थ– वली व्यवहार मार्गमां विचक्षण पुरुषोए दान चार प्रकारनुं कहेलुं छे; दत्त ॥ १ ॥–अदत्त ॥ २ ॥–देय ॥३॥ –अने अदेय ॥ ४ ॥

" दत्त " एटले पाछुं न लेइ शकाय तेवुं. " अदत्त " एटले पाछुं लेइ शकाय तेवुं.

" अदेय " एटले पारकुं अथवा साधारण द्रव्य. अने " देय " एटले पोतानुं अथवा असाधारण द्रव्य.

तेउमांथी " दत्त " दान छ प्रकारनुं छे. वस्तु वेचाथी लेइ तेनुं मूल्य आपवुं ते ॥ १ ॥ कोइनापर अनुकं पाथी देवुं ते. ॥ २ ॥ चढ्ढीसतरिके देवुं ते. ॥ ३ ॥ कीर्तिमाटे देवुं ते. ॥ ४ ॥ धर्मने अर्थे देवुं ते. ॥ ५ ॥ अने प्रत्युपकारमाटे देवुं ते. ॥ ६ ॥ एम " दत्तदान " छ प्रकारनुं छे.

हवे " अदत्तदानना " जेदो कहे छे. " अदत्तदान " शोल प्रकारनुं छे. जयथी दान देवुं ते. ॥ १ ॥ क्रोधथी दान देवुं ते ॥ २ ॥ शोकथी दान देवुं ते ॥ ३ ॥ उत्सेकथी दान देवुं ते. ॥ ४ ॥ परिहासथी एटले मश्करीमांज दान देवुं ते ॥ ५ ॥ बलात्कारे दान देवुं ते. ॥ ६ ॥ दुःखगर्जित वैराग्यथी दान देवुं ते. ॥ ७ ॥ मदथी दान देवुं ते. ॥ ८ ॥ गांडा थइ दान देवुं ते. ॥ ९ ॥ रोगना सबबथी रोगीए दान देवुं ते. ॥ १० ॥ बाल्यपणाथी दान देवुं ते. ॥ ११ ॥ परतंत्रपणाथी दान देवुं ते. ॥१२॥ मोहथी दान देवुं ते ॥ १३ ॥ प्रतिलाजनी इच्छाथी दान देवुं ते. ॥ १४ ॥ कुपात्र नेसुपात्रनी बुद्धिथी दान देवुं ते ॥ १५ ॥ अने कुधर्ममां धर्मबुद्धि लावीने दान देवुं ते ॥ १६ ॥ एवी रीते अदत्तदानना शोल जेदो छे.

उपर कहेला शोले प्रकारोथी जे दान देवुं, ते तत्वथी कहीयें तो अदानज छे.

उपर रोगीए दीधेला दानने जे अदत्त कह्युं छे, तेमां अपवाद एटलो के, धर्मने अर्थे तेवा रोगीए जो दान दीधुं होय तो ते "दत्तदानज" कहेवाय छे. अने एवी रीते धर्मनेमाटे रोगीए दीधेलुं दान तेना मृत्युबाद पण तेना पुत्रे अवश्य देवुंज जोइए. तेमाटे बृहदर्हन्नीतिमां पण कह्युं छे के,

"रोगाउरेण दिणं जं दाणं मुख्खधम्मकज्जस्स
तस्सय मरणेविसुउ जुग्गोच्चियंतं धणं दातुं"

हवे "अदेय दानना" जेदो कहे छे. "अदेयदान" नव प्रकारनुं छे. साधारण ड्व्य ॥ १ ॥ कोइए थापण राखेलुं ड्व्य ॥ २ ॥ पुत्र ॥ ३ ॥ स्त्री ॥ ४ ॥ मागीने लावेलुं ड्व्य ॥ ५ ॥ थालतरीके राखेली वस्तु ॥ ६ ॥ देवड्व्य ॥ ७ ॥ अन्वाहित ड्व्य ॥ ८ ॥ अने सर्वस्व ड्व्य ॥ ९ ॥ ए नव प्रकारनी वस्तुउ "अदेयदान" कहेवाय छे. (अर्थात् ते वस्तुउनुं दान मोटी आपदा आवी पडे तो पण करी शकाय नहीं.)

(कोइक माणस विवाह आदिकना प्रयोजनमाटे कोइकनां वस्त्राजूषणो मागीने लाव्यो होय, अने पाछां ते वस्त्राजूषणो कोइक बीजा माणसने सोंपीने तेने कहे के, आ वस्त्राजूषणो तुं मारीवती तेना स्वामीने आपजे; ते वस्त्राजूषणो तेना मालिक शिवाय बीजाने आपवां नहीं. ते "अन्वाहित ड्व्य" कहेवाय)

(वळी पुत्र तथा पौत्र आदिकनो जो परिवार होय तो पोताना सर्व ड्व्यनुं दान नहीं करी देवुं. पण ते पुत्रादिकना जरणपोषणमाटे जेटलुं ड्व्य जोइये, तेटलुं राखीने बाकीना ड्व्यनुं दान आपवुं) केमके तेउनुं जरणपोषण करवुं ते जरूरनुं छे. कह्युं छे के, वृद्ध एवां माता, पिता, पुत्र, बाळक, तथा पतिव्रता स्त्री, ते सघळाउनुं हमेशां प्रयत्नपूर्वक पोषण करवुंज.

एवे " देयनुं ? स्वरूप कहे छे.

देयं तदेव विज्ञेयं, यस्यापहरणं न हि ॥
यथात्मीयविरोधो न, दत्तवत्सप्तभेदयुक् ॥ १ ॥

अर्थ– " देयदान " तेनेज जाणवुं के, जे पाछुं लेवाय नहीं, तथा जे दीधाथी पोताना कुटुंबीओमां विरोध न थाय; एवी रीतनुं देयदान पण "दत्तदाननी" पेठे सात प्रकारनुं छे.

धर्मनेमाटे जे वस्तु जे माणसने देवानी कबुल करी होय, ते माणस जो धर्मथी च्युत न थयो होय, तो ते वस्तु तेने देवीज.

एवे उपर वर्णवेलामांथी जे " अदत्तदान " ग्रहण करे छे, अने जे " अदेयदान " आपे छे, तेने माटेनो दंड कहे छे.

अदत्तग्राहको लोभा-द्यथाऽदेयस्य दायकः ॥
एतावुभौ दंडनीयौ, यथादोषं महीभुजा ॥ १ ॥

अर्थ–जे माणस लोभथी "अदत्तदाननुं" ग्रहण करे छे,तथा "अदेयदान" आपे छे, ते बन्नेने तेओना गुन्हाप्रमाणे राजाए दंडवा.

एवी रीते अहीं देयविधिनुं संक्षेपथी वर्णन कर्युं तेनुं विस्तारपूर्वक वर्णन, ते जाणवाना अभिलाषीओए " वृहदर्हन्नीति " नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति देयविधि प्रकरणं समाप्तम् ॥

एवे दायभागना प्रकरणनो प्रारंभ करे छे.

लक्ष्मणातनयं नत्वा, द्युसदेंद्रादिसेवितम् ॥
गेयामेयगुणाविष्टं, दायभागः प्ररूप्यते ॥ १ ॥

अर्थ– देवो अने इंद्रादिकोथी सेवायेला तथा वर्णववालायक एवा अनेक गुणोथी युक्त थयेला एवा श्रीचंद्रप्रभुने नमस्कार करीने (हुं) " दायभागनुं " स्वरूप कहुंछुं.

आगलना प्रकरणमां " देयविधिनुं " स्वरुप कहेलुं छे. तेमा " अदेय" एवुं " साधारण " द्रव्य खरचवानी बाबतमां जाइ-उंयचे कलह थवाथी तेमाटे " दायजागनुं " स्वरुप कहेवुं जोइए. अने तेथी हवे ते " दायजागनुं " स्वरुप कहे छे.

स्वस्वत्वापादनं दायः, स तु द्विविधमश्नुते ॥
आद्यः सप्रतिबंधश्च, द्वितीयोऽप्रतिबंधकः ॥ १ ॥

अर्थ– पोतपोतानापणाने प्रतिपादन करनारो " दायजाग " कहेवाय छे; अने ते दायजाग वे प्रकारनो छे. तेउंमां पेहेलो " सप्रतिबंध " नामनो छे. अने बीजो " अप्रतिबंध " नामनो छे.

" दायजाग " एटले मा बाप अने दादा आदिकनी वस्तुउंमांथी पोतपोतानो जाग, के जे जागमांथी खरच करतां थकां कोइ अटकावी शके नहीं. ते " दायजाग " वे प्रकारनो छे. एक " सप्रतिबंध " अने बीजो " अप्रतिबंध " तेउंमां काका, तथा जत्रीजा आदिकनो जो प्रतिबंध होय (अर्थात् तेउंनाथी जो मजमु होय) तो ते दायजाग " सप्रतिबंध " कहेवाय छे. अने पोताना पुत्र तथा पौत्रादिकोथी जो मजमु होय तो ते " अप्रतिबंध " कहेवाय छे. केमके, पुत्रपणाना संबंधमां द्रव्यनी मालेकी बाबत कइं प्रतिबंध होतो नथी.

हवे ते द्रव्य वे प्रकारनुं होय छे. एक स्थावर अने बीजुं जंगम कह्युं छे के,

दायो जवति द्रव्याणां,तद् द्रव्यं द्विविधं स्मृतम् ॥
स्थावरं जंगमं चैव, स्थितिमत् स्थावरं मतम् ॥ १ ॥
गृहारामादिवस्तूनि, स्थावराणि जवंति च ॥
जंगमं स्वर्णरौप्यादि, यत्प्रयोगेण गच्छति ॥ २ ॥

अर्थ– "दायजाग " द्रव्योनो होय छे; अने ते द्रव्य वे प्रकारनुं कहेलुं छे. एक " स्थावर " अने बीजुं " जंगम " जे

द्रव्य (एटले मील्कत) स्थिर रहे ते " स्थावर " कहेवाय छे. जेमके, घर, बगीचा इत्यादिक स्थिर रहेनारी वस्तुओ स्थावर कहेवाय छे. अने सुवर्ण, रुपुं इत्यादिक जे वस्तुओ प्रयोगथी चाली जाय छे, ते जंगम कहेवाय छे,

न विभज्यं न विक्रेयं, स्थावरं च कदापि हि ॥
प्रतिष्ठाजनकं लोके, ह्यापदाकालमंतरम् ॥ १ ॥

अर्थ– लोकोमां आबरु राखनारी एवी स्थावर मील्कतना, विपत्ति कालविना कदापी पण भाग पाडवा नहीं, के वेचवी नहीं.

सर्वेषां द्रव्यजातानां, पिता स्वामी निगद्यते ॥
स्थावरस्य तु सर्वस्य, न पिता न पितामहः ॥ १ ॥

अर्थ– सर्व प्रकारनां द्रव्योनो, पिता स्वामी कहेवाय छे. अने सर्व प्रकारनी स्थावर मिल्कतनो स्वामी पिताके पितामह कहेवाता नथी.

जीवत्पितामहे तातो, दातुं नो स्थावरं क्षमः ॥
तथा पुत्रस्य सद्भावे, पितामहमृतावपि ॥ १ ॥

अर्थ– जो बापनो बाप जीवतो होय, तो पिताने स्थावर मील्कत आपी देवानो हक नथी; तेम ते दादाना मृत्युबादपण जो पुत्र होय, तो ते स्थावर मिल्कत, पिता (बीजाने) आपी शके नहीं. (अहीं उपलक्षणथी स्थावर मील्कत मूल्य लेइ वेचवाना संबंधमां पण उपलीज हकीकत जाणवी,)

पिता स्वोपार्जितं द्रव्यं, स्थावरं जंगमं तथा ॥
दातुं शक्तो न विक्रेतुं, गर्भस्थेऽपि स्तनंधये ॥ १ ॥

अर्थ– पुत्र गर्भमां होय, अथवा धावणो होय तोपण, पोते उपार्जन करेली स्थावर या जंगम मील्कतने पिता (कोइने) आपी शके, अथवा वेची शके नहीं.

अज्ञाता अथवा हीनाः, पितुः पुत्राः सदा भुवि ॥
सर्वे स्वाजीविकार्थं हि, तस्मिन्नंशहराः स्मृताः ॥ १ ॥

अर्थ– पिताना पुत्रो अज्ञान एटले मूर्ख होय, अथवा हीन एटले अंगथी हीन अथवा आचारथी पण जो हीन होय, तो-पण तेओ सर्वे तेओनी आजीविकामाटे हमेशां आ दुनीआमां (पितानी मिल्कतना) जागीदारो छे.

आमासव्यवहारेषु, तेषु मातापितावपि ॥
कार्ये त्वावश्यके कुर्या--त्तस्य दानं च विक्रयम् ॥ १ ॥

अर्थ–हवे ते पुत्रो ज्यारे व्यापारमां जोडाइ जाय, त्यारे माता-पिता, अवश्य कार्य पड्ये, ते मिल्कतनुं दान अने वेचाण करी शके.

धर्म, ज्ञाति, अने कुटुंबना कार्य माटे, अने आपत्तीने दूर करवा माटे मातपितापण स्थावर मिल्कतनुं दान अथवा वेचाण करी शके, अहीं " मातापिता " ए शब्दना उपलक्षणथी मोटा भाइने पण जाणी लेवो. पण तेमां अपवाद एटलो के, बाकीना नाना भाइओ जो बाल्यपणाना भावथी अनुमति देवाने असमर्थ होय तो, मोटो भाइ पोतानी इच्छा मुजब जरूरना प्रसंगमां दानादिक करवाने समर्थ थाय.

दुःखागारे हि संसारे, पुत्रो विश्रामदायकः ॥
यस्माहते मनुष्याणां, गार्हस्थ्यं च निरर्थकम् ॥ १ ॥

अर्थ–दुःखोना स्थानक सरखा एवा आ संसारमां पुत्र छे ते खरेखर विश्राम आपनारो छे, के, जे पुत्रविनानुं गृहस्थीपणुं केवल निरर्थक छे.

यस्य पुण्यं वलिष्ठं स्या--त्तस्य पुत्रा अनेकशः ॥
संभूयैकत्र तिष्ठंति, पित्रोः सेवासु तत्पराः ॥ १ ॥

अर्थ—जे माणसनुं पुण्य बलवान छे, तेना घणां, पुत्रो साथे रहीने मातपितानी सेवामां तत्पर रहे छे.

लोभादिकारणाज्जाते, कलौ तेषां परस्परम् ॥
न्यायानुसारिभिः कार्या, दायभागविचारणा ॥१॥

अर्थ— (त्यारबाद) लोभादिकना हेतुथी तेओ वच्चे परस्पर ज्यारे क्लेश थाय, त्यारे न्यायाधीशोए तेओना दायभागमाटे विचार करवो जोइए.

हवे पुत्रोवच्चे ते दायभाग केवी रीते होय ? ते कहे छे.

पित्रोरूर्ध्वं तु पुत्राणां, भागः सम उदाहृतः ॥
तयोरन्यतमे नूनं, भवेद्भागस्तदिच्छया ॥ १ ॥

अर्थ— मातपिताना मृत्युबाद सर्व पुत्रोनो (मिल्कतमां) सरखो भाग होय छे. पण ते माता अथवा पितामांथी कोइपण जो हयात होय, तो ते माता अथवा पितानी इच्छामुजब (पुत्रोने) भाग मळे छे.

(बीजी जगोए जे एम कहुं छे के, " ज्येष्ठ एटले मोटा पुत्रने बमणो भाग आपवो " एवी रीतनी विषम भागनी कल्पना मातपितानी इच्छानुसार कहेली छे.) पण ते कल्पना फक्त पितासंबंधि एटले पिताए उपार्जन करेली मील्कतमाटे छे. पण दादाओए उपार्जन करेली मील्कतने ते कल्पना लागु पडे नहीं.

हवे अहीं मातपिताए करेलुं करज कोणे अने केवी रीते देवुं ? ते कहे छे.

विभक्ता अविभक्ता वा, सर्वे पुत्राः समांशतः ॥
पित्रो ऋणं प्रदद्युश्च, भवेयुर्भागभागिनः ॥ १ ॥

अर्थ–जुदा होय अथवा साथे होय, तो पण सर्व पुत्रोए तुल्य हिस्साथी मातपितानुं करज आपीनेज तेनी (मातपितानी) मिल्कतमां नागीदार थवुं.

हवे पिताए करेला विषम नागना प्रमाणपणामां अने अप्रमाणपणामां शुं हेतु छे ? ते कहे छे.

धर्मतश्चेत्पिता कुर्या–त्पुत्रान् विषमनागिनः ॥
प्रमाणं वैपरीत्ये नु, तत्कृतस्याप्रमाणता ॥ १ ॥

अर्थ–धर्मथी पिता जो पुत्रोने विषमनागी करे (अर्थात् कोइ पुत्रने थोडी मील्कत आपे, अने कोइ पुत्रने वधारे मिल्कत आपे, तो ते प्रमाणनूत कहेवाय छे, पण तेथी जो वीपरीतपणे वेचण करे, तो ते अप्रमाणनूत कहेवाय.

हवे केवो पिता विपरीतपणाथी नाग करे छे? के जेथी तेणे करेलो नाग अप्रमाणनूत कहेवाय? ते कहे छे.

व्यग्रचित्तोऽतिवृद्धश्च, व्यनिचाररतस्तु यः ॥
द्यूतादिव्यसनासक्तो, महारोगसमन्वितः ॥ १ ॥
उन्मत्तश्च तथा क्रुद्धः, पक्षपातयुतः पिता ॥
नाधिकारी नवेद्नाग-करणे धर्मवर्जितः ॥ २ ॥

अर्थ–व्यग्रचित्तवालो, अत्यंत बुढो थएलो, व्यनिचारमां आसक्त थएलो, जुगार आदिकना व्यसनमां जोडाएलो, महान रोगे करीने युक्त थएलो, उन्मत्त थएलो, क्रोधित थएलो, पक्षपाते करीने युक्त थएलो, अने धर्मे करीने रहित थएलो एवो पिता (पुत्रोने) नाग पाडी आपवा माटे अधिकारी नथी.

विनाग पाड्नी वेलाए जे नाइओ हजु (बाल होवाथी) जनोइवाला अथवा परणेला न होय, तेओनी ते संबंधि गोठवण कोणे करवी ? ते कहे छे.

असंस्कृतान्यपात्राणि, संस्कृत्य भ्रातरः स्वयम् ॥
अवशिष्टं धनं सर्वं, विभजेयुः परस्परम् ॥ १ ॥

अर्थ–जो भाई हजु नानेरा या परणेला. या धंधे लागेला न होय, (तेओने माटे एक अलायदी रकम जाग पाडती थेलाए राखवी जोइए) के जे रकममांथी तेओनी ते संबंधि गोठवण भाईए करवी. अने तेम करतां जे द्रव्य वधे. ते द्रव्य तेओए परस्पर वेंची लेवुं.

एवे नाना अने मोटा भाइओनी पछे, मोटा भाइनो
केटलो अधिकार होय छे ? ते कहे छे.

अनुजानां लघुत्वे तु, सर्वस्याप्यग्रजो धनम् ॥
सर्वं गृह्णाति तत्पथ्यं, तदा तान्पालयेत्सदा ॥ १ ॥

अर्थ–नाना भाइओनी लघु अवस्थामां, तेओना भागनुं सर्व पितासंबंधि द्रव्य मोटा भाइए पोताना स्वाधीनमां राखवुं. अने ते समये तेओनुं पोषण करवुं.

विभक्तानविभक्तान्वै, भ्रातॄन् ज्येष्ठः पितेव सः ॥
पालयेत्तेऽपि तं ज्येष्ठं, सेवंते पितरं यथा ॥ १ ॥

अर्थ–जुदा थएला होय, अथवा भेळा रहेला होय, एवा भाइओने मोटा भाइए पितानी पेठेज पालवा, अने ते भाइओए पण पितानी पेठेज मोटा भाइनी सेवा करवी.

पूर्वजेन तु पुत्रेण, अपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥
ततो न देयः सोऽन्यस्मै, कुटुंबाधिपतिर्यतः ॥ १ ॥

अर्थ–प्रथम उत्पन्न थएला पुत्रथी अपुत्र माणस पुत्रवान थाय छे. माटे ते पहेलो पुत्र बीजाने आपवो नहीं, केमके, ते कुटुंबनो अधिपति थाय छे.

अने आ हेतुथीज केटलाको एकहुं छे के,

ज्येष्ठ एव हि गृह्णीयात्, पैत्र्यं धनमशेषतः ॥
शेषास्तदनुसारित्वं, भजेयुः पितरं यथा ॥ १ ॥

अर्थ–मोटा पुत्रेज सघळुं पितासंबंधि द्रव्य ग्रहण करवुं, अने बाकीना पुत्रोए, पिताजीनी पेठेज ते मोटा भाइना कहेवा प्रमाणे वर्तवुं.

हवे विभाग पाड्याबाद जनमेली बेहेनना विवाह, मातपिता परलोक गयाबाद कोणे करवो ? ते कहे छे.

एकानेका च चेत्कन्या, पित्रोरूर्ध्वं स्थिता तदा ॥
स्वांशात्पुत्रस्तुरीयांशं, दत्वावश्यं विवाह्यते ॥ १ ॥

अर्थ–एक अथवा तेथी वधारे एवी बेहेनोने, मातापिता परलोक गयाबाद, भाइए पोताना भागमांथी चोथो भाग आपीने अवश्य तेणीने परणाववी जोइए.

हवे दायभागमां कन्यानो भाग होय के नहीं? ते माटे कहे छे.

विवाहिता च या कन्या,तस्या भागो न कर्हिचित् ॥
पित्रा प्रीत्या च यद्दत्तं, तदेवास्या धनं भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ–जे कन्यानो विवाह थयो होय, ते कन्यानो दाय भाग होयज नहीं, तेणीने मातपिताए जे कंइ द्रव्य प्रीतिथी आप्युं होय, तेज द्रव्य तेणीनुं थाय.

विभाग पाडती समये भरतारे पोतानी स्त्रीउने केटलो भाग आपवो जोइए ? ते माटे कहे छे.

यावतांशेन तनया, विभक्ता जनकेन तु ॥
तावतैव विभागेन, युक्ताः कार्या निजस्त्रियः॥१॥

अर्थ-जेटला भागथी पिताए पुत्रोने जुदा कर्या होय (अर्थात् भाग पाडती वेलाए पिताए पुत्रोने जेटलो भाग आप्यो होय) तेटलोज भाग तेणे पोतानी स्त्रीउने पण आपवो.

हवे पिताना मृत्यु बाद, ज्यारे पुत्रो पोतानी मील्कतनी वेंचण करवा बेसे, त्यारे माताने केटलो भाग आपवो? तथा ते माताना मृत्यु बाद तेना धननो कोण स्वामी थाय? तेने माटे कहे छे.

पितुरूर्ध्वं निजांबायाः पुत्रैर्भागश्च सार्धकः॥
लौकिकव्यवहारार्थं, तन्मृतौ ते समांशिनः॥१॥

अर्थ-पिताना मृत्यु बाद पोतानी माताने पुत्रोए लौकिक व्यवहार माटे अरधो अरध भाग पाडवो, अने ते माताना मृत्युबाद तेणीनी मील्कत पुत्रोए सरखे हिस्से वेंची लेवी.

(पिताना मृत्युबाद विभाग पाडवा माटे तैयार थएला पुत्रोए पोतानी जो घणी माताउ होय, तो तेउमांथी मोटीने वधारे भाग आपवो; केमके, ते पूज्य होवाथी व्यवहार आदिक कार्योमां तेणीनेज अधिकार होय छे. अने तेणीना मृत्युबाद जो तेणीने दीकरी अथवा दीकरीनो दीकरो न होय, तो तेणीनी मील्कत सर्व पुत्रोए तुल्य हिस्साथी वेंची लेवी.)

हवे जोमलांतरिके जन्मेला पुत्रोमां ज्येष्ठपणुं कोने प्राप्त थाय? ते माटे कहे छे.

पुत्रयुग्मे समुत्पन्ने, यस्य प्रथमनिर्गमः॥
तस्यैव ज्येष्ठता ज्ञेया, इत्युक्तं जिनशासने॥१॥

अर्थ-जोडलां तरिके जो पुत्रोनो जन्म थाय, तो जे पुत्रनुं (योनिद्वारथी) प्रथम आगमन थाय, तेनेज ज्येष्ठपणुं जाणवुं. एवी रीते जिनशासनमां कहेलुं छे.

हवे पुत्रीनो जन्म थयाबाद जो पुत्रनो जन्म थाय, तो तेउमांथी काने ज्येष्ठपणुं मलें? ते सूचवता थका कहे छे.

दुहिता पूर्वमुत्पन्ना, सुतः पश्चाद्भवेद्यदि ॥
पुत्रस्य ज्येष्ठता तत्र, कन्याया न कदाचन ॥१॥

अर्थ- पेहेलां पुत्रीनो जन्म थाय, अने पछी जो पुत्रनो जन्म थाय, तोपण ज्येष्ठपणुं पुत्रनेज प्राप्त थाय, पुत्रीने कदापि पण ज्येष्ठपणुं प्राप्त न थाय.

हवे जे माणसने एकज दीकरीज होय, अने बीजो कंई संतान न होय, तो ते माणसना द्रव्यनो कोण मालीक थाय? ते देखाडता थका कहे छे.

यस्यैकायां तु कन्यायां, जातायां नान्यसंततिः ॥
प्राप्तं तस्य धनाधिपत्यं, सुतायास्तत्सुतस्य च ॥१॥

अर्थ- जे माणसने फक्त एकज दीकरी होय, अने ते शिवाय बीजी संतति न होय, ते माणसना मृत्युबाद तेना धननी मालकी पुत्रीने अने ते पुत्रीना पुत्रने प्राप्त थाय. कह्युं छे के,

आत्मैव जायते पुत्रः, पुत्रेण दुहिता समा ॥
तस्यामात्मनि तिष्ठन्त्यां, कथमन्यो धनं हरेत ॥ १ ॥

अर्थ- पुत्र पोतानोज उत्पन्न थाय छे, अने पुत्री पण ते पुत्रनी तुल्य छे. माटे तेवी रीते आत्मरूप एवी पुत्री होते छते, बीजो माणस धन शानुं लइ शके?

हवे पिता आदिक मरण पामे, त्यारे तेना धननी मालीकी [illegible] पुत्री अने पुत्रीना दीकराने थती, तो तेमां [illegible] धननी मालीकी कोनी? अने [illegible] धननी [illegible]? ते माटे कहे छे.

[illegible] ॥
[illegible] ॥ १ ॥

अर्थ- परणेली कन्या जो पोतानी मातानुं द्रव्य ग्रहण करे, तो तेणीनो पुत्र एटले दोतरो पितानुं द्रव्य खुशीथी ग्रहण करे.

पौत्रदौहित्रयोर्मध्ये, भेदोऽस्ति न हि कश्चन ॥
तयोर्देहे हि संबंधः, पित्रोर्देहस्य सर्वथा ॥ १ ॥

अर्थ- पौत्र (एटले दीकरानो दीकरो) अने दौहित्र (एटले दीकरीनो दीकरो) ए बन्नेमां कंइ पण भेद नथी, केमके, तेओ बन्नेना शरीरमां मातपिताना शरीरनो सर्वथा प्रकारे संबंध छे.

हवे परणेली पुत्री जो कंइ पण संतानविना मृत्युपामे, तो तेणीना द्रव्यनो कोण मालिक थाय? ते कहेछे.

विवाहिता च या कन्या, चेन्मृताऽपत्यवर्जिता ॥
तदा तद्द्युम्नजातस्या-धिपतिस्तत्पतिर्भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ-परणायेली एवी कन्या जो संतानविना मृत्यु पामे, तो तेणीना सर्व धननो मालिक तेणीनो स्वामी थाय.

पिताए भागो पाडी दीधाबाद जन्मेला पुत्रने कोनो हिंस्सो मळे? ते कहे छे.

विभागोत्तरजातस्तु, पुत्रः पित्र्यंशभाग् भवेत् ॥
नापरेभ्यस्तु भ्रातृभ्यो, विभक्तेभ्योंऽशमाप्नुयात् ॥१॥

अर्थ-(बीजा पुत्रोनो) विभाग पाड्याबाद जन्मेला पुत्रने पितानी मिल्कतमांथी भाग मळे पण जुदा थएला एवा बीजा भाइओनी मील्कतमांथी भाग मळे नहीं. (आ उपरथी खुल्लुं छे के, विभाग पाड्या पेहेलां जन्मेला सर्व भाइओने सरखो भाग मली शके छे.)

पिताना मृत्यु पछी पुत्रो जुदा थयाबाद जन्मेला पुत्रनो भाग शी रीते पडे? ते कहे छे.

पितुरूर्ध्वं विभक्तेषु, पुत्रेषु यदि सोदरः ॥
जायते तद्विभागः स्या-दायव्ययविशोधितात्॥१॥

अर्थ– पिताना मृत्यु पछी, पुत्रो जुदा थयाबाद जो सहोदर भाइनो जन्म थाय, तो तेनो विभाग पोताना भागमांथी आवक जावकना विशोधनथी थाय. (भाग पाडती वेलाए मातानो गर्भ जो स्पष्ट रीते न जणातो होय, तो जुदा थएला भाइए पाछलथी जन्मेला पुत्रने आवक जावकनो हिसाब करीने पोताना भागमांथी पोताना सरखोज भाग देवो. अने मातानो गर्भ जो स्पष्ट रीते जणाय तो तेणीना प्रसवकालसुधीनी राह जोइने त्यारबाद भाग पाडवो.)

हवे ब्राह्मण आदिक त्रणे वर्गनी सवर्ण सवर्ण स्त्रीथी उत्पन्न थएला पुत्रोने शीरीते भाग आपवो? ते देखाडता थका कहे छे.

ब्राह्मणस्य चतुर्वर्णाः, स्त्रियः संति तदा वसु ॥
विभज्य दशधा तज्जान्, चतुस्त्रिद्व्यंशभागिनः ॥१॥

अर्थ– जो एक ब्राह्मणने चारे वर्णोनी स्त्रीओ होय, अने तेओथी उत्पन्न थएला पुत्रो जो होय, तो ते ब्राह्मणे पोतानी मील्कतना दश हिस्सा पाडवा; अने तेमांथी अनुक्रमे ब्राह्मणीथी उत्पन्न थएला पुत्रने चार भागो आपवा, क्षत्रीआणीथी उत्पन्न थएला पुत्रने त्रण भागो आपवा अने वाणीआणीथी उत्पन्न थएला पुत्रने बे भागो आपवा.

कुर्यात्पितावशिष्टं तु, भागं धर्मे नियोजयेत् ॥
शूद्राज्जातो न भागार्हो, भोजनांशुकमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ– बाकी रहेलो एक भाग पिताए धर्ममार्गमां वापरवो; अने शूद्र स्त्रीथी जो पुत्र उत्पन्न थयो होय, तो तेने भोजन अने वस्त्रविना बीजो भाग मले नहीं.

क्षत्राज्जातः सवर्णाया-मर्धभागी विशात्मजात् ॥
जातस्तुर्यांशभागी स्या-च्छूद्रोत्पन्नोऽन्नवस्त्रभाक् ॥१॥

अर्थ– एक क्षत्रीय पितानो क्षत्रीयाणीथी उत्पन्न थएलो पुत्र अर्ध भागनो मालिक थाय, वाणीआणीथी उत्पन्न थएलो पुत्र चोथा भागनो मालिक थाय, अने शूद्रस्त्रीथी उत्पन्न थएला पुत्रने फक्त भोजन अने वस्त्रो मळे.

वैश्याज्जातः सवर्णायां, पुत्रः सर्वपतिर्भवेत् ॥
शूद्राज्जातो न दायादो, योग्यो भोजनवाससाम् ॥१॥

अर्थ– एक वणिक पितानो वाणीआणीथीज उत्पन्न थएलो पुत्र सर्व मिलकतनो मालिक थइ शके, अने शूद्र स्त्रीथी उत्पन्न थएला पुत्रने भाग न मळे, तेने फक्त भोजन अने वस्त्रो मळे.

वर्णत्रये यदा दासी-वर्गशूद्रात्मजो भवेत् ॥
जीवत्तातेन यत्तस्मै, दत्तं तत्तस्य निश्चितम् ॥ १ ॥

अर्थ– त्रणे वर्णमां, दासीरूप एवी कोइ शूद्रस्त्रीथी जो पुत्रनो जन्म थाय, तो पिताए जीवतां थकां जे वस्तु तेने दीधेली होय, ते वस्तुनो ते निश्चयें करीने मालिक थाय.

मृते पितरि तत्पुत्रैः, कार्यं तेषां हि पालनम् ॥
निर्बंधश्च तथा कार्य-स्तातं येन स्मरंति हि ॥ १ ॥

अर्थ– पिताना मृत्युबाद तेना पुत्रोए ते दासीपुत्रोनुं पालन करवुं; अने तेओने माटे एवी गोठवण करी आपवी, के जेथी तेओ पिताजीने संभार्या करे.

शूद्रस्य स्त्री भवेच्छूद्री, नान्या तज्जातसूनवः ॥
यावंतस्तेऽखिला नूनं, भवेयुः समभागिनः ॥ १ ॥

अर्थ– शूद्रनी स्त्रीतो शूद्रीज होय, बीजी जातिनी होय नहीं. माटे तेणीनाथी उत्पन्न थएला जेटला पुत्रो होय, तेउ सघला खरेखर तुल्य जागोवाला थाय.

हवे शूद्र नहीं परणेली एवी दासीथी उत्पन्न थएला पुत्रने शीरीते जाग मले ? ते कहे छे.

दास्यां जातोऽपि शूद्रेण जागजाक् पितुरिच्छया ॥
मृते तातेऽर्धजागी स्या-दूढाजो ज्ञातृजागतः ॥ १ ॥

अर्थ– शूद्रथी दासीने पेटे जन्मेला पुत्रने (पितानी दयातिमां) पितानी इच्छामुजब जाग मले; अने पिता जो मृत्युपामे तो तेना मृत्युबाद ते अर्धजागी थाय, अने परणेली एवी (दासीथी) उत्पन्न थएला पुत्रने जाउउनी तुल्य जाग मले. (वली पिताने जो बीजा पुत्रो न होय, तेम दीकरीनो दीकरो पण न होय, तो ते दासीपुत्र पितानी सर्व मीलकतनो मालिक थाय.

हवे कोइक माणस स्त्रीवालो अने पुत्रवालो, अथवा पुत्रविनानो, जो अति क्षय रोगथी पीडीत थयो होय, अने तेथी पोतानी जीववानी आशा छोडीने, पोताना धननी रक्षामाटे जे बीजा कोइ माणसने अधिकारी (मुनीम) नीमे, ते अधिकारी (मुनीम) केवो होय तो योग्य कहेवाय ? ते कहे छे.

जीवनाशाविनिर्मुक्तः, पुत्रयुक्तोऽथवा परः ॥
सपत्नीकः स्वरक्षार्थं, मधिकारपदे नरम् ॥ १ ॥

दद्यात् लोके सनामाङ्कं, राजाज्ञासाक्षिसंयुतम् ॥
कुलीनं धनिनं मान्यं, स्थापयेत्स्वीमतोऽनुगम् ॥२॥

अर्थ– जीववानी आशाथी रहित थएलो एवो स्त्रीवालो माणस, पुत्रवान् होय, अथवा पुत्रविनानो होय, तोपण तेणे पोताना धननी रक्षामाटे, अधिकारी माणसने (मुनीम) नी-

मवो. ते अधिकारी माणस कुलिन, द्रव्यवान, माननीक, अने पोतानी स्त्रीना मनने अनुकुल पडतो होवो जोइए. वली तेवा अधिकारीने मरतीवेलाए, तेने पोताना नामनी सइवालुं लखत करी आपवुं, अने तेमां राजानी आज्ञा, तथा साक्षी नखाववी. (अहीं अधिकारीमाटे " माणस " एवो शब्द कह्यो छे, ते शब्द जातिवाचक छे, माटे उपलक्षणथी तेवा एक अथवा तेथी वधारे माणसोने पण अधिकारी (त्रस्टी) करी शकाय.

हवे स्वामिना मृत्युबाद तेवो अधिकारी माणस, अधिकार मेलवीने, ते धनने नष्ट करे, अथवा खाइ जाय, अथवा ते विधवा स्त्रीनी मननी इच्छाप्रमाणे न वर्ते, तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

प्राप्याधिकारं पुरुषः, परासौ गृहनायके ॥
स्वामिना स्थापितं द्रव्यं, भक्षयेद्वा विनाशयेत् ॥१॥
भवेच्चेत्प्रतिकूलश्च, मृतवध्वाः कथंचन ॥
तदा सा विधवा सद्यः, कृतघ्नं तं मदाकुलम् ॥ २ ॥
भूपाज्ञापूर्वकं कृत्वा, स्वाधिकारपदच्युतम् ॥
नरैरन्यैः स्वविश्वस्तैः, कुलरीतिं प्रचालयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ- घरना स्वामिना मृत्युबाद अधिकारीतरीके (त्रस्टी तरीके) स्थापेलो माणस जो स्वामिए राखेला द्रव्यने खाइ जाय, अथवा नष्ट करे, अने मृत्युपामेला स्वामिनी विधवा स्त्रीथी प्रतिकुल वर्ते, तो ते विधवाए, ते कृतघ्न अने मदोन्मत्त माणसने तुरत राजानी आज्ञा लेइने तेना अधिकारथी दूर करवो अने पोताना विश्वासु एवा बीजां माणसोथी काम लेवुं.

तद्द्रव्यमतियत्नेन, रक्षणीयं तया सदा ॥
कुटुंबस्य च निर्वाह-स्तन्मिषेण भवेद्यथा ॥ १ ॥

अर्थ– वली ते द्रव्यनुं तेणीए अति प्रयत्नपूर्वक रक्षण करवुं; अने तेनुं एवी रीते रक्षण करवुं, के जेथी तेमांथी उत्पन्न थएला व्याजथी कुटुंबनो निर्वाह चाले.

सत्यौरसे तथा दत्ते, सुविनीतेऽथवा सति ॥
कार्ये सावश्यके प्राप्ते, कुर्याद्दानं च विक्रयम्॥१॥

अर्थ– विनयवंत एवो औरस अथवा दत्तक पुत्र होते छते, (ते विधवाए) जरुरनुं कार्य पडते छते (पोतानी मिल्कतमांथी) दान तथा वेचाण करवुं.

हवे भर्तारना मृत्युबाद तेना धननो स्वामी
कोण थाय ? ते कहे छे.

भ्रष्टे नष्टे च विक्षिप्ते, पत्यौ प्रव्रजिते मृते ॥
तस्य निःशेषवित्तस्या-धिपा स्याद्वरवर्णिनी ॥१॥

अर्थ– भरतार जो भ्रष्ट थयो होय, नष्ट थयो होय, विक्षिप्त थयो होय, दीक्षित थयो होय, अथवा मृत्यु पाम्यो होय, तो तेनी सर्व मिल्कतनी मालिकी तेनी स्त्रीने मले.

कुटुंबपालने शक्ता, ज्येष्ठा या च कुलांगना ॥
पुत्रस्य सत्वेऽसत्वे च, भर्तृवत्साधिकारिणी ॥ १ ॥

अर्थ– जे मोटी कुलीन स्त्री कुटुंबनुं पालन करवामां शक्तिवंत होय, ते पुत्र होते छते, अने पुत्र न होते छते पण भर्तारनी पेठे अधिकारी थइ शके छे.

हवे तेवी विधवा स्त्रीने जो औरस पुत्र न होय, तो तेणीए कयो पुत्र दत्तक करवो ? ते कहे छे.

भ्रातृव्यं तदभावे तु, स्वकुटुंबात्मजं तथा ॥
असंस्कृतं संस्कृतं च, तदसत्वे सुतासुतम् ॥ १ ॥

अर्थ– (जरतारना) जत्रिजाने, ते न होय तो जणेला अथवा नहीं जणेला एवा पोताना कुटुंबिना छोकराने, ते न होय तो पुत्रीना पुत्रने दत्तक करवो.

बंधुजं तदभावे तु, तस्मिन्नसति गोत्रजम् ॥
तस्यासत्वे लघुं सप्त-वर्षसंस्थं च देवरम् ॥ १ ॥

अर्थ– ते जो न होय तो जाइना पुत्रने, ते जो न होय तो गोत्रीने, ते जो न होय तो सात वर्षना नाना देवरने तेणीए दत्तक करवो.

विधवा स्वौरसाभावे, गृहीत्वा दत्तरीतितः॥
अधिकारपदे भर्तुः, स्थापयेत्पंच साक्षितः ॥ १ ॥

अर्थ– पोताने औरस (सगो) पुत्र ज्यारे न होय, त्यारे विधवाए,कोइने दत्तक करीने पंचनी साक्षिपूर्वक पोताना जरतारना अधिकार पदपर स्थापवो.

यद्यसौ दत्तकः पित्रोः, प्रीत्या सेवासु तत्परः ॥
विनयाऽक्तिनिष्ठश्च, जवेदौरसवत्तदा ॥ १ ॥

अर्थ– हवे ते दत्तक पुत्र प्रीतिपूर्वक ते मातपितानी सेवामां तत्पर थाय, अने विनयथी जक्तिकारक थाय, तो ते सगापुत्रनी बरोबरज थाय छे.

हवे ते दत्तक पुत्र लेवामां शुं रीति छे ? कहे छे.

अप्रजा मनुजः स्त्री वा, गृहीयाद्यदि दत्तकम् ॥
तदा तन्मातृपित्रादे-र्लेख्यं बंध्वादिसाक्षियुक् ॥ १ ॥

अर्थ– संतानविनानो पुरुष अथवा स्त्री जो दत्तक पुत्र ले तो तेणे बंधु आदिकनी साक्षीपूर्वक, ते दत्तकना मातपितापासेथी दस्तत करावी लेवुं.

राजमुद्रांकितं सम्यक्, कारयित्वा कुटुंबजान् ॥
ततो ज्ञातिजनांश्चैवा-हूय भक्तिसमन्वितम् ॥ १ ॥
सधवागीततुर्यादि- मंगलाचारपूर्वकम् ॥
गत्वा जिनालये कृत्वा, जिनाग्रे स्वस्तिकं पुनः॥२॥
प्रत्नूनं च यथाशक्ति, विधाय सुगुरुं तथा ॥
नत्वा दत्वा च सद्दानं, व्याघुट्य निजमंदिरम् ॥३॥
आगत्य सर्वलोकेभ्य-स्तांबूलश्रीफलादिकम् ॥
दत्वा सत्कार्य सर्वादीन्, वस्त्रालंकरणादिभिः॥४॥
[illegible], कारयेज्जातकर्म सः ॥
ततः [illegible] पुत्रोऽय-मिति लोकनिगद्यते ॥ ५ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्थ-पोतानी जातनीज एवी स्त्रीथी (दत्तक लीधाबाद) जो औरस पुत्रनो जन्म थाय तो, दत्तकने चोथो भाग मळे, अने बीजी जातनी स्त्रीथी उत्पन्न थएलां बाळकोने फक्त भोजन अने कपडां मळे. (वळी ते वखते ते दत्तक पुत्रने चोथो भाग आपी जुदो करवो. अने घरनो सर्व कारभार औरसपुत्रने सोंपवो.

हवे पुत्रो केटला प्रकारना अने शुं लक्षणोवाळा होय? ते कहे छे.

औरसो दत्रिमश्चेति, मुख्यौ क्रीतः सहोदरः ॥
दौहित्रश्चेति कथिताः, पंच पुत्रा जिनागमे ॥ १ ॥

अर्थ-औरस, दत्तक, वेचाथी लीधेलो, सहोदर, अने दौहित्र ए पांच प्रकारना पुत्रो जिनागममां कहेला छे.

(पोतानी धर्मपत्नीथी जे पुत्रनो जन्म थयो होय, ते "औरसपुत्र" कहेवाय. पोताना कुटुंबना एवा कोइ पुत्रने तेना मातपिताए प्रीतिथी जे आप्यो होय ते "दत्तकपुत्र" कहेवाय. मूल्य आपी वेचाथी लीधाला पुत्रने "क्रीतपुत्र" कहेवाय. पोतानो नानोभाइ ते "सहोदरपुत्र" कहेवाय. अने दीकरीनो दीकरो ते "दौहित्रपुत्र" कहेवाय.)

पौनर्भवश्च कानीनः, प्रच्छन्नः क्षेत्रजस्तथा ॥
कृत्रिमश्चोपविद्धश्च, दत्तश्चैव सहोढजः ॥ १ ॥
अष्टावमी पुत्रकल्पा, जैने दायहरा न हि ॥
तीर्थांतरीयशास्त्रे च, कल्पिताः स्वार्थसिद्धये ॥२॥

अर्थ-भर्तारना मरणबाद ते विधवा स्त्रीने कोइ बारना पुरुषथी उत्पन्न थएलो पुत्र "पौनर्भव" कहेवाय; (परण्यावीनानी) कन्याने उत्पन्न थएलो पुत्र "कानीन" कहेवाय. भरतार जीवतांछतां पण परपुरुषथी गुप्तरीते उत्पन्न थएलो पुत्र "प्रच्छन्न"

कहेवाय. पोतानी स्त्रीने देवरथी अथवा जेठथी उत्पन्न थएलो पुत्र "क्षेत्रज" कहेवाय. गरास आदिकनी आजीविकानो लोभ देखाडीने पोताना स्वाधिनमां लीधेलो पुत्र "कृत्रिम" कहेवाय. कोइ कारणथी मातपिताए तजी दीधेला पुत्रने जो कोइए लेइ लीधो होय तो ते "उपविद्ध" कहेवाय. मातपिताए कहाडी मेल्याथी तेओने तजीने पोतानी मेले जे आव्यो होय ते "दत्त" कहेवाय. सगर्भा कन्यानो विवाह थयाबाद तेणीथी उत्पन्न थएलो पुत्र "सहोढज" कहेवाय. ए आठे प्रकारना पुत्रोने अन्यदर्शनीओए स्वार्थ माटे दायभागना मालिक तथा पिंडदान देनारा कह्या छे. पण तेओमां जारपणादिकनां दूषणो होवाथी जैनशास्त्रोमां तेओने दायभागना मालिक कह्या नथी.

स्वामिना मृत्युबाद तेना धननी मालिकी अनुक्रमे कोने मळे ? ते कहे छे.

पत्नी पुत्रश्च भ्रातृव्याः, सपिंडश्च दुहितृजः॥
बंधुनो गोत्रजश्च स्व-स्वामी स्यादुत्तरोत्तरम्॥१॥

अर्थ-स्त्री, पुत्र, (भरतारना भाइना दीकरा) "सपिंड" एटले सात पेढीनी शुद्धिनो वंशज, दीकरीनो दीकरो, "बंधुज" एटले चौद पेढीनी शुधिनो वंशज, तथा गोत्री एम अनुक्रमे धनना मालिक थाय.

तदभावे च ज्ञातीया-स्तदभावे महीभुजा ॥
तद्धनं सफलं कार्यं, धर्ममार्गे प्रदाय च ॥ २ ॥

अर्थ-उपर कहेला आसामीओ जो न होय, तो तेनी मि-लकतना ज्ञातिवाळा मालिक थाय, अने ते ज्ञातिवाळा पण जो न होय, तो राजाए तेनुं द्रव्य धर्ममार्गमां वापरी सफळ करवुं.

हवे जो कोइ विधवा स्त्री होय, तथा देवर आदिकथी प्रति-

कुल थइने जो कुशीलवाली थाय, तो ते समये शुं करवुं? ते कहे छे.

प्रतिकूला कुशीला च, निर्वास्या विधवापि सा॥
ज्येष्ठदेवरतत्पुत्रैः कृत्वान्नादिनिर्बंधनम् ॥ १ ॥

अर्थ-प्रतिकूल रीते चालनारी, तथा खराब आचरणोवाली एवी विधवाने पण, जेठ, देवर अथवा तेना पुत्रोए, तेणी माटे अन्नादिकनो बंदोबस्त करीने, तेणीने (घरमांथी) कहाडी मेलवी तेमां अपवाद एटलो के, तेम करतां कदाच केटलेक काले ते जो पाछी सुधरी जाय, तो पाछो तेणीनो अधिकार तेणीने सोंपवो.)

हवे संतानविनानी एवी कोइक विधवा स्त्री, भूतादिकना दोषथी ज्यारे पोतानुं रक्षण करवाने समर्थ न होय, अर्थात् परवश होय, त्यारे तेणीनी रक्षा कोणे करवी? ते कहे छे.

भूतावेशादिविक्षिप्ता--त्युग्रव्याधिसमन्विता ॥
वातादिदूषितांगा च, मूकांधाऽस्पष्टभाषिणी॥१॥
मदांधा स्मृतिहीना च, धनं स्वीयं कुटुंबकम् ॥
पातुं न हि समर्था या, सा पोष्या ज्येष्ठदेवरैः २

अर्थ-भूतावेशादिकथी जो ते (अपुत्र विधवा स्त्री) विक्षिप्त मनवाली थइ होय, अत्यंत भयंकर रोगवाली, वायु आदिकना दोषवाली होय, मुंगी होय, आंधली होय, स्पष्ट न बोलीशके तेवी होय, मदांध होय, स्मरणशक्तिविनानी होय, तथा जे पोताना धननुं अने कुटुंबनुं रक्षण करवामां असमर्थ होय, तेवी स्त्रीने जेठ अने देवरोए पोषवी.

भ्रातृजैश्च सपिंडैश्च, बंधुभिर्गोत्रजैस्तथा
ज्ञातिजैरक्षणीयं त--द्धनं चातिप्रयत्नतः ॥ १ ॥

अर्थ-वली तेणीना धननुं अनुक्रमे, भत्रिजाओए, सात पेढेनी सुधीना वंशजोए, चौद पेढेडी सुधिना वंशजोए, तथा नातिभा-

जेए अति प्रयत्नपूर्वक रक्षण करवुं. (अने तेउमांथी जो कोइ न होय तो अन्य माणसोए पण तेणीना धननुं रक्षण करवुं.)

हवे संतानविनानी विधवाना द्रव्यनुं ग्रहण करवामां तेणीना पितृपक्षमांथी कोइनो अधिकार छे के नहीं? ते कहे छे.

> यच्च दत्तं स्वकन्यायै, यज्जामातृकुलागतम्॥
> तद्धनं न हि गृह्णीयात्, कोऽपि पितृकुलोद्भवः॥१॥

अर्थ–जे द्रव्य (मातपितादिकोए) पोतानी कन्याने आपेलुं होय, अने जे द्रव्य जमाइना कुलमांथी तेणीने आव्युं होय, ते धन तेणीना पितृपक्षे ग्रहण करवुं नहीं.

(वली तेणीना धननुं रक्षण करनार जो कोइ न होय, तो पितृपक्षे ते धननुं एवी रीते रक्षण करवुं के, तेणीना मृत्युबाद ते धन धर्ममार्गमां खरचाय.) (अपवाद एटलो के, असुरादिक चार विवाहथी परणेली कन्यानुं द्रव्य, जो तेणीने पुत्र न होय, तो तेणीना मातपिता अथवा भाइओ लेइ शके, केमके, तेओए कन्यादान आपेलुं नथी.)

हवे मातानी हयातिमां पुत्रने केटलो अधिकार होय? ते कहे छे.

> आत्मजो दत्तिमादिश्च, विद्याभ्यासैकतत्परः॥
> मातृभक्तियुतः शांतः, सत्यवक्ता जितेंद्रियः ॥१॥
> समर्थो व्यसनापेतः, कुर्याद्रीतिं कुलागताम्॥
> कर्तुं शक्तो विशेषं नो, मातुराज्ञां विमुच्य वै॥२॥

अर्थ–औरस पुत्र, तथा दत्तक आदिक पुत्रे विद्याभ्यासमां तत्पर रही, मातानी भक्ति करवी, शांत थवुं, सत्यवादी, जितेंद्रिय, समर्थ, तथा व्यसनोथी रहीत थइ, कुलाचारनी रीतिप्रमाणे चालवुं. तथा मातानी आज्ञानो त्याग करीने पण विशेष करवानो तेने अधिकार नथी.

हवे मातानी हयातिमां पुत्र, पितानी अथवा पितामहनी मिल्कतमांथी दान अथवा वेंचाण शुं करी शके ? ते कहे छे.

पितुर्मातुर्द्वयोः सत्वे,पुत्रैः कर्तुं न शक्यते॥
पित्रादिवस्तुजातानां, सर्वथा दानविक्रये ॥ १ ॥

अर्थ–पितानी अने मातानी, बन्नेनी हयातीमां पुत्रोथी पितादिकनी मिल्कतनुं दान अथवा वेंचाण करी शकाय नहीं.

हवे औरस अथवा दत्तक पुत्र जो प्रतिकुल थाय,त्यारे मातपिताए शुं करवुं ? ते कहे छे.

पितृभ्यां प्रतिकूलः स्या–त्पुत्रो दुःकर्मयोगतः ॥
ज्ञातिधर्माचारभ्रष्टो, ऽथवा व्यसनतत्परः॥ १ ॥
संबोधितोऽपि सद्वाक्यै, र्न त्यजेद्दुर्मतिं यदि॥
तदा तद्वृत्तमाख्याय, ज्ञातिराज्याधिकारिणः॥२॥
तदीयाज्ञां गृहीत्वा च, सर्वैः कार्यो गृहाद्वहिः॥
तस्यान्नियोगः कुत्रापि,श्रोतुं योग्यो न कर्हिचित् ३

अर्थ–दुर्दैवना योगथी पुत्र जो मातपितानी आज्ञा न माने, ज्ञाति अने धर्मना आचारथी भ्रष्ट थाय, अथवा व्यसनमां तत्पर थाय, मिष्ट वचनोथी समजाव्या छतां पण जो पोतानी दुर्बुद्धि तजे नहीं, तो तेना आचरणसंबंधि, ज्ञातिने तथा राजकारजारीउने वाकेफ करीने तेना स्वाधिनमां रहेली वस्तु लेइ लेइने, सर्व लोकोए तेने घरनी बहारे कहाडी मुकवो. अने क्यांए कोइ पण तेनी अरजी सांभळे नहीं (अने मातपिताए तेने बदले कोइ बीजा बाळकने पुत्र तरिके स्थापवो.)

हवे भाइउ हजु जुदा थया न होय, तेटलामां तेउमांथी एक भाइ जो दीक्षा ले, तो तेनो भाग लेवा माटे तेनी स्त्रीने अधिकार छे के नहीं ? ते कहे छे.

जाइर्जनी वेचाण हजु थइ न होय, तेटलामांज तेर्जमांथी जो एक जाइ दीक्षा ले, तो विजाग पामती वेलाए तेनो जाग तेनी स्त्रीने मले, अने तेनी स्त्री जो न होय तो तेना पुत्रने पण मले.

हवे जायाजागनी वेचाण थयावाद, तेर्जमांनो जो कोइ जाइ मरी जाय, अथवा दीक्षा ले, तो तेनुं धन कोण ग्रहण करे ? ते कहे ले.

पुत्रस्त्रीवर्जितः कोऽपि, मृतः प्रव्रजितोऽथवा ॥
सर्वे तद्भ्रातरस्तस्य, गृह्णीयुस्तद्धनं समम् ॥ १ ॥

अर्थ-पुत्र अथवा स्त्री विनानो एवो कोइ पण माणस जो मृत्यु पामे, अथवा दीक्षा ले, तो सर्वे जाइर्ज तेनुं ते द्रव्य तुल्य जागे येचीले. जाइर्जमां जो कोइ उन्मत्तता आदिक दूषणोवालो होय, तो तेने जाग मली शके के नहीं ? ते माटे कहे ले.

उन्मत्तो व्याधितः पंगुः, पंढोंऽधः पतितो जडः
सस्तांगः पितृविद्वेषी, मुमूर्षुर्बधिरस्तथा ॥ १ ॥
मूकश्च मातृविद्वेषी, महाक्रोधो निरिंद्रियः ॥
दोषत्वेन न जागार्हाः,पोषणीयाः स्वज्रातृजिः ।२।

अर्थ-उन्मादवालो, रोगी, पांगलो, नपुंसक, आंधलो, पट-[illegible], मूर्ख, अंगहीन थएलो, पितानो द्वेष करनारो, आपघात करनारो अथवा मृत्युनी तैयारीपर आवेलो, बेहेरो, मुंगो, मा-तानो द्वेष करनारो, महाक्रोधी अने इंद्रियविनानो, एटला दूष-[illegible] जाइर्ज जागने लायक नथी, पण बीजा जाइर्जए [illegible]
[illegible]
[illegible] पुत्रन्यर्थ–[illegible] जागमवाप्नुयुः ॥
[illegible] त्वेषां, जागाईत्वं प्रजायते ॥ १ ॥

अर्थ-एवा दूषणोवाला भाइर्उना पुत्र अथवा स्त्रीउं जो शुद्ध होय, तो तेउने तेनो नाग मले. अने ते भाइउनां पण ते दूषणो ज्यारे नष्ट थाय, त्यारे तेउने पण तेउनो नाग मली शके.

हवे परणावेलो एवो पण दत्तक पुत्र जो मातपितानी सामे थाय तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

विवाहितोऽपि चेद्दत्तः, पितृभ्यां प्रतिकूलभाक् ॥
भूपाज्ञापूर्वकं सद्यो, निःसार्यो जनसाक्षितः ॥१॥

अर्थ-परणावेलो एवो पण दत्तक पुत्र जो मातपितानी सामे थाय, तो तुरत तेने, राजानी आज्ञा लेइ, लोकोनी साक्षिए कहाडी मेलवो.

हवे कोइ माणस, पोतानी स्त्री, पुत्र के भाइनी सम्मतिविना दादानुं द्रव्य कोइने आपी शके के नहीं ? ते कहे छे.

पैतामहं वस्तुजातं, दातुं शक्तो न कोऽपि हि ॥
अनापृच्छ्य निजां पत्नीं, पुत्रान् भ्रातृगणं च वै ।१।

अर्थ-पोतानी स्त्री, पुत्रो, के भाइउने पूछ्याविना कोइपण माणस दादानी मिल्कत आपी शके नहीं. (केमके, दादाए उपार्जन करेली मिल्कतमां पिता अने पुत्रनो हक साधारण छे.)

हवे घणी स्त्रीउमांथी एक स्त्रीने पुत्र थयो होय, तो ते पुत्र, बीजी, संतानविनानी स्त्रीउना द्रव्यनो मालिक थइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

जातेनैकेन पुत्रेण, पुत्रवत्योऽखिलाः स्त्रियः ॥
अन्यतरस्या अपुत्राया, मृतौ स तद्धनं हरेत्॥१॥

अर्थ-एक पुत्रना जन्मथी (एक धणीनी) सघली स्त्रीउं पुत्रवाली कहेवाय. अने तेथी पुत्रविनानी एवी बीजी स्त्रीना

मृत्युबाद, (जो तेणीने पुत्री पण न होय तो) तेणीना द्रव्यनो ते पुत्र मालिक थाय.

हवे दादानी मिल्कतमां पौत्रोने केवी रीते जाग मळे ते कहे छे.

पैतामहे च पौत्राणां, जागाः स्युः पितृसंख्यया
पितुर्द्रव्यस्य तेषां तु, संख्यया जागकल्पना ॥ १ ॥

अर्थ-दादानी मिल्कतमांथी पौत्रोने पिता जेटलोज जाग मळे, अने पिताना द्रव्यमांथी तेओने तुल्य जाग मळे.

हवे घणां जाइओमांथी जो एकज जाइने पुत्र होय, अने बीजा जाइओने पुत्रो न होय, तो तेओनी मिल्कतनो पण शुं तेज मालिक थाय ? ते कहे छे.

पुत्रस्त्वेकस्य संजातः, सोदरेषु च जूरिषु ॥
तदा तेनैव पुत्रेण, ते सर्वे पुत्रिणः स्मृताः ॥ १ ॥

अर्थ-घणा जाइओ मध्ये जो एक जाइने पुत्र थयो होय, तो ते एकज पुत्रथी, सर्व जाइओ पुत्रवाळा कहेवाय.

एवी रीते अहीं पुत्रगणाना गोत्रधना प्रतिपादनथी, सर्व धननो स्वामी ते एक पुत्रज थाय, एम कह्युं.

हवे वेंचण नहीं थयेला एवा कुटुंबीओथी आवता द्रव्यमां, सासुनी हयातिमां पुत्रनी स्त्रीना केवा अधिकार होय? ते कहे छे.

अविभक्ते क्रमायातं, श्वशुरस्वं न हि स्नुषा ॥
पुत्रे नित्ये व्ययीकर्तुं, सुतसंमतिमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ-वेंचण नहीं थयेला एवा कुटुंबकमथी आवेला सासराना द्रव्यने, पुत्रनी संमतिविना पोताना कार्यमां खरचवानो वहुने हक नथी.

विभक्ते तु व्ययं कुर्यात्, धर्मादिषु यथारुचि ॥
तत्पत्न्यपि मृते तस्य,कर्तुं शक्ता न तद्व्ययम्॥१॥

अर्थ—वेचण थयाबाद पुत्रनी ते वहुपण पोतानी इच्छामुजब ते द्रव्यने धर्मादिक कार्योमां वापरी शके, अने जर्तारना मृत्यु-बाद तेमांथी ते खरची शके नहीं.

निर्वाहमात्रं गृह्णीयात्, तद्व्ययस्य च मीपतः॥
प्राप्तोऽधिकारं सर्वत्र, द्रव्ये व्यवहृतो सुतः ॥ १ ॥

अर्थ—ते समये तेणीए ते द्रव्यना व्याजमांथी फक्त पोताना निर्वाह जेटलुं ग्रहण करवुं, अने बाकी सघला द्रव्यनो पुत्र मालिक थाय.

तथापीशो व्ययं कर्तुं, न ह्यंबानुमतिं विना ॥
सुते परासौ तत्पत्नी, भर्तुर्धनहरी स्मृता ॥ १ ॥

अर्थ—पुत्र मालिक थया छतां पण मातानी अनुमतिविना ते द्रव्यमांथी खरची शके नहीं, अने ते पुत्रना मृत्युबाद, तेनी स्त्री पोताना जरतारनुं द्रव्य मेळवी शके.

यदि सा शुजशीला स्त्री, श्वश्रूनिर्देशकारिणी ॥
कुटुंबपालने सक्ता, स्वधर्मनिरता सदा ॥ १ ॥
सानुकूला च सर्वेषां, भर्तुर्मंचकसेविका॥
श्वश्रूं याचेत पुत्रं हि, विनयानतमस्तका ॥ २ ॥
न हि सापि व्ययं कर्तुं, समर्था तद्धनस्य वै॥
निजेच्छया निजां श्वश्रूं,अनापृच्छ्य च कुत्रचित्॥३॥

अर्थ—वळी ते विधवा जोके उत्तम शीलवाळी, सासुनी आज्ञा प्रमाणे चालनारी, कुटुंबनुं पोषण करवामां तत्पर थएली, हमेशां पोताना धर्ममां लागेली, सर्व लोकोने अनुकूल, जर्तारनी शय्या

सेवनारी, विनयथी मस्तक नमावीने सासु तथा पुत्रपासे याचना करनारी होय, तो पण ते पतिना धननो सासुने पूछ्याविना पोतानी इच्छा मुजब व्यय करी शके नहीं. (वेचण करी लीधेला द्रव्यनो व्यय करवाने तो सर्वनो अधिकार छेज.)

हवे पूर्वे कहेला गुणोवाली जो विधवा न होय, तो ससराना द्रव्यमां सासुनी हयाति छतां तेणीनो केटलो अधिकार छे ? ते कहे छे.

श्वशुरस्यापिते द्रव्ये, श्वश्रूसत्वेऽथवा वधूः ॥
नाधिकारमवाप्नोति, भुक्तयाच्छादनमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ–सासुनी हयातिमां ससराना द्रव्यमां विधवा वहुने भोजन अने कपडां शिवाय बीजो अधिकार मले नहीं.

दत्तगृहादिकं सर्वं, कार्यं श्वश्रूमनोऽनुगम् ॥
करणीयं सदा वध्वा, श्वश्रूर्मातृसमा यतः ॥ १ ॥

अर्थ–वली तेवी विधवा वहुए सासुनी मरजी मुजब सोंपेलुं एवुं घरनुं सर्व कार्य हमेशां करवुं जोइए; केमके, सासुने मातातुल्य कहेली छे.

हवे कोइक माणस माता अने पत्नीनी हयातिमां अपुत्रीओ मरण पामे, तो दत्तक पुत्र करवानो (मासुवहुमांथी) कोने अधिकार छे ? ते कहे छे.

गृहीयाद्दत्तकं पुत्रं, पतिवद्विधवा वधूः
न शक्ता स्थापितुं तं च, श्वश्रूर्निजपतेः पदे ॥१॥

अर्थ–(तेवा संयोगमां) पतिनी पेठेज विधवा वहुए दत्तक पुत्र ग्रहण करवो, पण सासु तेवा दत्तक पुत्रने पोताना पतिनी जगोए स्थापी शके नहीं.

हवे सासुससराना स्वाधिनमां रहेतां, पोताना पतिना द्रव्यने विधवा वहु लेइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

स्वपतिनार्जितं द्रव्यं, श्वश्रूश्वसुरहस्तगम्
विधवाप्तुं न शक्ता त–त्स्वामिदत्ताधिपैव हि ॥१॥

अर्थ–सासुससराना स्वाधिनमां रहेतां एवां पोताना पतिए उपार्जन करेलां द्रव्यने, विधवा वहु मेलवी शके नहीं. तेणीना स्वाधिनमां तो तेणीना स्वामीए दीधेलुं द्रव्यज रही शके.

हवे कोइक माणसने पोतानी स्त्री अने पुत्र एवं साथे अलग-नाय थयो, अने तेथी तेओने जुदां कर्यां. अने त्यारबाद ते मा-णस मृत्यु पाम्यो. पाछलथी पुत्र पण संतान विना मृत्यु पाम्यो. तो ते माणसनी मिल्कत कोण ग्रहण करे ? ते कहे छे.

अपुत्रपुत्रमरणे, तद्द्रव्यं लाति तद्वधूः
तन्मृतौ तस्य द्रव्यस्य, श्वश्रूः स्यादधिकारिणी ।

अर्थ–जो पुत्र, संतानविना मृत्यु पामे, तो तेनुं द्रव्य तेनी (विधवा) वहु ग्रहण करे, अने ते वहुना मृत्युबाद ते द्रव्यनी सासु मालिक थाय.

हवे पोताना स्वामिए मेलवेलां धनने सासुनी हयातिमां, विधवा वहु खरची शके के नहीं ? ते कहेछे.

रमणोपार्जितं वस्तु, जंगमं स्थावरात्मकम्
देवयात्राप्रतिष्ठादि, धर्मकार्ये च सौहृदे ॥ २ ॥
श्वश्रूसत्त्वे व्ययीकर्तुं, शक्ता चेद्विनयान्विता
कुटुंबस्य प्रिया नारी, धर्मनीत्यान्यथा न हि ॥३॥

अर्थ–विधवा वहु जो विनयी तथा कुटुंबने वहाली अने प्रशं-सापात्र होय तो सासुनी हयातिमां पण, पोताना स्वामीए एक-

जैन करेली जंगम अथवा स्थावर मील्कत, देवयात्रा तथा प्रतिष्ठा आदिक धर्मकार्यमां अने पोतानी साहेलीओमां वापरी शके. अन्यथा न वापरी शके.

हवे कोइक पुत्रविनानी विधवा (पोतानी) पुत्रीपरना प्रेमथी दत्तक लीधाविना मृत्यु पामी, त्यारे तेणीना द्रव्यनी मालिक (तेणीनी) पुत्री थाय; अने त्यारबाद ते पुत्रीपण जो मृत्यु पामे, तो ते द्रव्यनो मालिक कोण थाय ? ते कहे छे.

> अनपत्ये मृते पत्यौ, सर्वस्य स्वामिनी वधूः
> सापि दत्तमनादाय, स्वपुत्रीप्रेमपाशतः ॥ १ ॥
> ज्येष्ठादिपुत्रदायादा--ऽभावे पंचत्वमागता
> चेत्तदा स्वामिनी पुत्री, भवेत्सर्वधनस्य च ॥ २॥
> तन्मृतौ तद्धवः स्वामी, तन्मृतौ तत्सुतादयः
> पितृपक्षीयलोकानां, न हि तत्राधिकारिता ॥३॥

अर्थ—जो स्वामी संतानविना मृत्यु पामे, तो तेनी सर्व मील्कतनी मालिक तेनी स्त्री थाय, अने ते पण जेठ आदिकना पुत्रना अभावथी, अने पुत्रीपरना प्रेमबंधनथी दत्तक लीधाविनाज जो मृत्यु पामे, तो सर्व धननी मालिक तेणीनी पुत्री थाय, अने ते पुत्रीना मृत्युबाद तेणीनो भर्तार मालिक थाय, अने ते भर्तारना मृत्युबाद तेना पुत्रादिको मालिक थाय. पण तेमां पितृपक्षना लोकोनो अधिकार न थाय.

हवे ते दायभागमां कोने अधिकार नथी ? ते कहे छे.

> जामाता भागिनेयश्च, श्वश्रूश्चैवं कथंचन
> नैवैतेऽत्र हि दायादाः, परगोत्रत्वभावतः ॥ १॥

अर्थ—जमाइ, भाणेज अने सासु, ए लोको दायभागमां कदीपण गणाय नहीं, केमके, तेओ परगोत्री छे.

साधारणं च यद्रूव्यं, तद्भ्राता कोऽपि गोपयेत्॥
भागयोग्यः स नास्त्येव, प्रत्युतो राजदंडभाक् ॥१॥

अर्थ-मजमुनुं द्रव्य जो कोइ भाइ छुपावी राखे, तो तेने भाग नहीं मळतां, उलटो ते राजदंडने योग्य थाय.

सप्तव्यसनसंसक्ताः, सोदरा भागभागिनः
न भवंति च ते दंड्या, धर्मभ्रंशेन सज्जनैः ॥ १॥

अर्थ-जे भाइउं साते व्यसनोमां आसक्त थया होय, तेउंने भागाभाग मळे नहीं, अने तेउं धर्मथी भ्रष्ट थएला कहेवाय. माटे सज्जनोए तेउंने दंडवा.

हवे कोइक पुत्रविनानी स्त्रीए दत्तक लेइने तेने पोतानो अधिकार सोंप्यो, अने ते दत्तक जो परण्याविनाज मृत्युपामे, तो तेनी जगोए बीजो पुत्र स्थापवानो ते विधवाने अधिकार छे के नहीं ? ते कहे छे.

गृहीत्वा दत्तकं पुत्रं, स्वाधिकारं प्रदाय च ॥
तस्मादात्मीयवित्तेषु, स्थिता स्वं धर्मकर्मणि ॥ १ ॥
कालचक्रेण सोऽनूढ-श्चेन्मृतो दत्तकस्तदा ॥
न शक्ता स्थापितुं सा हि, तत्पदे चान्यदत्तकम् ॥२॥

अर्थ- दत्तक पुत्र लेइने, अने तेने पोताना द्रव्यनो अधिकार सोंपीने, कोइ (विधवा) धर्मकार्यमां जोडाएली. एटलामां ते दत्तक दैवयोगे परण्याविनाज जो मृत्युपामे, तो ते विधवा स्त्री ते दत्तकनी जगोए बीजा दत्तक स्थापी शके नहीं.

जामातृभागिनेयेभ्यः सुतायै ज्ञातिभोजने ॥
अन्यस्मिन् धर्मकार्ये वा, दद्यात्स्वं स्वं यथारुचि॥१॥

अर्थ- (तेवा प्रसंगमां) तेणीए पोतानुं द्रव्य जमाइ, भाणेज

अथवा पुत्रीने आपवुं, ज्ञातिभोजनमां खरचवुं, अथवा पोतानी इच्छामुजब बीजां धर्मकार्योमां खरचवुं.

युक्तं स्थापयितुं पुत्रं, स्वीयभर्तृपदे तया ॥
कुमारस्य पदे नैव, स्थापनाज्ञा जिनागमे ॥ १ ॥

अर्थ- केमके, तेणी पोताना भर्तारनी जगोए (दत्तक) पुत्रने स्थापी शके, पण कुमारनी जगोए स्थापवामाटे जिनागममां आज्ञा नथी.

पुत्रविनानी जुदी अथवा साथे रहेली विधवा खरच, दान, के वेचाण करी शके के नहीं ? ते कहे छे.

विधवा हि विभक्ता चे-द्व्ययं कुर्याद्यथेच्छया ॥
प्रतिषेद्धा न कोऽप्यत्र, दायादश्च कथंचन ॥ १ ॥

अर्थ- तेवी विधवा स्त्री जो जुदी होय तो ते पोतानी इच्छाप्रमाणे व्यय करी शके, तेमां तेणीने कोइ पण संबंधि अटकावी शके नहीं.

अविभक्ता सुताभावे, कार्ये त्वावश्यकेऽपि या ॥
कर्तुं शक्ता स्ववित्तस्य, दानमाधिं च विक्रयम् ॥ १ ॥

अर्थ- जुदी नहीं थएली एवी ते विधवा, पुत्र न होते छते, जरुरना कार्यप्रसंगे पोतानी मिल्कतनुं दान, गिरो मुकवानुं, तथा वेचाण पण करी शके. बृहदर्हन्नीतिमां पण कयुं छे के,

पत्युर्मरणे तत्सत्का दपरस्मादि या जयणेनमृणं पुत्रस्य च सत्का वे तदस्य अशुद्धेपि विभाविद्वया ॥१॥ जइ गा होइ गुणीसा गुण· दानस्स रायकज्जाइसु विक्कयदाणादियं पुब्बा न हु कोवि पडिसेहो २

हवे कोइ माणस वचनपूर्वक पोतानी कन्याने आपीने, पाछ·

सथी खोजने वश थइ जो बीजाने आपे, तो तेनो शुं इलाज करवो? ते कहे छे.

वाचा कन्यां प्रदत्वा चेत्पुनर्लोभेन तां हरेत् ॥
स दंड्यो भूभृता दद्या-द्वरस्य तद्धनं व्यये ॥ १ ॥

अर्थ– जो कोइ माणस वचनथी कन्यानुं दान देइने, ते कन्याने पाछी हरीले, तो राजाए तेनो दंड करवो, अने ते दंडतरीके आवेलुं द्रव्य ते (पेहेला वरने) खरचपेटे आपवुं.

कन्यामृतौ व्ययं शोध्यं, देयं पश्चाच्च तद्धनम् ॥
मातामहादिभिर्दत्तं, तद्गृह्णंति सहोदराः ॥ १ ॥

अर्थ– कन्याना मृत्युबाद खरच वालीने तेनुं द्रव्य पाछुं आपवुं; अने नाना आदिके दीधेलुं द्रव्य भाइओए लेवुं.

हवे भाइओए भाइनी स्त्रीने केवी मानवी? ते कहे छे.

भ्रातृवद्विधवा मान्या, भ्रातृजाया सुबंधुभिः ॥
तदिच्छया सुतस्तस्य, स्थाप्यो भ्रातृपदे च तैः ॥ १ ॥

अर्थ– उत्तम भाइओए, विधवा एवी (पोताना) भाइनी पत्नीने भाइनीपेठेज मानवी, अने तेणीनी इच्छामुजब तेओए (पोताना) भाइनी जगोए तेना पुत्रने स्थापवो.

हवे जेना भाग न पडी शके, तेवा धननुं वर्णन कहे छे.

यत्किंचिद्वस्तुजातं हि, स्त्रियामाभूषणादिकम् ॥
यस्मै दत्तं च पितृभ्यां, तत्तस्यैव सदा भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ– स्त्रीना आभूषण आदिक जे कंइ द्रव्य मातपिताए जेने आप्युं होय, ते तेनुंज (एटले तेनी मालेकीनुंज) हमेशां थाय छे.

अविनाश्य पितुर्द्रव्यं, भ्रातृणामसहायतः ॥
हृतं कुलागतं द्रव्यं, विद्या नैव यदुद्धृतम् ॥ १ ॥

[illegible] समानीतं, [illegible] विद्यानन्दोन च ॥
[illegible] विनादिनाहे वा, तथा [illegible] ॥ २ ॥
[illegible] येन [illegible] ॥
[illegible] न [illegible] कोऽपि च [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] नथी, [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] नथी.

[illegible] ॥
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ २ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्थ– विवाद समये मातपिताए जे ब्राह्मण अने अग्निनी शाखे (कन्याने) आभूषण आदिक आप्यां होय, ते " अध्यग्निकृत स्त्रीधन " कहेवाय.

पुनः पितृगृहादध्या-नीतं यद्भूषणादिकम् ॥
बंधुभ्रातृसमक्षं स्या-दध्याहृवनिकं च तत् ॥ १ ॥

अर्थ– वळी फरीने पीयरथी, ते, जे कंइ आभूषण आदिक बंधुओनी साक्षिए लावे ते " अध्याहृवनिक स्त्रीधन " कहेवाय.

प्रीत्या स्नुषायै यद्दत्तं,श्वश्र्वा च श्वशुरेण च ॥
मुखेक्षणांघ्रिनमने, तद्धनं प्रीतिजं भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ– मुखजोती वेळाए अने पगे पडती वेळाए सासु अने ससराए प्रीतिथी वहुने जे द्रव्य आप्युं होय, ते " प्रीतिज स्त्रीधन " कहेवाय.

पुनर्भ्रातुः सकाशाद्य-त्प्राप्तं पितृगृहात्तया ॥
ऊढया स्वर्णरत्नादि, तत्स्या दौदयिकं धनम् ॥ १ ॥

अर्थ– वळी परण्याबाद फरीने पियरथी भाइपासेथी जे स्वर्ण अथवा रत्नादिक मळे, ते " औदयिक स्त्रीधन " कहेवाय.

परिक्रमणकाले य-द्दत्तं रत्नांशुकादिकम् ॥
जायापतिकुलस्त्रीभि-स्तदन्वाधेयमुच्यते ॥ १ ॥

अर्थ–वळी परिक्रमण समये, कोइ जोडलां अथवा कुळस्त्रीए जे रत्न तथा वस्त्रादिक आप्यां होय, ते " अन्वाधेय स्त्रीधन " कहेवाय.

चेत्तत्स्त्रीधनमादातुं, न शक्तः सर्वकोऽप्यपि ॥
भागानर्हं यतः प्रोक्तं, सर्वनीतिविशारदैः ॥ १ ॥

अर्थ– एवी रीते उपर वर्णवेलां स्त्रीधनने लेवाने कोइपण

समर्थ नथी, केमके, सर्व नीतिशास्त्रोना पंडितोए ते धनने "भागानर्ह" कहेलुं छे.

धारणार्थमलंकारो, भर्त्रा दत्तो न केनचित् ॥
ग्राह्यः पतिमृतौ सोऽपि, व्रजेत्स्त्रीधनतां यतः ॥ १ ॥

अर्थ– कोइक भर्तारे (स्त्रीने) पेहेरवामाटे जे आभूषण आप्युं न होय, ते आभूषण पण भर्तारना मृत्युबाद स्त्रीधनतरीके लेखाय.

हवे एवी रीतना स्त्रीधनने पण भर्तार कोइ समये लेइ शके के नहीं ते कहे छे.

तेवी रीतना स्त्रीधनने, भयंकर व्याधि वखते, दुकाळमां अथवा मोटी आपदासमये भर्तार लेइशके, अने पछी धन प्राप्त थया बाद तेणीने ते "स्त्रीधन" तेणे पाछुं आपवुं.

उपर वर्णवेला दायभागना संबंधमां देशाचारने पण बलवान समजवो.

हवे उपसंहार कहे छे.

इत्येवं वर्णितस्तत्र, दायभागः समासतः ॥
यथाश्रुतं विशेषश्च, ज्ञेयोऽर्हन्नीतिशास्त्रतः ॥ १ ॥

अर्थ– एवी रीते अहीं सामान्यपणाथी आगमने अनुसारे दायभाग वर्णव्यो. ते संबंधी विशेष हकीकत "बृहदर्हन्नीति" नामना शास्त्रथी जाणी लेवी.

॥ इति दायभागप्रकरणं समाप्तम् ॥

हवे सीमावादनुं प्रकरण कहे छे.

योगींद्रं सच्चिदानंदं, स्वभावध्वस्तकल्मषम् ॥
प्रणिपत्य पुष्पदंतं, सीमानिर्णय उच्यते ॥ १ ॥

अर्थ– योगीश्वरना स्वामी, तथा सच्चिदानंदरूप, अने स्वज्ञावथी नष्ट करेल छे (कर्मोरुपी) मलीनता जेमणे, एवा श्रीपुष्पदंत प्रजुने नमस्कार करीने हवे "सीमानिर्णय" कहेवाय छे.

पूर्वना प्रकरणमां दायज्ञागनुं स्वरूप कह्युं. हवे ते दायज्ञाग थयाबाद ज्ञाइउंपणे सीमानो विवाद थाय, माटे तेनो निर्णय कहेछे.

"सीमा" एटले ज्ञूमिनी मर्यादा, ते मर्यादा गाम, क्षेत्र, घर, तथा बगीचा आदिकनी अनेक प्रकारनी होय छे.

वली ते मर्यादाना प्रत्येक पांच ज्ञेदो छे. विध्विजा ॥ १ ॥ मिश्रिजा ॥ २ ॥ राजज्ञता ॥ ३ ॥ ज्ञामिनी ॥ ४ ॥ अने कासिका ॥ ५ ॥ ए पांच प्रकारनी मर्यादा होय छे.

तेउंमां "विध्विजा" एटले नदी, तथा सरोवर आदिक जलाशयोना चिन्होवाली मर्यादा.

"मिश्रिजा" एटले वृक्ष आदिकना चिन्होवाली मर्यादा.

"राजज्ञता" एटले वादि प्रतिवादिए साथे मलीने पोते करेली मर्यादा.

"ज्ञामिनी" एटले माटीना अथवा पत्थरोना ढगलाथी सूचित थएली मर्यादा.

"कासिका" एटले कंइपण निशानीनी गेरहाजरीमां राजाए पोतानी बुद्धिथी ठरावेली मर्यादा.

एवी रीते पांच प्रकारनी "सीमा" कहेली छे.

हवे ते सीमा संबंधि वाद नीचे प्रमाणे ७ प्रकारनो होय छे.

विवादोऽत्र ज्ञवेत् षोढा, नास्ति चास्त्युज्ञयं च वै ॥
न्यूनताधिकता चैव, ज्ञुक्तिराज्ञोगतस्तथा ॥ १ ॥

अर्थ– सीमानो विवाद ७ प्रकारनो छे. अस्तिवाद ॥ १ ॥ नास्तिवाद ॥ २ ॥ उज्ञयवाद ॥ ३ ॥ न्यूनतावाद ॥ ४ ॥ अ-

धिकतावाद ॥ ५ ॥ अने आजोगजुक्तिवाद ॥ ६॥ ए रीते त्र प्रकारनो सीमावाद होय ले.

वादी एम कहे के, आ जूमि मारी ले, त्यारे प्रतिवादी कहे के, शुं आ जूमि तेना वापनी पण हती? एवी रीतना सीमावादने " अस्तिवाद " कहे ले. ॥ १ ॥

वादी एम कहे के, आ जूमिमां मारो पांच गुंठा जाग ले, त्यारे प्रतिवादी कहे के, तेनो तेनी अंदर एक जाग पण नथी. एवी रीतना सीमावादने " नास्तिवाद " कहे ले. ॥ २ ॥

वादी एम कहे के, आ सघलुं क्षेत्र मारुं ले, त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, एम नहीं, अरधुं क्षेत्र तेनुं ले. एवी रीतना सीमाना वादने " जजयवाद " कहे ले. ॥ ३ ॥

वादी एम कहे के, आ क्षेत्र घणा वर्षथी आठ रज्जु जेटला परिमाणवालुं मारी मालेकीनुं ले. त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, आठ रज्जुना परिमाणवालुं नथी, पण पांच रज्जुना परिमाणवालुं ले. एवी रीतना सीमाना वादने " न्यूनतावाद कहे ले. ॥ ४ ॥

तेवाज प्रसंगमां कोइ कहेशे के, तेथी अधिक ले. तेने "अधिकसंवाद " कहे ले. ॥ ५ ॥

वादी एम कहे के, आ जूमि मारी ले, अने प्राचीनकालथी मारा जोगवटानी ले, तेथी हजुपण हुंज जोगवुं छुं. त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, तेनो जोगवटो प्राचीनकालथी नथी, एवी रीतना सीमाना वादने " आजोगजुक्तिवाद " कहे ले. ॥ ६ ॥

हवे एवी रीतना जूमिवाद समये वादि अने प्रतिवादीनी समक्ष तेनो निर्णय करवो. तेमाटे निर्मल समये अधिकारी पुरुषोए विवादस्थाननी जूमी जोवी. तथा त्यां नजदीकमां वसता साक्षिउने वोलावी ते संबंधि पूलवुं. अने तेउना वचनथी निर्णय करीने त्यां निशानी करवी, के जेथी फरीने तेवो क्लेश न थाय. ते कहे ले.

माकंदपिचुमंदैश्च, किंशुकाश्वत्थवेणुभिः ॥
न्यग्रोधशाल्मलीशाल-शमीतालैश्च शाखिभिः ॥ २ ॥
राजाधिकारिणा कार्यं, तत्सीमास्थलमंकितम् ॥
विपर्ययो यथा नृणां, सीमाज्ञाने न संभवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ–पूलथी, तलावथी, देवमंदिरथी, पत्थरोथी, नाना सरोवरथी, वावथी, कुवाथी, पाणीना झराथी, आंबाथी, पिचुमंदथी, केसुडांना वृक्षथी, पीपलाना वृक्षथी, वांसनी झाडीथी, वडना वृक्षथी, शाल्मलीना वृक्षथी, शालना वृक्षथी, खीजडाना वृक्षथी, तथा ताडना वृक्षथी, एटलामानी कोइपण वस्तुथी राज्याधिकारी पुरुषोए, ते सीमाना स्थलपर एवी निशानी करवी के, जेथी ते सीमानुं ज्ञान थवामां लोकोने संशय पडे नहीं.

सीमासंधिषु गर्तासु, कारीशांगारशर्कराः ॥
वालुकाश्च नृपः क्षिप्त्वा, गुप्तचिह्नानि कारयेत् ॥१॥

अर्थ–वळी सीमाडाना छेडापर राजाए खाडो खोदावी तेमां छाणना अंगारा, नाना पत्थरो, तथा वेलु नखावीने त्यां गुप्त निशानी करवी.

हवे जे जमिनी निशानी गुप्त थइ गइ होय, तेवी जमिना निर्णय माटे उपाय कहे छे.

नद्यादिध्वस्तचिन्हेषु, भूप्रदेशेषु पारतः ॥
दिशाप्रमाणभोगेभ्यः, कुर्या भूपो विनिश्चयम् ॥१॥

अर्थ–नदी आदिकनी रेलथी ज्यां निशानिओ नाबुद थइ होय, तेवां जमिनप्रदेशोमां, निशानस्थानथी, दिशा, प्रमाण तथा भोगथी राजाए सीमानो निश्चय करवो. (जेमके, आ माणसनुं क्षेत्र आ स्थलथी अमुक दिशामां आटलुं दूर छे, एवी रीतना

अनुमानथी तथा ते माणसना भोगवटाथी सीमानो निश्चय करवो)

हवे आवी रीतना सीमाना वादमां केवी रीतना साक्षिओने योग्य गणवा ? ते कहे छे.

प्रमाणमागमं चैव, कालं भोगं च लक्षणम् ॥
भूमिभागं तथा नाम, जानीयुस्तेऽत्र साक्षिणः ॥१॥

अर्थ-जे माणसो प्रमाणने, शास्त्रने,कालने, भोगने, लक्षणने, भूमिभागने तथा नामने जाणता होय,तेवा साक्षिओ उपयोगी छे.

साक्षिणः सीम्नि पृष्टव्या, अर्थिमत्यर्थिनोः पुरः ॥
पार्श्वगग्रामवृद्धानां, समक्षं धर्मपूर्वकम् ॥ २ ॥

अर्थ-सीमाडासंबंधि मुकरदमामां वादी प्रतिवादिनी समक्ष तथा पासेना गामना वृद्ध माणसोने पण पासे राखीने, धर्मना सोगनपूर्वक साक्षिओनी जुबानी लेवी.

समस्तास्ते हि पृष्टाश्च, वदन्त्येकां गिरं यदि ॥
तर्हि सीमां निबध्नीया-त्तन्नामसहितां नृपः ॥ ३ ॥

अर्थ-ते सघला साक्षिओने पूछवाथी तेओ सर्वे जो एकज रीतनी जुबानी आपे, तो पछी राजाए, तेना नामसहित त्यां सीमा बांधवी.

हवे एवी रीतनी साक्षिमां जे साक्षी जुठुं बोले तेने माटे-नो दंड कहे छे.

चेत्साक्षिणोनृतं ब्रूयुः, सीमाकृत्ये कथंचन ॥
सामंताः शतदंड्याः स्युः, शेषाः शक्त्यनुसारतः ४

अर्थ-जो साक्षिओ कदाच सीमाने माटे जुठुं बोले, तो तेओ-माना सामंतोने एकसो रुपीआनो दंड करवो, अने बाकीनाओने तेओनी शक्तिमुजब दंड करवो.

जूठी साक्षी भरनारा दरेकने दंड करवो; आ दंड अज्ञानताथी जे जूठी साक्षी भरे तेने माटेनो छे, पण जे जाणी जोइने लोभादिकथी जूठी साक्षी भरे, तेने तो तेथी पण विशेष दंड करवो.

हवे जे जगोए चिन्होने जाणनारा न होय, त्यां शुं करवुं ? ते कहे छे.

चिन्हज्ञाता न कोऽप्यस्ति, यत्र तत्र महीधनः ॥
आरामदेवतास्थान-निपानोद्यानवेश्मभिः ॥ १ ॥
वर्षाजलप्रवाहैश्च, सीमां निर्णीय चाञ्जितः ॥
कुर्याच्चिन्हं यथा न स्या-द्द्वयोर्हि कलहः पुनः ॥२॥

अर्थ—ज्यां कोइपण चिन्होने जाणनारो न होय, त्यां राजाए बगीचो, देवस्थान, नवाण, वाटिका, घर, तथा वरसादना पाणीना प्रवाहथी चारे बाजुथी सीमानो निर्णय करीने, करीने जेम ते वादि अने प्रतिवादिने कलह न थाय, तेवी रीते चिन्ह करवुं.

जयपत्रं ततो देयं, सीमासत्यार्थवादिने ॥
भूमिप्रमाणवित्तेन, दंड्योऽन्यो भवति ध्रुवम् ॥१॥

अर्थ—साची सत्य सीमा बोलनारने (राजाए) जयपत्र देवुं, अने तेना प्रतिवादिने ते जमीननी किंमत बरोबर दंड करवो.

नाशयेद्भूमिलोभेन, सीमाचिन्हानि यो नरः ॥
दंडनीयः स भूभर्त्रा, रौप्यैः पंचशतैः सदा ॥ १ ॥

अर्थ—जे माणस भूमिना लोभथी सीमाना चिन्होनो नाश करे, तेने राजाए पांचसो रुपीआ दंड करवो.

अज्ञानेन प्रमादेन, यो नाशयति तानि च ॥
द्विशतेन स दंड्यः स्यात्, भूभुजा न्यायवेदिना ॥१॥

अर्थ—अज्ञानथी अने प्रमादथी जे माणस ते चिन्होनो नाश

करे, तेनो न्याय जाणनार राजाए घणो (रुपीआनो) दंड क[रवो.]

हवे प्रसंगथी पूल तथा कुवा आदिकनो विषय कहे छे.

सेतुः कूपश्च क्षेत्रेऽपि, न निषेध्यो हि केनचित् ॥
स्वल्पबाधाकरास्तेऽपि, बहुलोकोपकारकाः ॥ १ ॥

अर्थ-पूल अने कूवो, जो के क्षेत्रनी अंदर होय, तो पण
[तेने] वापरवानो क्षेत्रना मालिके (कोइने) निषेध करवो नहीं,
[का]रण के, तेम करवाथी तेने थोडी हरकत तो करे छे, तो पण
[घ]णा लोकोने ते उपकार करनारा छे.

यः सेतुः पूर्वनिष्पन्नः, संस्कारार्हो भवेद्यदा ॥
तदा तत्स्वामिनं पृष्ट्वा, तदभावे च भूभुजम् ॥१॥
तं संस्करोति यः कोऽपि, तर्हि तत्फलभाग् भवेत् ॥
अन्यथा तत्फलं स्वामी, गृह्णीयाद्वा महीपतिः ॥२॥

अर्थ-पूर्वे बांधेलो पूल जो कोइक वखत ज्यारे समराववा योग्य थाय, त्यारे कोइक माणस जो तेना मालिकने अथवा तेना कुटुंबीने, अथवा राजाने पूछीने समरावे, तो ते माणस तेना फलनो भागी थाय, नहींतर तेनुं फल स्वामी अथवा राजा ग्रहण करे.

(आ कलम पण परना देशमां आवेला पूलने लागु छे.)

अंगीकृतेऽपि देशे नो, कूपं कुर्यान्न कारयेत् ॥
तेनापि देयं तन्मूल्यं, फलं स्याद्यदा न हि ॥ १ ॥

अर्थ-पोते लीधेला एवा पण देशमां माणस कोइए, जो न करे, अथवा न करावे, तो पण तेणे तेनुं मूल्य आपवुं जोइए, कारण के तेनुं फल हाथ आवतां न थाय.

इति संक्षेपतः प्रोक्तः, सीमावादस्य निर्णयः ॥
ज्ञेयो विशेषो धीमद्भि, र्महार्हन्नीतिशास्त्रतः ॥ १ ॥

अर्थ–एवी रीते संक्षेपमां सीमावादनो निर्णय कह्यो; विशेष प्रकारे तेनुं वर्णन बुद्धिवानोए वृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति सीमावादप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ हवे वेत्तनादाननुं स्वरूप कहे छे. ॥

नत्वा श्रीशीतलं देवं, संसारांबुधितारकम् ॥
वेतनादानस्वरूपं, वर्ण्यतेऽत्र समासतः ॥ १ ॥

अर्थ–संसाररूपी समुद्रथी तारनारा एवा श्री शीतलनाथ प्रभुने नमस्कार करीने हवे टुंकामां वेत्तनादाननुं स्वरूप वर्णवाय छे.

पाछलना प्रकरणमां सीमावाद कह्यो, हवे तेमां चाकरोनी पण जरुर पडे छे, तेथी हवे तेउनुं स्वरूप कहे छे. (तेमां पण पेहेलां ते चाकरोना भेदो कहे छे.)

सेवकाः पंचधा प्रोक्ताः, शिष्यांतेवासिभृत्यकाः ॥
अधिकर्मकरास्तुर्याः, स्मृता दासास्तु पंचमाः ॥ १ ॥

अर्थ–शिष्य, अंतेवासि, भृत्य, अधिकर्मकरो, अने दासो एम पांच प्रकारना चाकरो होय छे.

चत्वारः प्रथमे तत्र, शुभकर्मकराः स्मृताः ॥
पंचमो दासको ह्यत्र, सर्वकर्मकरो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ–तेउमां पेहेला चार शुभ कर्मोने करनारा छे, अने पंचमो दास सर्व कार्योने करनारो होय.

हवे शिष्य एटले विद्याध्ययन करनारो, अंतेवासी एटले शिल्पविद्यानो अर्थी, भाडुं लेइ काम करनारो ते भृत्य कहेवाय

सघला चाकरोनो जे उपरी ते अधिकर्मकर (मुकादम) कहेवाय, तथा घरने आंगणे रहेला कचरा, विष्ठा, मूत्र आदिकने साफ करनार, तथा शेठना गुह्य अंगोनुं प्रक्षालन करनार ते " दास " कहेवाय छे.

भृत्यस्तु त्रिविधस्तत्रा-युधिकः प्रोक्त उत्तमः ॥
मध्यमः कृषिकश्चैवा-धमो भारस्य वाहकः ॥ १ ॥

अर्थ– तेओमां भृत्य त्रण प्रकारनो होय छे; आयुधिक भृत्यने उत्तम जाणवो, कृषिकने मध्यम जाणवो तथा भारउपाडनारने अधम जाणवो.

दासाः पंचदश ख्याताः, गृहजः क्रीत आधितः ॥
लब्धो दायागतश्चैव, दुर्भिक्षे पोषितस्तथा ॥ १ ॥
युद्धे पणे च विजित ऋणग्राग् ऋणमोचितः॥
रक्षितो भुक्तिदानेन, प्रव्रज्या प्रच्युतस्तथा ॥ २ ॥
स्थितो यः स्वयमागत्य, पुत्र्योद्वाहप्रलोभतः ॥
अमातृपितृको यस्तु, विक्रेता स्वयमात्मनः ॥ ३ ॥
॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥

अर्थ– दासो पंदर प्रकारना प्रसिद्ध छे. तेओमां जे घरनी दासीने पेटे जन्मेलो होय ते " गृहज " ॥ १ ॥ कहेवाय छे. मूल्य आपी जेने वेचातो लीधो होय ते " क्रीत " ॥ २ ॥ कहेवाय छे. शेठे कोइने धन धीरीने ते पेटे थापणतरीके जेने राख्यो होय ते " आधित " ॥ ३ ॥ कहेवाय छे. मार्गमां जे आधारविनानो, अथवा जे कोइ मार्गथी भ्रष्ट थयो होय, अने एवी रीते जे मली आव्यो होय ते " लब्ध " ॥ ४ ॥ कहेवाय छे. विवाह प्रसंगे दायजामां आवेलो ते " दायागत " ॥ ५ ॥ कहेवाय छे. दुकालमां जेनुं पोषण करेलुं होय तेवो दास " दुर्भि-

पोषित " ॥ ६ ॥ कहेवाय छे. संग्राममां जे जीताएलो होय तेवो दास " युद्धप्राप्त ॥ ७ ॥ कहेवाय छे. जुगारमां जे जीताएलो होय तेवो दास " द्यूतजित " ॥ ८ ॥ कहेवाय छे. करज बूडे त्यांसुधि जे दासत्वपणाने प्राप्त थयो होय तेवो दास " ऋण-जातृ " ॥ ९ ॥ कहेवाय छे. करजने बदलेज जे दास थयो होय ते " ऋणमोचित " ॥ १० ॥ कहेवाय छे. भोजनना बंधनथी जे दास थयो होय ते " रक्षित " ॥ ११ ॥ कहेवाय छे. दीक्षा छोडी दइने जे दास थयो होय ते " प्रवृज्याप्रच्युत " ॥ १२ ॥ कहेवाय छे. पोतानी मेळे जे दासतरीके आवीने रहेलो होय ते " स्वयमागत " ॥ १३ ॥ कहेवाय छे. शेठनी नोकरीने परण-वानी लालचथी जे दासतरीके रह्यो होय ते " परीणयभोजन भिन्नः " ॥ १४ ॥ कहेवाय छे. मातपिता मृत्यु पामवाथी जे पोतानी मेळेज दासपणाने प्राप्त थयो होय ते " आत्मन-र्पिता " कहेवाय छे.

हवे राजाए कोने दासपणामांथी छोडाववा ? ते कहे छे.

चौरैर्हृत्वा च विक्रीतो, बलाद्दासीकृतश्च यः ॥
दासत्वं तस्य नो युक्तं, तद्दासं मोचयेन्नृपः ॥ १ ॥

अर्थ–चोरोए चोरी करीने जे माणसने वेच्यो होय, अथवा बलात्कारे जेने दासरूप कर्यो होय, तेवा माणसने दासपणुं नथी, माटे राजाए तेवा माणसने तेना दासपणाथी मुक्त करवो.

स्वामिनं मोचयेद्यस्तु, प्राणसंशयसंकटात् ॥
मुच्यते दासभावेन, पुत्रभागभाक् च सः ॥ २ ॥

अर्थ– जे चाकर पोताना शेठने जीवितसंशयथी बचावे, ते चाकरने दासपणाथी मुक्त करवो, तथा तेने पुत्रनी पेठे हिस्सो आपवो.

(उपरकहेलो विधि सर्व साधारण दासोने माटे जाणवो.)

हवे तेमां विशेषपणुं बतावे छे.

द्रव्य आपी तेना धाराणकीके राखेला दासो करज नरी आप्यावाद मुक्त थाय छे, तेम अकाले पोषण करवाथी थएला दासो पण मुक्त थइ शके छे. भोजनमाटे जे माणस दास थयो होय, ते तेना शेठने भोजनखरच जेटलुं द्रव्य आपी मुक्त थइ शके छे, तेम युद्धमां, शरतबाजीमां, अने पोतानी मेळे मळेलो दास पण तेवीज रीते मुक्त थइ शके छे. जे माणसे दीक्षा लेइने ते दीक्षानो त्याग कर्यो होय, ते माणसने राजाए बलात्कारे पण दास करवो.

हवे दासने तेना दासपणामांथी छोडाववानो विधि कहे छे.

जे माणस जे वखते स्वामिनी कृपा मेळवीने दासपणाथी विमुक्त थाय छे, ते वखते शेठे एक जलथी भरेला घडाने फोडवो, तथा ते दासने छत्रनीचे राखीने तेना मस्तकनुं मार्जन करवुं, पछी तेना मस्तकपर पुष्पो तथा अक्षतोने त्रणवार शेठे नाखवा, अने तेने कहेवुं के, आजथी तुं दासपणाथी विमुक्त थयो छुं, तथा स्वतंत्र थयो छुं. अने हवे तारे हमेशां शुद्ध मनना अभिप्रायथी वर्तवुं.

हवे तेवा चाकरने चाकरीबदल केवी रीते द्रव्य आपवुं ? ते कहे छे.

भृत्याय स्वामिना देयं, यथाकृत्यं च वेतनम् ॥
आदौ मध्येऽवसाने वा, यथा यद्यस्य निश्चतम् ॥१॥

अर्थ– शेठे चाकरने तेनी चाकरी प्रमाणे द्रव्य आपवुं. तेमां तेने कार्य सोंपति वेळाए जेवी रीते बंदोबस्त करेलो होय तेवी रीते कार्य पेहेलां, मध्यमां, तथा छेवटे तेने द्रव्य आपवुं.

अनिश्चिते वेतने तु, कार्यायाद्दशमांशकम् ॥
दापयेन्नृपतिस्तस्मै, स ह्युपस्काररक्षकः ॥ १ ॥

अर्थ- चाकरीमाटेना द्रव्यनो जो ठराव करेलो न होय तो राजाए शेठना कार्यना नफामांथी तेने दशमो हिस्सो अपाववो, केमके ते चाकर शेठना मालनुं रक्षण करनारो होय छे. तेने माटे बृहदर्हन्नीतिमांपण कह्युं छे के,

किमिवालिज्ञासबूहिं जं लाहो हवइ तस्स दसमंसं दावेइ निवो निवं अलिखियवेअणे तस्स ॥ १ ॥

व्यापारे स्वामिवित्तस्य, हानिवृद्धिकरः स्वयम् ॥
योऽस्ति तस्मै भृतिर्देया-स्स्वामिवांछानुसारतः ॥ १ ॥

अर्थ- व्यापारमां शेठना द्रव्यनी जे चाकर हानि अथवा वृद्धि करनारो होय, ते चाकरने तेना शेठनी इच्छा प्रमाणे शेठे चाकरीबदल द्रव्य आपवुं जोइए.

(आ कलम ते चाकरनी चाकरीबदल द्रव्यनो ठराव न करेलो होय तेने माटे छे. अने तेना प्रयोगमां शेठने जो घणो लाभ थाय तो शेठे तेने वधारे द्रव्य आपवुं, थोडो लाभ थाय तो थोडुं द्रव्य आपवुं.)

अनेककृतकार्ये तु, दद्याद्भृत्याय वेतनम् ॥
यथाकर्म तथा साध्यं, देयं स्वामि यथाश्रुतम् ॥ १ ॥

अर्थ- कराराथी घणा अनेक कार्यामां चाकरने तेना कार्यना प्रमाणमां चाकरीबदल द्रव्य आपवुं, अने ते काम पूर्णं थयाबाद तेने ठरावमुजब आपवुं.

हवे चाकरमाटेनो दंड कहे छे.

संप्राप्ते वेतने भृत्यः, स्वार्हं कर्म करोति न ॥
द्विगुणेन च सो दंड्यो, स्वामिने भृतिसंमितं च ॥ १ ॥

अर्थ- चाकरीनुं द्रव्य लेइनेपण जे चाकर पोतानुं काम करतो नथी, तेने बमणो दंड करवो, अने चाकरीनुं द्रव्य अगाउथी लीधाविना पण जे काम करतो नथी, तेने तेनी चाकरीना मूल्य जेटलो दंड करवो.

अनसाध्ये कार्ये तु, देयं भृत्याय वेतनम् ॥
यथाकार्यं तथासिद्धे, सिद्धे देयं यथाश्रुतम् ॥ १ ॥

अर्थ- अनसाध्य कार्य प्रसंगे चाकरने कार्यना प्रमाणमां द्रव्य आपवुं, अने कार्य सिद्ध थयेथी शरत प्रमाणे द्रव्य आपवुं.

भांडं तु नाशयेत्किंचि-त्प्रमादाद्भारवाहकः ॥
तन्मूल्यप्रतिमं द्रव्यं, दापयेत्स्वामिनं नृपः ॥ १ ॥

अर्थ- भार उपाडनार मजुर प्रमादथी जो कांइ वासणनो नाश करे, तो ते वासणना प्रमाण जेटली किमतनुं द्रव्य राजाए ते मजुरनीपासेथी ते वासणना मालिकने अपाववुं.

प्रतिवचःपरो भृत्यो, नित्यं विघ्नकरो भवेत् ॥
भृतिद्विगुणो दंड्यः स, दोषो हि बलवत्तरः ॥ १ ॥

अर्थ- जे चाकर हमेशां सामुं बोले छे, ते हमेशां विघ्नकरनारो थाय छे, माटे तेनो तेनी चाकरीना द्रव्यथी बमणो दंड करवो, केमके, तेनो ते दोष घणोज मोटो छे.

दंड्यः सप्तमभागेन, दत्तकार्यं परित्यजन् ॥
मार्गे तु त्र्यंशभागेन, विना व्याध्यादिकारणम् ॥ १ ॥

अर्थ- सोंपेलुं कार्य तजीने जे चाकर चाल्यो जाय, तेनो सातमा भाग जेटलो दंड करवो, तेम मार्गमां जे तजीने चाल्यो जाय, तेनो त्रीजा भाग जेटलो दंड करवो (पण तेमां व्याधि आदिकना कारणनो अपवाद जाणवो.)

मार्गार्धसमतिक्रांतं, कुर्वंतं निजकर्म च ॥
भृत्यं त्यजति यः स्वामी, स दद्यात्सकलां भृतिम् १

अर्थ– (मुसाफरी दरम्यान) अरधो मार्ग उलंगीगएला, तथा पोतानुं कार्य (बरोबर)करता एवा चाकरने जे शेठ तजी आपे, ते शेठे तेने सघलो पगार आपवो जोइए.

इत्येवं वेतनादान-स्वरूपं चात्र वर्णितम् ॥
संक्षिप्तं श्रुतपाथोधि-मध्याद्रत्नमिवोद्धृतम् ॥१॥

अर्थ– एवी रीते अहीं ज्ञानरूपी समुद्रमांथी जाणेरत्नने उधरेलुं होय नहीं एवुं वेतनादाननुं स्वरुप संक्षिप्तथी वर्णव्युं छे.

॥ इति वेतनादान प्रकरणम् ॥

॥ अथ क्रयेतरानुसंताप प्रकरणं प्रारभ्यते ॥

श्रीश्रेयांसं नमस्कृत्य, वादिकौशिकभास्करम् ॥
क्रयेतरानुसंतापः, कथ्यतेऽत्र समासतः ॥ १ ॥

अर्थ– वादिरूपी घुवडोने सूर्यसरखा एवा श्रीश्रेयांसनाथ प्रभुने नमस्कार करीने हवे अहीं क्रयेतरानुसंताप नामनुं प्रकरण संक्षेपथी कहे छे.

पूर्वना प्रकरणमां चाकरोनुं स्वरूप कह्युं, हवे ते चाकरसहित द्रव्यवान माणस, ते चाकरद्वाराए अथवा पोतेपण क्रयविक्रय (खरीदी अने वेचाण) करे छे. तेमां वस्तुनी परीक्षाविना जो लेवडदेवड थाय, तो तेथी पश्चात्ताप पण थाय छे. माटे तेनुं स्वरूप कहे छे.

हवे तेमां आदिमां क्रीतानुशयनुं तथा विक्रीतानुशयनुं लक्षण कहे छे.

क्रेता पणेन पण्यं यो, क्रीत्वा जानाति नो वसु ॥
पश्चात्तापो भवेत्तस्य, स क्रीतानुशयः स्मृतः ॥ १ ॥

अर्थ- जे माणस मूल्य आपी वस्तु वेचाती ले, पण ते वेचाती लेइने ते वस्तुनी जो परीक्षा न करी शके, तो तेउने घणो पश्चात्ताप थाय छे, अने तेथी ते पश्चात्तापने "क्रीतानुशय" कहेलोछे.

विक्रीय द्रव्यं यो मन्ये-न्मूल्यमल्पमुपागतम् ॥
तस्य चित्तेनुतापो यो, विक्रेतानुशयो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ- जे माणस वस्तु वेचीने एम माने के, मूल्य तो घणुंज थोडुं आव्युं; तेना चित्तमां थएलो एवो अनुताप, ते "विक्रेतानुशय" कहेवाय छे.

क्रीतं प्रत्यर्पितुं वस्तु, ग्राहकश्चेत्समीहते ॥
विकृतं तद्दिने चैव, तर्हि प्रत्यर्पयेद् ध्रुवम् ॥ १ ॥

अर्थ- वेचाती लीधेली वस्तु, ग्राहक जो पाछी देवाने इच्छे तो, ते वस्तुने बगाड्याविना तेज दिवसे ते पाछी आपी शके.

ददद्द्वितीये दिवसे, पणः त्रिंशांशहानिभाक् ॥
तृतीये द्विगुणा हानिः, परतो देयमेव न ॥ १ ॥

अर्थ- ते वेचाती लीधेली वस्तु जो बीजे दिवसे पाछी आपे तो, तेनी किमतथी त्रीजो भाग ओछुं मूल्य मळे, अने त्रीजे दिवसे जो पाछी आपे तो, तेथी बमणो भाग ओछो मळे, अने (बे दिवस) पछी तो वेचाती लीधेली वस्तु पाछी देइ शकायज नहीं. (उपर कहेलो नियम परीक्षा कर्याविनाज लीधेली वस्तुमाटे छे. पण परीक्षा करीने लीधेली वस्तु तो पाछी देइ शकायज नहीं.) कह्युं छे के,

परीक्षापूर्वकं क्रीतं, वस्तु यत्स्वामिना स्वयम् ॥
तद्विक्रेता न गृह्णीया-द्भूयः प्रत्यर्पयेन्न च ॥ १ ॥

अर्थ- जे वस्तु स्वामिए पोते परीक्षा करीने खरीदी होय, ते

वस्तु, वेचनार माणसे ग्रहण करवी नहीं, तेम तेमाटे लीधेलुं मूल्य पण पाछुं आपवुं नहीं.

हवे परीक्षाना प्रसंगथी सुवर्ण आदिकनी हानिनी परीक्षा कहे छे.

वन्हौ स्वर्णस्य नो हानिः, रजतस्य पलद्वयम् ॥
त्रपोरष्टौ च ताम्रस्य, पंचायसि पलानि षट् ॥ १ ॥

अर्थ– अग्निमां नांख्याथी सुवर्णनी हानि थती नथी, रुपानी बे पल, जसतनी आठ पल, तांबानी पांच पल, तथा लोखंडनी छ पल जेटली हानि थाय छे (आ सघली हानि दर सोपले जाणवी) अने तेथी जो अधिक हानि थाय तो कारिगरनो दंड करवो. वृद्धदर्हन्नीतिमां पण कह्युं छे के,

" हाणीएड सुवएणे अमीए पलदुगं जवे रयए तंवस्सयं च लोहे दससीसे अच्चइसयगं "

॥ हवे बीजी वस्तुउनो विषय कहे छे. ॥

कार्पासे सौत्रिके चौर्णे, स्थूलसूत्रेण निर्मिते ॥
ज्ञेया दशपला वृद्धिः, शते प्रक्षालिते सति ॥ १ ॥

अर्थ– रुनुं, सूतरनुं, उननुं, तथा जाडां सूतरनुं बनावेलुं एवुं जे कापड, ते सो पल जेटलुं धोयाथी दश पलनी तेमां वृद्धि थाय एम जाणवुं.

सूक्ष्मसूत्रैश्च निष्पन्ने, वृद्धिर्हि त्रिपला भवेत् ॥
मध्यमे मध्यमा ज्ञेया, प्रोक्तमेतज्जिनागमे ॥ १ ॥

अर्थ– सूक्ष्म सूत्रोथी बनावेलां वस्त्रमां त्रण पल जेटली हानि थाय छे, मध्यम प्रकारनां बनावेलां वस्त्रमां मध्यम प्रकारनी हानि जाणवी, एम जिनागममां कहेलुं छे.

त्रिंशद्भागक्षयो रोम-जाते च भूर्जके पुनः ॥
कौशेये वल्कले तु स्या-न्न वृद्धिर्न क्षयः कदा ॥ १ ॥

अर्थ– रोमथी बनावेलां वस्त्रमां त्रीशमा भाग जेटली हानि थाय, अने भूर्जपत्रना, रेशमना, तथा वल्कलना वस्त्रमां कदापि पण वृद्धि के हानि थाय नहीं.

क्रयेतरानुसंतापः, संक्षेपेणात्र सूचितः ॥
यद्ज्ञानेन प्रवीणाः स्यु-र्जना व्यापारकर्मणि २

अर्थ– एवी रीते अहीं संक्षेपथी क्रियेतरानुसंतापनुं वर्णन कर्युं, के जेना ज्ञानथी लोको व्यापारना कार्यमां प्रवीण थाय छे.

॥ इति क्रयेतरानुसंतापप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ स्वामिभृत्यविवाद प्रकरणं लिख्यते ॥

वासुपूज्यजिनं स्तुत्वा, दुष्टारातिविनाशकम् ॥
स्वामिभृत्यविवादोऽत्र, संक्षेपेणाभिधीयते ॥ १ ॥

अर्थ– दुष्ट एवा (अंतरंग शत्रुओने) नाश करनारा एवा श्री वासुपूज्य प्रभुनी स्तुति करीने अहीं संक्षेपथी स्वामि अने चाकरवर्गनो विवाद कहेवाय छे.

आगलना प्रकरणमां क्रयविक्रय वृत्तांत कर्युं. हवे वेपारी लोकोए एवी गायो तथा भेंसो आदिकने चारवामाटे गोवाल आदिकोने चाकर राखवा जोइए हवे तेवा चाकरो ज्यारे अपराधमां आवे छे, त्यारे तेओनो मुकरदमो चाले छे. माटे हवे तेनुं वर्णन करे छे.

महिषी त्वष्टमांशेन परशस्यविनाशिनी ॥
दंड्याश्चदर्धैः सुरभि-स्तस्याप्यर्धैरजाविः ॥ १ ॥

अर्थ– पारका (क्षेत्रना) पाकने नाश करनारी एवी भेंस-

माटे (तेना मालिकने) आठ मासा दंड करवो, गायमाटे तेथी अरधो (एटले चार मासा) दंड करवो, तथा बकरी अने गाडरलेमाटे तेथी पण अरधो (एटले बे मासा) दंड करवो. (मासा एटले आंबानाणानो वीसमो जाग जाणवो.)

हवे तेथी जो विशेष अपराध होय तो तेथी विशेष दंड थाय तेमाटे कहे ने.

अवत्सानां स्थितानां च, चरित्वा तत्र पूर्वतः ॥
दंडः स्याद् द्विगुणस्तासां, सवत्सानां चतुर्गुणः ॥१॥

अर्थ– वच्चांउविना (परनापाकमां) चरिने त्यां रहेली गायो तथा जेंसो आदिकमाटे आगल कह्यो तेना करतां बमणो दंड करवो, अने वच्चांउसहित जो चरे, तो तेथी चोगणो दंड करवो.

वली तेवीज रीते गधेडा तथा उंटोमाटे आगल कह्यो तेम जेंस सरखोज दंड करवो.

एवी रीते परना क्षेत्रमां रहेला पाकनो नाश करवाना संबंधमां गायो तथा जेंसो आदिकना स्वामिमाटेना दंडनुं स्वरूप कह्युं, पण ते नुकशानीना बदलातरिके ते खेतरना मालिकने शुं आपवुं ? ते कहे ले.

ताड्यो गोपस्तु गोमी च, पूर्वोक्तदंडजागपि ॥
दद्यात्क्षेत्रफलं यच्चि, नष्टं क्षेत्राधिपाय तत् ॥ १ ॥

अर्थ– तेवा प्रसंगमां गोवालने ताडना करवी, अने ते गाय आदिकना मालिकने आगल कह्या प्रमाणे दंड करवो, तथा क्षेत्रना मालिकने जेटलुं नुकशान थयुं होय तेटलुं ते गाय आदिकनो मालिक क्षेत्रना मालिकने आपे. (अने ते नुकशानीनो बदलो आप्याबाद, गायोए जक्षण करतां खेतरमां जे घास, कडब

आदिक बाकी रह्युं होय, ते सघळुं ते गायआदिकनो मालिक ग्रहण करे, केमके, तेणे हवे ने मूल्य आपी वेचातुं लीधेलुं कहेवाय.) गोवाळीआना अपराधना संबंधमां ते गोवाळीआने फक्त ताडनाज कराय, पण तेनी नुकशानीनो बदलो तो गायोनो मालीकज आपे. वळी जो ते गायोना मालीकनोज अपराध होय, तो तेने तो दंड तथा नुकशानी बन्ने सहन करवां पडे एवो तात्पर्य जाणवो.

(उपर कहेलो दंड जाणीजोइने परना क्षेत्रमां चरावयामाटेनोछे.)

हवे अजाणतां ते गायो आदिक जो परना खेतरमां जइने चरी आवे तो तेने माटेनो अपवाद कहे छे.

कामचारे त्वयं दंडो-ऽकामे दोषो न कस्यचित् ॥
मार्गमध्ये यदा क्षेत्रं, तदेत्थं प्रविजायते ॥ १ ॥

अर्थ– आ उपर कहेलो दंड जाणी जोइने गायो आदिकने चराववामाटेनो छे, पण जो अजाणतां ते गायो आदिक चरी जाय तो तेमां कोइनो पण दोष नथी, वळी तेवो बनाव पण ज्यारे क्षेत्र (जवा आववाना मार्ग मध्ये होय त्यारेज बने छे.

हवे परना खेतरमां चरतां छतां पण कया पशुओमाटेनो दंड न थइ शके? ते कहे छे.

षंडोत्सृष्टागंतुकाश्च, पशवः प्रसविकास्त्वपरम् ॥
दैवाश्च राजकीयाश्च, मोच्या येषां न रक्षकः ॥ १ ॥

अर्थ– सांढरूप बळदो, कोइए तजी दीधेलो, तथा (तुरतनां) जन्मेलां अथवा जन्म आपनारां, देवनं लगतां, राजानां तथा जेओनो कोइ स्वामी न होय तेवां पशुओने (ते अपराधथी) मुक्त करवां.

॥ हवे गोवालनुं कृत्य कहेछे. ॥

प्रातर्गृहीता यावंतो, गवादिपशवो ध्रुवम् ॥
विकाले देयास्तावंतो, गोपेन गणनोत्तरम् ॥ १ ॥

अर्थ– गाय आदिक जेटलां पशुओ (गोवाले) प्रजातमां लीधां होय, तेटलां पशुओ संध्याकाले गणीने लेणे (तेना स्वामिने) सोंपवां.

सिंहाहिविद्युद्दाहैश्च, मृतश्चौरैर्हृतोऽपि वा ॥
तस्य दंडो न गोपस्य, तत्प्रमादे स दंडनाक् ॥ १ ॥

अर्थ– सिंह, सर्प, वीजली, तथा दावानलथी जो कोइ पशु मृत्यु पामे, अथवा कोइ चोर चोरी जाय, तो तेमाटे गोवालनो दंड करी शकाय नहीं, केमके तेनो दंड तो तेनी (पोतानी) कसूर होय त्यारेज करी शकाय छे.

नृपेण ग्रामलोकैश्च, रक्षणीया वसुंधरा ॥
गवादिपशुवृत्त्यर्थं, नो चेद्दुःखं सदा भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ– राजाए अने गामना लोकोए गाय आदिक पशुओना निर्वाहमाटे जमीन (पडतर) राखवी जोइए, नहींतर हमेशां दुःख थाय छे.

हवे ते जमीन केटली राखवी ? तेनुं प्रमाण कहेछे.

परिणाहोऽभितो रक्ष्यो, ग्रामस्य धनुषां शतम् ॥
शतद्वयं कर्वटस्य नगरस्य चतुः शतम् ॥ ॥ १ ॥

अर्थ– गामनी आसपास सो धनुष्यनी पडतर जमीन (गौचरमाटे) राखवी. कर्वटनी आसपास बसो धनुष्यनी पडतर जमीन राखवी. तेमज नगरनी आसपास चारसो धनुष्य जेटली जमीन पडतर राखवी.

संक्षेपेणात्र गदितो, विवादः स्वामिभृत्ययोः ॥
व्यवहारेऽष्टमो भेदो, विशेषः श्रुतसागरात् ॥ १ ॥

अर्थ– एवी रीते व्यवहारमां आठमा भेदरूप एवो स्वामि चाकरनो विवाद अहीं संक्षेपथी कह्यो. तेनुं विशेष वृत्तांत मोटा अर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणवुं.

॥ इति स्वामिभृत्यविवादप्रकरणम् ॥

॥ अथ निक्षेपप्रकरणं प्रारभ्यते ॥

श्रीविमलस्य पादाब्ज-नखा दिंतु सुखानि वः ॥
यज्जन्मनि नभोभागा-द्रत्नवृष्टिरभूत्तराम् ॥ १ ॥

अर्थ– श्रीविमलनाथ प्रभुना चरणकमलना नखो तमोने सुखो आपो ! के जे प्रभुना जन्म वखते आकाशमांथी घणीज रत्नवृष्टि थइ हती.

पूर्वेना प्रकरणमां चाकरना दोषथी स्वामिने थती नुकशानीनुं सूचन कर्युं. अने तेथी खेद पामेलो एवो कोइक शेठ व्याजना लाभमाटे, अथवा पोताना द्रव्यनी रक्षामाटे, पोतानुं धन कोइक जगोए थापण राखीने निर्वाह चलावे छे, माटे ते थापणना प्रकारो अहीं कहे छे. तेमां पेहेलां ते थापणनुं स्वरूप कहे छे.

कर्मोदयेन मर्त्यस्य, संततिर्न भवेद्यदा ॥
दुष्टोऽथवा तनुजः स्या-त्तदा दुःखं महद्भितो १

अर्थ– कर्मोना उदयथी मनुष्यने ज्यारे संतान थाय नहीं, अथवा दुराचारी पुत्र थाय, त्यारे आ संसारमां (तेने) मोटुं दुःख थाय छे.

ततः कुटुंबपुष्टयर्थं, स्तैन्यादिभयतोऽपि वा ॥
स्वयं व्यवहर्तुं कर्तुं, मशक्तेन नरेण वा ॥ २ ॥

यात्रार्थमुद्यतेनापि, क्षिप्यते यद्वसु स्वकम् ॥
धर्मज्ञे कुलजे सत्ये, सदाचाररतात्मने ॥ २ ॥
स निक्षेपविधिः प्रोक्तः, सर्वजीवसुखप्रदः ॥
स तु द्विविधतापन्नः, समिषाऽमिषभेदतः ॥ ३ ॥

अर्थ– तेथी कुटुंबना पोषणमाटे, अथवा चोरी आदिकना भयथी, अथवा पोते व्यापार करवाने अशक्त होवाथी अथवा यात्रामाटे जवानुं होवाथी पोतानुं जे धन धार्मिक, कुलीन, सत्य बोलनार, तथा सदाचारी एवा माणसपासे जे थापण राखवुं, तेने थापणनुं स्वरूप जाणवुं. ते थापण सर्व जीवोने सुख आपनारी छे. वळी ते थापणना वे भेदो छे, एक व्याजु थापण अने बीजी अव्याजु थापण.

स तु भूयः कियत्काले, निक्षेप्ता याचते यदा ॥
न तदा स्याद्विसंवादस्ततः शुद्धे विनिक्षिपेत् ॥ १ ॥

अर्थ– पछी केटलोक समय वित्याबाद ज्यारे ते थापण राखनार माणस पोतानुं द्रव्य पाछुं मागे, त्यारे ते आपी देवुं, के जेथी तेमाटे टंटो थाय नहीं. अने एवुं विचारिने थापण राखनार माणसे (पण) उत्तम माणसने द्रव्यादिक सोंपवुं.

यावद्द्रव्यं च निक्षिप्तं, तावद्देयात्स्वनी पुनः ॥
यथादानं तथादानं, येन प्रीतिः सदा तयोः ॥ १ ॥

अर्थ– जेटलुं द्रव्य थापण राखेलुं होय, तेटलुंज द्रव्यवान माणसे पाछुं आपवुं, केमके जेवुं देवुं तेवुं लेवुं, अने तेथी हमेशां तेओ बन्नेनी (परस्पर) प्रीति रहे छे.

याच्यमानं स्वकीयं स्वं, निक्षेप्ता यो न यच्छति ॥
भूप आहूय तं मैत्र्य-भावेन दापिनं वदेत् ॥ १ ॥

विवादोऽयं किमन्योऽन्यं, नायं धर्मस्तवोचितः ॥
स्ववंशो लभ्यते येन, न तत्कुर्वीत बुद्धिमान् ॥ २ ॥

अर्थ- जे थापण राखनार माणस मागनारे माग्या छतां पण तेनुं धन आपतो नथी, ते माणसने राजाए बोलावीने मित्रजा- पथी कहेवुं के, तमो परस्पर शामाटे विवाद करो छो ? (वली ते थापण राखनार माणसने) राजाए कहेवुं के, तारो आ आ- चार लायक नथी, जेथी पोताना वंशने लज्जा थाय, तेवुं कार्य बुद्धिवान माणसे करवुं नहीं. (त्यारे ते थापण राखनार माण- स राजाने कहेशे के)

स्वामिन्मम तु न ह्यस्ति, देया तस्य वराटिका ॥
श्रीमद्भिर्निश्चयं कृत्वा, यथा रोचेत तत्कुरु ॥ १ ॥

अर्थ- हे स्वामी ! मारापर तेनुं एक कोडीनुं पण करज नथी, माटे ते बाबतनो आप निश्चय करीने, जेम आपनी इच्छा होय तेम करो ?

स्वामिकार्यहितोद्युक्तैः, पुरुषैः साक्ष्यदायिभिः ॥
विजातिभिर्निगूढचरैः, निर्णीयात्सत्यतां द्वयोः ॥ १ ॥

अर्थ- पछी (राजाए) स्वामिना कार्यना हितमां उद्यमवंत थ- ा, साक्षी आपनारा, तथा जूदी ज्ञातिना एवा गुप्त चरोनी (तोनी) मारफते बन्नेनी सत्यतानो निर्णय करवो.

ाद्युक्तं चेद्वचः सत्यं, तदा भूपो यथातथा ॥
ापयित्वा धनं तस्मै, दंडयेन्न्यस्तरक्षकम् ॥ १ ॥

र्थ- तेओमां जो वादीए कहेलुं वचन सत्य होय, तो रा- नुं ते धन तेने अपावीने, ते थापण राखनारनो दंड करवो. तेवा मुकरदमामां जो वादी असत्य एटले जूठो होय तो ? ते कहे छे.

१५

अर्थिन्यसत्ये दंड्यः स, यावद्वेदनमर्थतः ॥
तथा न पुनरन्योऽप्य-नीतिं कुर्याच्च कश्चन ॥ १ ॥

अर्थ– तेवा मुकरदमामां जो वादी असत्य ठरे, तो तेणे जेटली रकमनो दावो कर्यो होय, तेटलां द्रव्यनो तेनो दंड करवो जेथी बीजो कोइ माणस पण (तेवी) अनीति करे नहीं.

हवे उपनिधिनुं स्वरूप कहेछे.

निजमुद्रांकितं वंधं, कृत्वा च वस्तुनः स्वयम् ॥
निकटे स्थाप्यते यस्य, बुधैरुपनिधिः स्मृतः ॥ १ ॥

अर्थ– पोतानी मुद्राथी वस्तुने सीलबंध करीने, पोते जेनी पासे राखे छे, तेने पंडितोए " उपनिधि " कहेलो छे.

निक्षेप्ता लेखपत्रे चे-त्पुत्रनाम न लेखितम् ॥
याचितं तदवाप्नोति, पुत्र ऋक्थं मृतौ पितुः ॥ १ ॥

अर्थ– थापण मेलनार धणीए लखतमां जो पुत्रनुं नाम लखेलुं नहोय तो, ते पुत्र पिताना मृत्यु बाद ते धन मागवाथी मेलवी शके छे.

जलाग्निचौरैर्यन्नष्टं, तन्निक्षेप्ता नचाप्नुयात् ॥
निक्षेपरक्षकाद्द्रव्यं, तत्प्रसादादृते नरः ॥ १ ॥

अर्थ– जे थापण मेलेलुं द्रव्य जल, अग्नि अने चोरोथी नष्ट थाय, ते द्रव्यने, थापण राखनार माणसनी मेहेरवानी विना, थापण मेलनार माणस मेलवी शके नहीं.

निक्षेपापह्नुतिं कर्ता, धर्मादौः शपथैर्नृपः ॥
साक्ष्यादिशपथैर्वापि, योऽसत्यस्तं तु दंडयेत् ॥ १ ॥

अर्थ– धर्मादिकना सोगन दीधा छतां, तथा साक्षीआदिको-

ना सोगनपूर्वकपण जे माणस थापण छलवी जाय, अने असत्य बोले तेनो राजाए दंड करवो.

वेदसत्यं द्वयोर्वाक्यं, राज्ञा दंड्यावुभावपि ॥
यावन्निवेदितं स्वांता-भिप्रायं तावता लघु ॥ १ ॥

अर्थ- जो तेउ बन्नेनुं वाक्य जूटुं होय, तो त्यांसुधि तेउ (पोताना) मननो अभिप्राय जणावे, त्यांसुधि तेउ बन्नेनो राजाए तुरत दंड करवो.

निक्षिप्तं यो धनं कृत्वा, निह्नुतेऽस्मान्महीधनः ॥
गृहीत्वा षोडशांशं मा-गर्थिनं दापयेत्समग्र ॥ १ ॥

अर्थ- जे थापण राखनार माणस थापणने छलवी जाय, तेनी पासेथी राजाए प्रथम सोलसो भाग लेइने वादीने तेनुं सघलुं द्रव्य अपाववुं.

वादीए (तेना) मुकरदमो दाखल करवाथी तेमां वादीने जे खरच थाय, ते खरच राजाए प्रतिवादिपासेथी अपाववुं जोइए. तेमाटे हवे कहे छे.

यो नियोगेऽर्थिनो जातो, व्ययः प्रत्यर्थिनो नृपः ॥
तद्द्रव्यं दापयेत्सर्वं, लिखित्वा जयपत्रके ॥ १ ॥

अर्थ- (तेवा थापणसंबंधिना) मुकरदमामां वादीने जे खरच थयो होय, ते सघलो खरच, राजाए मुकादमाना जयपत्रपर लखीने प्रतिवादिपासेथी वादीने अपाववो.

हवे उपनिधि हरणनो विषय कहे छे.

कश्चिच्चोपनिधिर्हर्ता, धूर्तेन यदि निश्चितः ॥
दंड्यः स्यादापयित्वा प्राक्, निक्षिप्तं दत्तवानदं ॥१॥

अर्थ- उपनिधि (के जेनुं स्वरूप आगल दर्शावामां आ-

वेल छे) तेने हरनारा माणसनी ज्यारे राजाए खातरी करी, त्यारे पेहेलां ते आपण तेना स्वामिने अपाव्याबाद राजाए ते उपनिधिना हरनार माणसनो दंड करवो.

हवे कोइने जय आपीने जे दुष्ट माणस आवी आपणना संबंधमां ठगे, तेनो राजाए दंड करवो ते कहे छे.

राज्यगेहे श्रुतं मित्र, नृपः क्रुद्धस्तवोपरि ॥
ततस्त्वं मद्गृहे तिष्ट, रक्षामि त्वामसंशयम् ॥ १ ॥
चेद्भूयस्त्वद्गृहस्थानि, वस्तूनि द्राक् गृहिष्यति ॥
त्वदिछा चेत्समस्तानि, मद्गेहे स्थापयाम्यहम् ॥२॥
इत्येवं कैतवं कृत्वा, जयं दत्वा हरेद्धनम् ॥
कन्यावास्तुहिरण्यादि, हेतुभिर्विविधैः खलः ॥ ३ ॥
स दंड्यो भूमिपालेन, कारागारादिबंधनैः ॥
निर्वास्यो नगरात्स्वीया-त्सर्वलोकप्रपंचकः ॥ ४ ॥

अर्थ– हे मित्र! राजदरबारमां तारी वात प्रसिद्ध थइ गइ छे, अने तेथी राजा तारापर गुस्से थएलो छे; माटे हवे तुं मारे घेर रहे, हुं खरेखर तारुं रक्षण करीश. वली कदाच तारा घरनी वस्तुओ पण राजा एकदम लेइ लेशे, माटे जो तारी इछा होय तो ते तारी सघली वस्तुओ हुं मारे घेर राखुं; एवी रीते विविध प्रकारना हेतुओथी ठगाइ करीने, तथा जय देखाडीने जे दुष्ट माणस ... घर, तथा सुवर्ण आदिकनुं हरण करे छे, एवा ते सर्व ... माणसनो राजाए केदखाना तथा बंधनआदिक- ... पोताना नगरथी बहार कहाडी मेलवो.

... तकरेला मुकरदमानो विषय कहेछे.

...क्षेप-विवादेऽन्योऽन्यमेव च ॥
...भिः सिद्ध्येत, तदेव स्यात्प्रमाणयुक्१

अर्थ– साक्षिथी निश्चित करवा लायक एवा आपणसंबंधि मुकरदमामां, केस ज्यारे अन्योन्य साक्षीआदिकथी पुरवार थाय, त्यारे ते सत्य प्रमाणवाळो कहेवाय.

हवे आवा आपणसंबंधि मुकरदमामां साक्षिओ विविध प्रकारना होय छे. तेओमां योग्य कया अने अयोग्य कया? ते कहे छे.

यः कृत्यस्यादिमंतं च, जानाति नितरां नरः ॥
सत्यदृग्दर्शी साक्षी स्या-न्न परः श्रुतिमात्रतः ॥ १ ॥

अर्थ– जे माणस ते कार्यनी आदि अने अंत हमेशां जाणे छे, अने सत्यक्ष जोनारो छे, तेज साक्षी थइ शके, पण बीजो फेवल सांजळवामात्रथीज साक्षी थइ शके नहीं.

हवे ते साक्षी बे प्रकारनो होय छे, स्वाजाविक अने नैयोगिक तेओमां स्वाजाविक साक्षीओना छ भेदो होय छे. अने नैयोगीक पांच प्रकारनो होय छे.

ग्रामीणः प्राड्विपाकश्च, भूपश्च व्यवहारिणः ॥
राज्यस्वकार्यासिरतो,ऽर्थिना नु प्रहितश्च यः ॥ १ ॥

अर्थ– ग्रामीण एटले गांवडीओ, जामीन, राजा, व्यापारी, राज्यकार्यवाळो, अने पोताना कार्यवाळो तथा वादीए मोकलेलो

कुल्याकुल्यविवादेषु, विज्ञेयास्तेऽपि साक्षिणः ॥
न्यायोक्तगुणसंपन्ना, अर्थिप्रत्यर्थिमोदिनः ॥ १ ॥

अर्थ– कुलीन अथवा अकुलीन मुकरदमाओमां, न्यायमां कहेला गुणोवाळा, अने वादी तथा प्रतिवादिने हर्ष करनारा एवा तेओने पण साक्षी जाणवा.

रक्षितः स्मारितश्चैव, यदृच्छागत एव च ॥
गुप्तोऽथ चानीतश्चापि, एवं पंचविधः परः ॥ १ ॥

अर्थ- रदित, एटले वादीए पोते लावेलो, पोतानी मेळे आवेलो, गुप्त तथा लावेलो ए पांच प्रकारनो (नैयोगिक) साक्षी जाणवो.

स्वधर्मनिरताः शस्याः, कुलीनाश्च तपस्विनः ॥
दानिनो धनिनः पुत्र-वंतो बहुकुटुंबिनः ॥ १ ॥

अर्थ- पोताना धर्ममां रक्त, प्रशंसा करवा लायक, कुलीन, तपस्वी, दान देनारा धनवान, पुत्रवान, बोहोळा कुटुंबवाळा,

निर्लोभाश्च विजातीयाः, श्रुताध्ययनसंयुताः ॥
शुद्धवंशोद्भवा वृद्धाः, कार्या वै साक्षिणः सदा ॥१॥

अर्थ- निर्लोभी, परजातिवाळा, ज्ञानना अभ्यासवाळा, शुद्ध-वंशथी उत्पन्न थएला, तथा वृद्धो एवा साक्षीओ हमेशां करवा.

स्त्रीणां साक्ष्ये स्त्रियः कार्याः, पुरुषाणां नरास्तथा ॥
परोपकारनिरताः शत्रुमित्रसमेक्षणाः ॥ १ ॥

अर्थ- स्त्रीओनी साक्षी समये स्त्रीओने साक्षी करवी, तथा पुरुषोनी साक्षीविषाए पुरुषोने साक्षी करवा; तेओ सघळा परोपकारी तथा शत्रु अने मित्रमां तुल्य दृष्टि राखनारा होवा जोइए.

हवे ते रदितादिकोनुं स्वरूप कहे छे.

अर्थिना स्वयमानीतो, यः पत्र साक्ष निरूप्यते ॥
स साक्षी रदितो ज्ञेयः, अरदितः पत्रकादृते ॥ १ ॥

अर्थ- वादी पोते जे साक्षीने लावीने पत्रमां साक्षीमां दाखल करे, ते साक्षीने रदित जाणवो, अने साक्षीविनाना साक्षीने अरदित जाणवो.

कार्ये समुत्पन्ने दृष्टो, कार्यसिद्ध्यर्थमेव च ॥
स्वयमेव प्रार्थिना यो वै, स स्मारित इहोच्यते ॥२॥

अर्थ– वारंवार कार्य पूरुंथाथी कार्यनी सिद्धिमाटेज वादी जेनुं स्मरण करे छे, ते साक्षीने अहीं " स्मारितसाक्षी " कहे छे.

विवाददर्शनार्थं यः, स्वयं राज्यसभास्थले ॥
उपकारेच्छया प्राप्तो, यदृच्छागत उच्यते ॥ १ ॥

अर्थ– मुकरदमो जोवामाटे जे साक्षी पोतानी मेले राज्यसभामां उपकारनी इच्छाथी आव्यो होय ते " यदृच्छागत " साक्षी कहेवाय छे.

प्रसंगादागतः साक्षी, वा प्रयोजनतः स्वयम् ॥
प्रत्यर्थिवचनं श्रोतु-मर्थिना स्थापितश्च यः ॥ १ ॥

अर्थ– प्रसंगथी पोतानी मेले आवेलो, अथवा कंइ कार्यमाटे आवेलो, अथवा प्रतिवादीनी जुबानी सांभळवाने आवेलो, एवा साक्षीने वादीए जे स्थापन कर्यो होय, तेने पण " यदृच्छागत साक्षी " जाणवो.

गुप्तसाक्षी स विज्ञेयो, ऽर्थिनः कार्यस्य सिद्धिदः ॥
साक्ष्युक्तश्रवणाज्जात-स्फुर्तिरुत्तरदायकः ॥ १ ॥

अर्थ– साक्षीना वचनो सांभळीने स्फुरता आववाथी जे साक्षी उत्तर आपे, तेने वादीना कार्यनी सिद्धि आपनारो गुप्त साक्षी जाणवो.

इति संक्षेपतः प्रोक्तो, निक्षेपविधिसंग्रहः ॥
विस्तृतिश्चास्य विज्ञेया, महार्हन्नीतिशास्त्रतः ॥ १ ॥

अर्थ– एवीरीते संक्षेपथी थापणनी विधिनुं स्वरूप कह्युं, तेनो विस्तार बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवो.

॥ इति निक्षेपप्रकरणं समाप्तम् ॥

अर्थ– रदित, एटले वादीए पोते लावेलो, पोतानी मेले आवेलो, गुप्त तथा लावेलो ए पांच प्रकारनो (नैयोगिक) साक्षी जाणवो.

स्वधर्मनिरताः शस्याः, कुलीनाश्च तपस्विनः ॥
दानिनो धनिनः पुत्र-वंतो बहुकुटुंबिनः ॥ १ ॥

अर्थ– पोताना धर्ममां रक्त, प्रशंसा करवा लायक, कुलीन, तपस्वी, दान देनारा धनवान, पुत्रवान, बोहोला कुटुंबवाला,

निर्लोभाश्च विजातीयाः, श्रुताध्ययनसंयुताः ॥
शुद्धवंशोद्भवा वृद्धाः, कार्या वै साक्षिणः सदाः॥१॥

अर्थ– निर्लोभी, परजातिवाला, ज्ञानना अभ्यासवाला, शुद्ध-वंशथी उत्पन्न थएला, तथा वृद्धो एवा साक्षीउं हमेशां करवा.

स्त्रीणां साक्ष्ये स्त्रियः कार्याः, पुरुषाणां नरास्तथा ॥
परोपकारनिरताः शत्रुमित्रसमेक्षणाः ॥ १ ॥

अर्थ– स्त्रीउंनी साक्षी समये स्त्रीउंने साक्षी करवी, तथा पुरुषोनी साक्षीवेलाए पुरुषोने साक्षी करवा; तेउं सघला परोपकारी तथा शत्रु अने मित्रप्रते तुल्य दृष्टि राखनारा होवा जोइए.

हवे ते रदितादिकोनुं स्वरूप कहे छे.

अर्थिना स्वयमानीतो, यः पत्रे प्राक् निवेश्यते ॥
स साक्षी रदितो ज्ञेयो, ऽरदितः पत्रकाहते ॥ १ ॥

अर्थ– वादी पोते जे साक्षीने लावीने पेहेलां अरजीमां दाखल करे, ते साक्षीने रदित जाणवो, अने अरजीविनाना साक्षीने अरदित जाणवो.

कार्यं मुहुर्मुहुः पृष्टो, कार्यसिद्ध्यर्थमेव च ॥
स्मार्यते चार्थिना यो वै, स स्मारित इहोच्यते ॥१॥

अर्थ– वारंवार कार्य पूछवाथी कार्यनी सिद्धिमाटेज वादी जेनुं स्मरण करे छे, ते साक्षीने अहीं " स्मारितसाक्षी " कहे छे.

विवाददर्शनार्थं यः, स्वयं राज्यसभास्थले ॥
उपकारेच्छया प्राप्तो, यदृच्छागत उच्यते ॥ १ ॥

अर्थ– मुकरदमो जोवामाटे जे साक्षी पोतानी मेळे राज्यसभामां उपकारनी इच्छाथी आव्यो होय ते " *यदृच्छागत* " साक्षी कहेवाय छे.

प्रसंगादागतः साक्षी, वा प्रयोजनतः स्वयम् ॥
प्रत्यर्थिवचनं श्रोतु-मर्थिना स्थापितश्च यः ॥ १ ॥

अर्थ– प्रसंगथी पोतानी मेळे आवेलो, अथवा कंई कार्यमाटे आवेलो, अथवा प्रतिवादीनी जुबानी सांभळवाने आवेलो, एवा साक्षीने वादीए जे स्थापन कर्यो होय, तेने पण " यदृच्छागत साक्षी " जाणवो.

गुप्तसाक्षी स विज्ञेयो, ऽर्थिनः कार्यस्य सिद्धिदः ॥
साक्ष्युक्तश्रवणाज्जात-स्फूर्तिरुत्तरदायकः ॥ १ ॥

अर्थ– साक्षीना वचनो सांभळीने स्फुरता आववाथी जे साक्षी उत्तर आपे, तेने वादीना कार्यनी सिद्धि आपनारो गुप्त साक्षी जाणवो.

इति संक्षेपतः प्रोक्तो, निक्षेपविधिसंग्रहः ॥
विस्तृतिश्चास्य विज्ञेया, महार्हन्नीतिशास्त्रतः ॥ १ ॥

अर्थ– एवीरीते संक्षेपथी थापणनी विधिनुं स्वरूप कह्युं, तेनो विस्तार बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवो.

॥ इति निक्षेपप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ अस्वामिविक्रमकरणं प्रारभ्यते ॥

श्रीमदर्हतमानम्या-ऽनंतं चानंतसौख्यदम् ॥
यथागमं वर्ण्यतेऽत्र, विक्रयोऽस्वामिवस्तुनः ॥ १ ॥

अर्थ- अनंतसुखना देनारा एवा श्रीमान् श्री अनंतनाथजी प्रभुने नमस्कार करीने, आगमनी रीति प्रमाणे, स्वामीनी गेरहाजरीमां वेचाण थती वस्तुसंबंधि स्वरुप कहे छे.

पूर्वना प्रकरणमां निक्षेपनुं (थापणनुं) स्वरुप कह्युं. हवे ते थापण राखेली वस्तु, कोइक लोभी माणस स्वामीनी आज्ञाविना पण वेची नाखे, माटे हवे तेनुं वर्णन करे छे. हवे तेमां पेहेलुं स्वामीनी आज्ञाविनाना वेचाणनुं स्वरूप कहे छे.

प्रच्छन्नं परकीयस्य, नष्टनिक्षिप्तवस्तुनः ॥
विक्रयः स्वाम्यसत्वे यः, स स्यादस्वामिविक्रयः १

अर्थ- चोराएली के थापण राखेली एवी पारकी वस्तुनुं गुप्त रीते स्वामीनी आज्ञाविना जे वेंचाण करवुं, तेने " अस्वामीविक्रय " कहे छे.

हवे स्वामीनी आज्ञाविना वस्तु वेचनारो माणस केवा दंडने योग्य थाय ? ते कहे छे.

स्वाम्याज्ञातमृते कोऽपि, विक्रीणात्यन्यवस्तु यः ॥
स दंड्यश्चोरवद्वस्तु, दापयेत्स्वामिनं नृपः ॥ १ ॥

अर्थ- जे कोइ माणस स्वामीनी आज्ञाविना परनी वस्तु वेंचे छे, तेने चोरनी पेठे दंडवो, अने ते वस्तु राजाए तेना मालिकने सोंपवी.

संध्याकाले अथवा रात्रिए एटले वस्तु वेचावानो समय गया बाद कोइ गरीब माणसपासेथी गुप्त रीते, थोडुं मूल्य आपी,

मोटी किम्मतनी जो कोइ माणस वस्तु वेचाती ले, तो तेने दंड करी शकाय के नहीं? ते कहे छे.

दीनान्महर्घ्यवस्तूनां, क्रेताऽकाले रहस्यपि ॥
अल्पद्रव्येण गृहीत्वा-दस्युवद्दंडभाग् भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ– अकाळ वेळाए गुप्त रीते गरीब माणसपासेथी अल्पमूल्य आपीने जे मोटी कीमतनी वस्तु लेछे, तेनो चोरनी पेठेज दंड थइ शके.

हवे ज्यारे वस्तुनो मालिक, बीजाए वेचेली एवी पोतानी वस्तुने ज्यारे खरीद करनारना हाथमां रहेली जुए, त्यारे शुं करवुं? ते कहे छे.

लब्ध्वा स्वमन्यविक्रीतं, क्रेतृहस्तस्थितं धनी ॥
तं ग्राहयेत्तलारक्षं, दंड्यौ तेनापि तौ तदा ॥ १ ॥

अर्थ– बीजाए वेचेली एवी पोतानी वस्तुने खरीद करनारना हाथमां रहेली जोइने, मालीके ते खरीद करनारने कोटवालने हाथे पकडाववो; अने ते कोटवाले पण तेउ बन्नेने एटले वेचनार तथा खरीदनारने दंडवा.

नष्टं चापहृतं वस्तु, मदीयमिति साधयेत् ॥
ततः क्रेतापि शुद्ध्यर्थं, विक्रेतारं प्रदर्शयेत् ॥ १ ॥

अर्थ– खोवाएली अथवा चोराएली वस्तुने "आ मारी छे" एम जे कोइ कहे, तेणे पोताना पवित्रपणामाटे ते वस्तु वेचनारने बतावी आपवो जोइए.

ततो मूल्यं स चाप्नोति, शुध्येच्चापि न संशयः ॥
यद्यशक्तस्तमानेतुं, तदा साक्ष्यादिभिः क्रयम् ॥ १ ॥

अर्थ– पछी तेने मूल्य मळी शके छे, अने पोते पवित्र पण

थाय छे, तेमां संशय नथी; अने कदाच ते वस्तु वेचनारने ते न लावी शके, तो साक्षी आदिकथी तेने पूरवार करवुं जोइए.

दिव्येन वा शोधयित्वा, वस्तु दत्वा गृहं व्रजेत् ॥
क्रेतान्यथा तु दंड्यः स्या-द्गृह्णीयाद्वस्तु तत्पनी ॥ १ ॥

अर्थ– अथवा दिव्यथी पवित्र थइने, वस्तु देइने घेर जवुं; अने तेम जो न थाय, तो ते मालीके वस्तु ग्रहण करवी.

वस्तु शोधनाराए वस्तु मळते छते शुं करवुं? ते हवे कहेछे.

नष्टं चापहृतं वस्तु, समासाद्य कथंचन ॥
सवस्तुचोरं राजानं, समर्प्य स्वं निजं वदेत् ॥ १ ॥

अर्थ– खोवाएली तथा चोराएली वस्तुने कोइ पण रीते मेळवीने, ते वस्तुसहित चोरने राजाप्रते सोंपवो, अने पोतानां द्रव्यनो खुलासो करवो.

जो ते निवेदन न करे, तो तेनो पण राजाए दंड करवो. ते कहे छे.

यस्माल्लब्धं हृतं नष्टं, तद्वृत्तमनिवेद्य यः ॥
भूयः स्वयं च गृह्णाति, दंड्योऽयं किल पार्थिवैः॥१॥

अर्थ– जे माणस चोरेला, अथवा गुम थएला द्रव्यने मेळवीने, तेनुं वृत्तांत जाहेर कर्याविना, जे पोते पचावी पाडे छे, तेनो राजाएप दंड करवो.

जे द्रव्यनो कोइपण मालिक न होय, एवुं द्रव्य जो राजपुरुषोना हाथमां आवे तो तेनी शुं व्यवस्था करवी? ते कहे छे.

राजा निःस्वामिकं द्रव्य-मात्र्यब्दं संनिधापयेत् ॥
स्वाम्याप्तुं तत्र शुल्कस्त-त्परतस्तु नृपः प्रभुः ॥ १ ॥

अर्थ– नधणीयातुं द्रव्य राजाए त्रण वर्षां सुधी राखवुं, ते

समयनी अंदर जो तेनो मालीक मले तो तेने आपवुं, नहींतर ते द्रव्यनो राजा मालीक थाय.

वर्णितोऽयं समासेना-ऽस्वामिविक्रय एव च ॥
विशेषस्तु वृहच्छास्त्रात्, ज्ञातव्योधिषणान्वितैः ॥१॥

अर्थ– एवी रीते टुंकामां स्वामिनी गेरहाजरीमां थतां वेचाणनुं स्वरूप कह्युं. तेनुं विशेष वर्णन बुद्धिवानोए वृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति अस्वामि विक्रयप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ वाक्पारुष्यप्रकरणमभिधीयते ॥

श्रीमद्धर्मजिनं नौमि, सर्वकर्मविनाशनम् ॥
यन्नामस्मृतिमात्रेण, सफलाश्च मनोरथाः ॥ १ ॥

अर्थ– सर्व कर्मोने नाश करनारा एवा श्री धर्मनाथजी प्रभुने नमस्कार करूं छे, के जेमना नामना स्मरणमात्रथी मनोरथो सफल थाय छे.

पूर्वना प्रकरणमां अस्वामी विक्रयनुं स्वरूप कह्युं. तेनी अंदर वचननी कठोरता आवे छे, माटे अहीं तेनुं वर्णन कराय छे.

येनोपयोगो जीवस्य, शुद्धमार्गात्प्रणश्यति ॥
तद्वाक्पारुष्यमिति प्रोक्तं, तदहं वच्मि किंचन ॥१॥

अर्थ– जेथी करीने जीवनो उपयोग शुद्ध मार्गथी नाश पामे छे, तेने वाक्पारुष्य कहेलुं छे, अने तेनुं किंचित् स्वरूप हुं कहुं छुं.

प्राणिपीडानिदानं य-च्छ्रोतॄणामप्रीतिकरं वचनम् ॥
सत्स्त्रियमाणनाशेऽपि, न वाच्यं परुषं वचः ॥ २ ॥

अर्थ– जे कठोर वचन प्राणीओने पीडा करवाना कारणरूप

छे, तथा लोकमा अत्यंत अप्रीति करनारुं छे, एवुं कठोर वचन उत्तम माणसोए प्राण जतां पण बोलवुं नहीं.

वाचा सत्यापि या लोके, जीवानां दुःखदायिका ॥
सा ग्राह्यते न केनापि, वनवासितपस्विना ॥ १ ॥

अर्थ– सत्य एवी पण जे वाणी लोकमां जीवोने दुःखदाइ छे, तेवी वाणी कोइपण वनवासी तपस्वी अंगीकार करे नहीं.

ब्राह्मणक्षत्रविट्शूद्रा, वदंतः परुषं वचः ॥
नृपेणात्महितार्थं वै, दंड्या वर्णानुसारतः ॥ १ ॥

अर्थ– ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य अने शूद्रमांनो जे माणस कठोर वचन बोले, तेउने आत्महितमाटे राजाए तेउनी जाति प्रमाणे दंड करवो.

द्विजोऽयं चौर इत्युक्त्वा, व्याक्रोशं क्षत्रियो यदि ॥
कुरुते भूपतिर्दंडं, देयात्तं मुद्रिकाशतैः ॥ १ ॥

अर्थ– आ ब्राह्मण चोर छे, एम कहीनेज्यारे क्षत्रीय आक्रोश करे त्यारे राजाए तेनो सो मोहोरोनो दंड करवो.

वैश्याक्रोशे तदर्धं स्या-च्छूद्राक्रोशे च विंशतिः ॥
क्षत्राक्रोशे तु क्षत्रस्य, दंडः स्याद्द्वितीयांशतः ॥१॥

अर्थ– वैश्यनो आक्रोश करते छते तेथी अरधो दंड करवो, शूद्रना आक्रोश बदले वीस मोहोरोनो दंड करवो, अने क्षत्री जो क्षत्रीनो आक्रोश करे तो द्वितीयांश एटले अरधो दंड थाय.

ब्राह्मणेन द्विजाक्रोशे, आक्रुष्टे क्षत्रियेऽपि च ॥
सम एवोनपञ्चाशि, चत्वारिंशत्पणः सदा ॥ १ ॥

अर्थ– ब्राह्मण जो द्विजनो आक्रोश करे, क्षत्रीयनो आक्रोश करे, तो बन्नेनो तुल्य दंड एटले चालीस पणनो आपवो.

वैश्याक्रोशे तु विप्रस्य, पणानां पंचविंशतिः ॥
शूद्राक्रोशे भवेत्तस्य, दंडस्तु दशभिः पणैः ॥ १ ॥

अर्थ- वैश्यनो आक्रोश करते छते ब्राह्मणनो पचीस पणोनो दंड थाय, अने शूद्रनो आक्रोश होते छते दश पणोनो दंड थाय.

वैश्येन ब्राह्मणाक्रोशे, मुद्रासार्धशतैर्दमः ॥
क्षत्राक्रोशे तदर्धः स्या च्छूद्राक्रोशे ततोऽर्धकः ॥१॥

अर्थ- वैश्यथी ब्राह्मणनो आक्रोश होते छते दोढसो मोहोरोनो दंड थाय, क्षत्रीनो आक्रोश होते छते तेथी अर्ध थाय, अने शूद्रनो आक्रोश होते छते तेथी पण अर्ध थाय.

वैश्याक्रोशे तु वैश्यस्य, पणैस्त्रिंशद्भिरीरितः ॥
शूद्रेण ब्राह्मणाक्रोशे, दंडः स्यात्ताडनादिभिः ॥१॥

अर्थ- वैश्यनो जो वैश्य आक्रोश करे, तो त्रीस पणोनो दंड थाय, शूद्रथी जो ब्राह्मणनो आक्रोश थाय, तो ताडन आदिकथी दंड थाय.

क्षत्राक्रोशे शतं सार्धं, वैश्याक्रोशे तदर्धकम् ॥
शूद्रेण शूद्राक्रोशे तु, पणानां पंचविंशतिः ॥ १ ॥

अर्थ- क्षत्रीना आक्रोश वखते दोढसोनो, वैश्यना आक्रोश वखते तेथी अर्ध, शूद्रथी जो शूद्रनो आक्रोश थाय तो पचीस पणोनो दंड थाय.

जातिदोषं वदेन्मिथ्या, ब्राह्मणे क्षत्रिये विशि ॥
स तु, दंडमवाप्नोति, वेदाब्धिद्विपणैः क्रमात् ॥ १ ॥

अर्थ- ब्राह्मण, क्षत्रीय अने वैश्यप्रते जे फोगट जातिदोष बोले तेने अनुक्रमे चार, सात अने बे पणोनो दंड थाय.

धर्मार्थमुपदेशं हि, दातुं यस्याधिकारिता ॥
तामुल्लंघ्योद्यतस्योप-देशे दंडः शतैर्भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ– जे माणसने धर्मोपदेश करवानो अधिकार ठे, तेने उल्लंघीने जे उपदेश देवानो उद्यम करे, तेनो सोनो दंड थाय.

तिथिवारादिकं सर्व-श्रुतं जातिं मतं मदात् ॥
अन्यथा वदतो दंडो, जिह्वाछेदसमो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ– तिथि, वार, आदिक सघलुं ज्ञान, जाति, तथा मतने मदथी जे जूठुं बोले, तेनो जिह्वा छेदन सरखो दंड थाय.

बधिरांधखंजकुष्ठयादीन्, दोषदुष्टान् तथैव च ॥
यो ब्रूते सदोषवाचा, स स्याद्दंड्यः पणैस्त्रिभिः ॥१॥

अर्थ– बहेरा, आंधला, लंगडा, तथा कुष्टि आदिकोने, तेम दूषणोवालाओने जे माणस दूषणसहित वाणीथी बोले ठे, तेनो त्रण पणोनो दंड करवो.

आचार्यं पितरं बंधुं, मातरं वनितां गुरुम् ॥
विपरीतं वदन् दंड्यः, पणैर्युग्मशतोन्मितैः ॥ १ ॥

अर्थ– आचार्यने, पिताने, बंधुने, माताने, स्त्रीने अने गुरुने जे विपरीत रीतिथी बोले तेनो बसो पणोनो दंड करवो.

इत्थं समासतः प्रोक्तं, वाक्पारुष्यं यतो जनाः ॥
प्रवदेयुर्हितं तथ्यं, वाक्यं प्राणिप्रियं मिताम् ॥ १ ॥

अर्थ– एवी रीते टुंकामां वचनपारुष्यनुं स्वरूप कह्युं, के जेथी माणसोए, हितकारी, सत्य, प्राणीओने प्रिय लागे तेवुं, तथा परिमित वचन बोलवुं.

॥ इति वाक्पारुष्य प्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ समयव्यतिक्रांति प्रकरणं प्रारभ्यते ॥

प्रणिपत्य मुदा शांतिं, शांतं शांताशिवं शिवम् ॥
निगद्यतेऽत्र समय-व्यतिक्रांतिर्नृसंविदे ॥ १ ॥

अर्थ- शांत, नाश करेल छे, अशिव एटले दुःख जेमणे, तथा मोक्षरूप एवा श्रीशांतिनाथ प्रभुने हर्षथी नमस्कार करीने अहीं माणसोना ज्ञान माटे समयव्यतिक्रांतिनुं स्वरूप कहेवाय छे.

पूर्वना प्रकरणमां वचनपारुष्यनुं एटले वचननी कठोरतानुं स्वरूप कह्युं. अने ते होते छते क्रोधादिकना आवेशथी, समयव्यतिक्रांतिनो संभव थाय छे, माटे हवे तेनुं स्वरूप कहे छे.

स्थितिर्हि नैगमादीनां, समय इति कथ्यते ॥
तस्य चोल्लंघनं ज्ञेया-व्यतिक्रांतिर्विवादभूः ॥ १ ॥

अर्थ-नैगमादिकोनी जे स्थिति तेने समय कहेवाय छे, अने तेना उल्लंघनने विवादना स्थानकरूप एवी "समयव्यतिक्रांति" जाणवी.

सदा सामायिकं धर्मं, स्वधर्ममपरित्यजन् ॥
पालयेदतियत्नेन, भूपोऽन्योऽपि च मानवः ॥ १ ॥

अर्थ- राजाए अने बीजा मनुष्ये पण पोतानो धर्म नहीं छोडीने तुल्य (सार्वजनिक) धर्म अत्यंत यत्नपूर्वक पालवो.

समुदायस्य राज्ञां च, धर्मः सामायिकः स्मृतः ॥
तमतिक्रमतो दंडो, व्यवहारपदे भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ- समुदायना अने राजाओना धर्मने सामायिक कहेलो, अने तेना अतिक्रमणथी न्यायमार्गमां दंड थाय. ते कहे छे.

साधारणं च यद्द्रव्यं, तच्चरेल्लंघयेत्पुनः ॥
गणभूपस्थितिं तं च, सर्वं हृत्वा प्रवासयेत् ॥ १॥

अर्थ– जे माणस साधारण द्रव्यनुं हरण करे, अथवा जनसमुदायनी अने राजानी स्थितिने उल्लंघे, ते माणसनी सर्व मिल्कत हरीने, तेने देशपार करवो.

समूहनी अंदर हितवादिनुं वचन सर्व माणसोए अंगीकार करवुं, नहींतर तेनो दंड थाय, ते कहे छे.

हितवादिवचो मान्यं, समूहे तत्स्थितैः परैः ॥
विपरीतो हि दंड्यः स्या-ज्जघन्येन दमेन च ॥ १ ॥

अर्थ– समूहनी अंदर तेमां रहेला बीजां माणसोए हितवादिना वचनने मानवुं, अने तेथी विपरीत चालनारा माणसनो जघन्यथी दंड करवो. (बृहदर्हन्नीतिमां पण कह्युं छे के)

" हियवाइस्सय वयणं जो हाडु मणइ तत्थवितद्वाहे सो होइ दंडणिज्जोपढमदमेणं सुणिचंवि ॥ १ ॥

हवे समुदायनुं कार्य करनाराओनो केवी रीते सत्कार करवो ? ते कहे छे.

कार्यसिद्धिं विधायाशु, गणकार्यसमागतान् ॥
सत्कार्य दानमानाद्यै, र्महीनाथो विसर्जयेत् ॥ १ ॥

अर्थ– तुरत कार्यसिद्धि करीने, गणकार्यमाटे आवेला माणसोनो दानमानादिकथी सत्कार करीने राजाए तेओने विसर्जन करवा.

हवे गणकार्यमाटे ते समाजना माणसोए जेने प्रेरणा करी होय तेथी अथवा पोते राजापासे गयो होय, अने त्यांथी केटलुंक सुवर्णादिक मळे, ते सुवर्णादिक माटे जो समाजना शेठीयाओने निवेदन न करे, तो तेनो दंड थाय. ते कहे छे.

स्वयं समर्पणीयं त-द्गणकार्यगतेन यत् ॥
लब्धं सो ह्यन्यथा दंड्य-स्ततो दशगुणेन वै ॥१॥

अर्थ- गणकार्यमाटे गएला माणसने जे कंइ मळ्युं होय, ते तेणे पोते (गणने) समर्पण करवुं, अने जो तेम ते न करे, तो तेनो तेथी दशगणो दंड करवो.

हवे समूहकार्य करनारा केवा माणसो होवा जोइए ? ते कहे छे.

धर्मिणः प्रतिज्ञायुक्ताः, शुचयो लोभवर्जिताः ॥
कार्यदक्षा निरालस्या, वस्तुशास्त्रविशारदाः ॥ १ ॥
कुलशुद्धाः सर्वमान्याः, कार्यचिंतासमाहिताः ॥
माननीयं वचस्तेषां, सर्वैस्तद्वचसंस्थितैः ॥ २ ॥

अर्थ- धर्मी, बुद्धिवान, पवित्र, लोभविनाना, कार्यमां चतुर, आलसविनाना, घणां शास्त्रोमां पारंगामी, शुद्ध कुळवाळा, सर्वने मानवालायक, तथा कार्यना विचारमां सारी रीते जोडाएला, एवा ते माणसोनुं वचनसमूहमां रहेला सर्व लोकोए मानवुं जोइए.

वणिग्जश्रेणिपारांगि-प्रभृतीनामयं विधिः ॥
नृपो रक्षेच्च तद्भेदं, पूर्वरीतिं प्रचालयेत् ॥ १ ॥

अर्थ- वणिज एटले लोको, श्रेणि एटले कारीगरी आदिवाळा, तथा पारांगिआदिकोनेमाटे आ विधि छे. तेओनी वच्चे भेदनुं राजाए रक्षण करवुं, अने पूर्वनी रीति चलाववी.

एवं प्रोक्ताय समय-व्यतिक्रांतिः समासतः ॥
विशेषस्तु जिनेंद्रोक्तो, विशेषाचारसागरात् ॥ १ ॥

अर्थ- एवी रीते आ टुंकामां समयव्यतिक्रांतिनुं स्वरूप कह्युं, तेनुं विशेष ज्ञान माणसोए बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति समयव्यतिक्रांतिप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ स्त्रीग्रहप्रकरणमभिधीयते ॥

नत्वा श्रीकुंथुतीर्थेशं, स्वांतध्वांतनिवारकम् ॥
परस्त्र्याकर्षणाख्योऽयं, विवादो वर्ण्यतेऽधुना ॥ १ ॥

अर्थ– अंतरंग अंधकारने निवारनारा एवा श्रीकुंथुनाथ प्रभुने नमस्कार करीने हवे " परस्त्रीआकर्षण " नामनो विवाद अहीं वर्णवाय छे.

पूर्वना प्रकरणमां समयव्यतिक्रांतिनुं स्वरूप कह्युं. ते होते छते स्त्रीग्रहादिक दोषो पण प्रगट थाय छे, अने तेथी अहीं स्त्रीग्रह दोषनुं व्याख्यान कराय छे.

परांगनासमासक्तं, न रुंध्याच्चेन्नरं नृपः ॥
महत्पापविभागः स्या-द्राष्ट्रनाशो भवेत्पुनः॥१॥

अर्थ– परस्त्रीमां आसक्त थएला माणसने जो राजा अटकावे नहीं, तो महान पाप थाय, तथा राज्यनो पण नाश थाय.

संततिर्यत्प्रसंगेन, जायते वर्णसंकरा ॥
तेन वर्णविनाशः स्या-त्तन्नाशे धर्मसंक्षयः ॥ १ ॥

अर्थ– जेना प्रसंगथी वर्णसंकरवाळी संतति थाय छे, अने तेथी जातिनो विनाश थाय, अने तेथी धर्मनो नाश थाय.

परांगनाभिः संलापो, यः कुर्याद्रहसि स्थितः ॥
स दंड्यो भूभुजा तूर्ण-मावेश्यस्तस्कराश्रये ॥ १ ॥

अर्थ– जे माणस गुप्त रहीने परस्त्रीसाथे [illegible] करे, तेनो राजाए तुरत दंड करवो, अने तेने केदखानामां [illegible].

अदृष्टपूर्व[illegible]भिर्यो, राजमार्गे [illegible] ॥
केनापि हेतुने[illegible] दंड्यो, न स्यात्सो तद्व्यतिक्रमः॥ १ ॥

अर्थ– पूर्वे जेणीने जोयली नथी, एवी स्त्रीउनीसाथे जे माणस राजमार्गमां कंईक कारणथी वात करे, तेनो दंड न थाय, केमके, तेथी न्यायनुं उल्लंघन नथी.

तीर्थे कूपे वने स्थाने, विजनेऽभिलपेन्नरः ॥
राज्ञा च सर्वथा दंड्यः, परिणामाश्रयो विधिः॥ १ ॥

अर्थ– तीर्थस्थाने, कुवापर, वनमां, अने एकांत स्थानमां जे माणस (परस्त्रीनीसाथे) वातो करे, तेनो राजाए सर्वथा प्रकारे दंड करवो. केमके, परिणामना आश्रयवालो विधि होय छे.

एकासनाशनं देहे, गंधलेपनमंबुना ॥
केली रहः संलपनं, तथा भूषणवाससाम् ॥ १ ॥
परिधानं स्वहस्तेनान्योन्यं स्पर्शनचुंबने ॥
सह खट्वासनं चेत-दुभयो र्दंडकारणम् ॥ २ ॥

अर्थ– (परस्त्रीसाथे) एक आसने वेसीने भोजन करवुं, शरीरपर गंधलेपन करवुं, जलक्रीडा करवी, गुप्त रीते बोलवुं, तथा पोताने हाथे वस्त्राभूषणो पेहेरावबां, अरसपरस स्पर्श अने चुंबन करवुं, साथे खाटलापर वेसवुं, ते सघलां कारणो बन्नेने दंड करवानां छे.

वर्णत्रयेषु यः कश्चित्, सेवेत ब्राह्मणीं यदि ॥
छित्वा लिंगं महीपस्तं, देशान्निर्वासयेत्वरम् ॥ १ ॥

अर्थ– त्रणे वर्णोमानो कोइपण माणस जो ब्राह्मणीनुं सेवन करे, तो राजाए तेनुं लिंग छेदीने तेने तुरत देशपार करवो जोइए.

ब्राह्मणीमपि कृष्णास्यां, कारयित्वा च भ्रामयेत् ॥
पुरे स्वानुचरैर्नृपः, पुनर्निष्कासयेद्बहिः॥ १ ॥

अर्थ– ब्राह्मणीने पण तेणीनुं कालुं मुख करावीने, राजाए

पोताना माणसोसहित नगरमां जमाडवी, तथा पछी तेणीने बहार कहाडी मेलवी.

ब्राह्मणो यदि सेवेत, क्षत्रियां नृपिपस्तदा ॥ १ ॥
ज्ञात्वा चरित्रं तद्दूतै-रुर्जौ निष्कासयेत्पुरात् ॥ १ ॥

अर्थ— जो कोइ ब्राह्मण क्षत्रियाणीने सेवे, तो राजाए दूतो मारफते तेनुं चरित्र जाणी, ते बन्नेने नगरमांथी कहाडी मेलवा.

बंदिचारणशैलूषा-दीक्षिताः कारवस्तथा ॥
ये सज्जयंति स्वा नार्य-स्तत्स्त्रीभिर्जल्पणं नराः॥ १ ॥
कुर्वंतो न निवार्याः स्यु, राजलोकनरैः कदा ॥
प्रायशो वृत्तिरेतेषां, स्त्र्याधीना प्रथिता भुवि ॥ २ ॥

अर्थ— बंदि, चारण, भाट, दीक्षितो, तथा कारीगरो, के जेओ पोतानी स्त्रीओने सजी राखे छे, ते स्त्रीओनी साथे भाषण करनारा पुरुषोने राजलोकोए कदापि पण निवारवा नहीं, केमके प्रायें करीने तेओनी वृत्ति जगतमां स्त्रीआधीन छे, एम प्रसिद्ध छे.

कन्यांगे विकृतिं या स्त्री, कुर्यात्तच्छीर्षमुंडनम् ॥
कारयित्वांगुलिच्छेदं, चैनां निष्कासयेत्पुरात् ॥ १ ॥

अर्थ— जे स्त्री छोकरीना अंगे कंइ विकृति करे, अथवा तेणीनुं मस्तक मुंडावी नाखे, ते स्त्रीनी आंगली कापीने, तेणीने नगरमांथी बहार कहाडी मेलवी.

स्ववंशगुणदर्पेण, भर्तारं या न मन्यते ॥
तां भिन्नां स्थापयेद्भूपो, न पुनर्दर्शयेत्पतिम् ॥१॥

अर्थ— पोताना वंशना गुणना अहंकारथी जे स्त्री भर्तारनी

आज्ञा मानती नथी, तेणीने राजाए जुदी राखवी, अने तेणीने पतिदर्शन कराववुं नहीं.

परस्त्रीं सेवते कोऽपि, विजातीयां च भूमिभृत् ॥
तद्वृत्तं चैरशीला, दंडयित्वा विवासयेत् ॥ १ ॥

अर्थ– जे कोइ माणस विजातिनी परस्त्री सेवे, तेनो ते वृत्तांत (पोताना) गुप्त पुरुषो मारफते जाणीने, राजाए तेने दंडीने देशपार करवो.

क्षत्रब्राह्मणवैश्यानां, स्त्रीयं कन्यां निषेवते ॥
दंड्यो हि द्विजातेनायं, लिंगभेदः परः स्मृतः ॥ १ ॥

अर्थ– क्षत्रीय, ब्राह्मण अने वैश्यनी स्त्री अथवा कन्याने जे माणस सेवे, तेनो घणोनो दंड करवो, तथा बीजाओए तेनमाटे लिंगभेदनी पण शिक्षा कहेली छे.

दंड्यो द्विजो द्विजां गच्छन्, सहस्ररजतैर्नृपेत् ॥
क्षत्रियः क्षत्रियां गच्छन्, दंड्यो युग्मसहस्रकैः ॥ १ ॥

अर्थ– ब्राह्मणीनी साथे आडो व्यवहार राखनार ब्राह्मणनो एक हजार रुपिआनो दंड करवो, तथा क्षत्रियाणीनी साथे आडो व्यवहार राखनार क्षत्रियनो बे हजार रुपिआनो दंड करवो.

सेवेत वैश्यां वैश्यो, दंड्यश्चतुःशतद्रम्मैः ॥
शूद्रस्तु शूद्रासेवी चे-न्निष्कास्यो भूभुजा पुरात् ॥१॥

अर्थ– वाणीओ जो वाणीआणीने सेवे तो तेनो चारसो द्रम दंड करवो अने शूद्र जो शूद्रीने सेवे, तो राजाए तेने नगरमांथी कहाडी मेलवो.

शूद्रासेवकवैश्योऽपि, दंड्यः स्याच्छतराजतैः ॥
द्विजः शूद्रानुचारी चेन्निर्वास्यो नगराद्बहिः ॥१॥

अर्थ- शूद्रीने सेवनार वैश्यने पण ए ज शिक्षा दंड करवो. शूद्रीने सेवनार ब्राह्मणने नगरनी बहार कहाडी मेलवो.

चतुर्वर्णजनोऽकृतमपराधं समीक्ष्य चेत् ॥
नृपो न वारयेद्दंड- तर्जनाताडनादिभिः ॥ १ ॥
तदा सर्वापराधानां, नृपः स्वामी भवेत्खलु ॥
ततो राष्ट्रेऽतिदुःखं स्या-दीतिदुर्भिक्षमृत्युजम् ॥ २ ॥

अर्थ- चारे वर्णना माणसोमां करेल अपराध अपराधने जोईने पण जो राजा ते दंड तर्जना, अने ताडनादिकथी निवारे नहीं, तो सर्व अपराधोनो स्वामी राजा थाय छे. अने तेथी राज्यमां ईति, दुकाळ अने मृत्युथी थतुं दुःख थाय छे.

कडोनी बाबतमां, तथा व्यभिचारना संबंध पण स्त्रीनो रहीने जोइने अहीं कयो प्रथम बुद्धिवाळो माणस तेनी प्रीति करे? कोइनी भूमि, गृह अने मिलकती जोइने पडावनारनो स्त्रीना मंदिरने जोइने पंडित माणसो तेणीने दूरथी ज तजे छे.

आवा प्रकारे पोतानुं हित इच्छनार डाह्या पुरुषोए, बीजानी परस्त्रीनो त्याग करवो, केमके परस्त्रीना पापथी रावणादिको नाश पाम्या छे.

इत्येवं वर्णिता नारी-गुप्तदंडा समासतः ॥
विज्ञेया कुशलैर्नीति- शास्त्राद्दोषण आदरात् ॥ १ ॥

अर्थ- ए रीते टुंकामां स्त्रीदंडनो विचार वर्णन कर्युं. हवे विस्तारपूर्वक कुशलैर्नीति नामना शास्त्रथी आदरपूर्वक जाणी लेवुं.

॥ इति स्त्रीदंडप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ ऋणप्रकरणं प्रारभ्यते ॥

प्रणम्यादौ श्रीयुग- [illegible] ॥
आदरादं ऋण [illegible] ॥ १ ॥

अर्थ– लक्ष्मीयें करीने युक्त, तथा अंतरंग शत्रुर्उनो नाश करनारा एवा श्री अरनाथ प्रभुने नमीने, आगममां लख्याप्रमाणे उपायमार्गमां द्यूतनुं एटले जुगारनुं स्वरूप हुं कहीश.

पूर्वना प्रकरणमां स्त्रीप्रदत्तुं स्वरूप कह्युं. अने तेथी व्यसनोनां सहचारीपणाथी हवे द्यूतनुं एटले जुगारनुं स्वरूप कहे छे. हवे तेमां प्रथम द्यूतनुं एटले जुगारनुं स्वरूप कहेवाय छे. हाथी, घोडा, गुलाम, मेंढां, बकरां, पक्षी, कुकडा तथा द्रव्यादिकनी शरतप्रमाणे जे क्रीडा करवी ते " द्यूत " एटले जुगार कहेवाय छे.

आ जुगारनी रमत राजाए निर्मित करेलां सन्निकस्थानमां थाय छे, ते वखते ते सन्निकस्थाननो उपरी जुगार रमवामाटे आवेला चारे वर्णोना लोकोने मिष्ट वचनोथी विश्वासी करीने, तथा खानपान आदिकथी खुशी करीने, सप्रतिबंधकता अने अप्रतिबंधकताथी जुगार रमाडे छे. (जो तुं सो मुद्रिका जीतसे, तो हुं तेमांथी वीस मुद्रिका लेइश, तेनुं नाम सप्रतिबंधकता जाणवी. अने दर सेंकडे हुं राज्यना धाराप्रमाणे पांच मुद्रा लेइश, तेनुं नाम अप्रतिबंधकता जाणवी.) राजानी अनुमतियी पोताना द्रव्यथी कोइ जुगारखानुं बंधावे छे, अथवा राजाना द्रव्यथी पण जुगारखानुं बंधावाय छे, ते देखाडे छे.

स्वकीये राजकीये वा, स्थाने आगतमानवान् ॥
क्रीडयेदशनाद्यैश्च, तोपयन्नजितो मुदुः ॥ १ ॥

अर्थ– पोताना अथवा राजाना जुगारखानामां आवेला माणसोने (ते जुगारखानानो) उपरी वारंवार (जुगारीर्उने) भोजन आदिकथी खुशी करतो थको जुगार रमाडे छे.

ते जुगारखानानो उपरी जीत पामेला जुगारीर्उनुं परस्पर थता झगडाथी रक्षण करे छे, अने तेम करीने राज्यभाग अथवा पोतानो भाग मेलवे छे.

वली ते जुगारखानाना उपरीए राज्यजाग तुरत विलंबविना हमेशां राजाने सोंपी देवो अने पोताना जागथी कंइपण उपद्रवविना तेणे पोताना कुटुंबनुं पालन करवुं.

हारजीत थयाथी ते जुगारखानामां कदाच जो परस्पर क्लेश थाय, तो तेनो विचार करीने जितेलुं द्रव्य हारेला माणसपासेथी जीतनारने ते उपरीए अपाववुं. अने तेम करतां जो ते अपाववामां पोते अशक्त थाय, तो ते बाबतथी राजाने वाकेफ करीने, ते द्रव्य जीतनारने अपाववुं, के जेम कर्याथी फरीने तेवी हानि थाय नहीं.

जुगारखानुं जो राजातरफनुं होय, तो जुगारीउनुं लुच्चाउथी रक्षण थइ शके छे, माटे तेवा राज्यना जुगारखानामां हमेशां जुगारनी क्रीडा करवी उचित छे.

गुप्त रीते पोताना घरमां जे माणसो जुगार रमे, तेनी पासेथी जुगारखानाना उपरीए बमणो राजजाग लेवो, अने पोतानो जाग पण निर्णयपूर्वक लेवो.

आ जुगारनी क्रीडा आ दुनीआमां सर्व व्यसनोमां मुख्य छे, तथा नकरगति अने तिर्यंच गतिनी तो एक दासी छे, माटे उत्तम माणसोए ते जुगारनी क्रीडानुं स्मरण पण करवुं नहीं.

इत्थं समासतः प्रोक्ता, द्यूतव्यवहृतिर्मया ॥
संसारस्योपकाराय, जाग्याधिक्यप्रकाशिका ॥ १ ॥

अर्थ— एवी रीते संसारना उपकारमाटे जाग्योनी अधिकताने प्रकाशनारी एवी द्यूतक्रीडानुं स्वरूप में अहीं टुंकामां कह्युं.

॥ इति द्यूतविधिप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ स्तैन्यप्रकरणं प्रारभ्यते ॥

प्रणम्य श्रीयुतं मल्लिं, मल्लं मोहादिताडने ॥
स्तैन्यप्रकरणं वक्ष्ये, समुद्धृत्य श्रुतादहम् ॥ १ ॥

अर्थ– लक्ष्मीवाळा, तथा मोहादिकने ताडन करवामां मल्लसमान, एवा श्रीमल्लिनाथ प्रभुने नमस्कार करीने, हवे हुं शास्त्रोमांथी उध्धार करीने चोरीनुं प्रकरण कहीश.

पूर्वना प्रकरणमां द्यूतनुं एटले जुगारनुं वर्णन कर्युं. तेमां हारी गएलो कोइ माणस चोरी पण करे छे, तेथी अने व्यसनोना मध्यचारीपणाथी हवे स्तैन्यना एटले चोरीना वर्णननो अधिकार कहेवाय छे.

नृपतेः परमो धर्मः, स्वप्रजापालनं सदा ॥
स्तैन्यादिभ्यो यतः कीर्ति-र्विस्तृता स्याद्दिगंतरे ॥१॥

अर्थ– हमेशां पोतानी प्रजानुं चोरीआदिकथी पालन करवुं. ए राजानो मुख्य धर्म छे। के जेथी दिशाओमां कीर्तिनो विस्तार थाय छे.

प्रजाने सुख होवाथी राजाने सुख थाय छे, अने प्रजाने दुःख थवाथी राजाने पण दुःख थाय छे. एवुं जाणीने राजाए हमेशां प्रजाने जेम सुख थाय तेवो प्रयत्न करवो.

प्रजा जेटलुं दान पुण्य करे छे तेना पुण्यनो छठो भाग राजाने मळे छे, अने ते पुण्यना प्रभावथी राजाना भंडारनी हमेशां वृद्धि थया करे छे.

जे राजाओ उत्तम माणसोनुं पालन करे छे. अने दुर्जनोने शिक्षा करे छे, ते राजा देवलोकमां देव अने दानवोथी पूजाय छे.

वळी जे राजा लोभने वश थइ पोतानी प्रजापर कर नाखे छे, तथा अल्प अपराधमाटे जे मोटो दंड ले छे, तेवो राजा अघोर नरकमां जाय छे.

जे राजा चोरोनो अने धूर्तोनो नाश करे छे, अने न्यायनी रीतिथी प्रजानुं पालन करे छे, ते राजाने तुरत स्वर्ग मळे छे.

उत्तम राजाए हमेशां पोतानी प्रजापर दया राखवी जे

तेम बालक, रोगी, वृद्ध अने नाटचारणोने वचनोथी खेद करवो जोइए नहीं.

जे माणस चोरी करीने कूवाउपरथी दोरडुं, घडो के घर लेइ जाय, तेने चाबुकथी ताडना करीने कहाडी मेलवो.

वली जे माणस चोरी करीने क्षेत्रमांथी धान्य छगावी जाय तेनो साधारण चोरथी दश गणो दंड करवो, तेम तेने देशपार पण करवो.

जे शक्तिवान राजा चोरोनुं वृत्तांत अने तेथी थता प्रजाना दुःखने जाण्या छतां पण तेनो उपाय करतो नथी, ते राजा खरेखर दुर्गतिमां जाय छे.

जे माणस सुवर्ण, रूपुं तथा वस्त्रादिकनी चोरी करे, ते माणस पासेथी तेना मालिकने ते वस्तुओनुं वाजबी मूल्य अपाववुं अने ते चोरने बे वर्षसुधी केदखानामां नाखवो.

जे माणस लोकोनां बालकोनी तथा कन्यानी चोरी करे तेने चार वर्षसुधी राजाए केदखानामां राखवो.

वली ते दरम्यान केदखानामां जो ते सारी रीते वर्ते तो तेनी एक वर्षनी सजा कमी करवी. अने तेम करतां छतां पण जो ते बीजीवार तेवी चोरी करे, तो तेने छ वर्षना केदखानानी सजा करवी.

जे माणस, शास्त्र, औषध, गाडी, तथा घोडा विगेरेनी चोरी करे, ते माणसपासेथी ते वस्तुओनी वाजबी किंमत लेइने तेना मालिकने अपाववी, अने ते चोरने कारागृहमां एटले केदखानामां नाखवो.

वली जे माणस, घी, गोल, दूध, दही, साकर, [illegible], लवण, माटी, तेल, आदु, पकवान, फूल, कंदमूल तथा पत्र आदिकनी चोरी करे, तेने त्रण ऋतुसुधी एटले छ माससुधिना केदखानानी सजा करवी.

कोइ वर्णोमांनो कोइपण माणस जो देवस्थानना धननी चोरी करे तेने राजाए [illegible] घोर शिक्षा करवी.

जे माणस घरमां खातर पाडीने बलात्कारे द्रव्यनुं हरण करे, ते माणसपासेथी ते द्रव्य तेना माळीकने अपाव्याबाद ते चोरने नगरमांथी कहाडी मेलवो.

जे माणस जनोइ आदिकमाटे तैयार करेलां सुतरनुं हरण करे, तेने राजाए एक मासना केदखानानी सजा करवी.

स्त्री, पुत्र, मित्र, माता, पिता, शिष्य के पुरोहित, तेओमांथी जे कोइ पोताना धर्मथी विपरीतपणे आचरण करे, तेओने राजाए वचनथी ठपको देवो.

केदखानानो जे उपरी माणस लोभथी केदीओने छोडी आपे, अने छुटेलाओने केदमां राखे, तथा जे माणस दासी आदिकनुं हरण करे, तेओने राजाए केदखानानी सजा करवी.

जे राजा चोरोना उपद्रवथी प्रजानुं रक्षण करे छे, ते राजा आ लोकमां यश पामे छे, अने परलोकमां स्वर्ग मेळवे छे.

दुष्ट वचनो बोलनारा, चोर, कपटी, ठगारा, धाड पाडनारा, धाड पाडनाराओने, लुंटाराओने, तथा जुगारीओने, भोजन तथा निवासस्थान आपनारा, एटलाओने राजाए केदखानामां नाखवा.

मित्रतापणथी, लोभथी, के बीजाना कहेवाथी जे राजा अन्याय करे छे, तेनो अहीं मोटो अपयश थाय छे, अने परलोकमां ते नरकगामी थाय छे.

गुरु, साधर्मी, पोतानो आत्मा, वृद्ध, स्त्री तथा बाळकने मारवाने तत्पर थएला चोरने जोइने जो कदाच ब्राह्मण शस्त्र धारण करे, तो ते दोषित गणाय नहीं. आपणी आपदाने निवारण करवुं, ते वखते धर्मने लजवो नहीं तेम घात करनार धनतांगुथी प्राणो हरवां नहीं.

एवी रीते राजाए हमेशां चोर आदिकोना उपद्रवथी सर्व प्रजानुं रक्षण करवुं, के जेथी ते प्रजा पोताना धर्मकार्यमां तत्पर रही शके.

इत्थं समासतः प्रोक्तं, स्तैन्यप्रकरणं वरम् ॥
ज्ञेयो विशेष श्चैतस्य, श्रुतपायोधिमध्यतः ॥ १ ॥

अर्थ— एवी रीते टुंकामां उत्तम एवुं चोरीनुं प्रकरण कर्युं, तेनुं विशेष वर्णन बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति स्तैन्यप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ साहसप्रकरणं प्रारम्यते ॥

नत्वा श्रीसुमतं देवं, दुःखानलपयोधरम् ॥
राजनीत्यनुसारेण, वक्ष्ये साहसिकं क्रमम् ॥ १ ॥

अर्थ— दुःखोरूपी अग्निने ठारवामां वरसादसमान एवा श्री मुनिसुव्रत स्वामीने नमस्कार करीने, राजनीतिने अनुसारे हवे हुं अहीं साहसनुं प्रकरण कहीश.

पूर्वेना प्रकरणमां चोरोना दंडनुं स्वरूप कह्युं, हवे तेना सहचारीपणाथी साहसदंडनुं स्वरूप कहेवाय छे.

तेमां प्रथम साहसनुं स्वरूप कहे छे.

माणस क्रोधने वश थइने जे साहस करे छे, तेने आपदाना स्थानकरूप एवुं " साहस " पंडित लोको कहे छे.

हवे ते साहस त्रण प्रकारनुं छे. लघु, मध्यम, अने उत्तम. तेनो वधारे विस्तार बृहदर्हन्नीतिमां आपेलो छे. अने त्रियानी अपेक्षाए ते त्रणे साहसोमाटेनो दंड पण त्रण प्रकारनोज छे.

फलवृक्ष आदिकनी वस्तुओने छेदवी ते, तथा पाणीना बंध आदिकनो नाश करवो, तेने पहेलुं साहस कहेलुं छे.

खोरक वस्त्र पशु तथा शस्त्रादिक मादक अने पानादीकोना आहरणो ते चोरवां, तेने मध्यम साहस कहेलुं छे.

झेर तथा शस्त्रना प्रयोगादिकथी जे मारवो ते छे, तथा परस्त्रीगमनादिक जे प्राणघात करे छे, तेने उत्तम साहस कहेलुं छे.

एवुं साहस करनारनुं राजाए सर्वस्व हरी लेवुं, तेना अंगोने छेदवां, तथा वधबंधन करवुं, कपालमां डांज देवो, तथा तेने नगरमांथी पण कहाडी मेलवो.

परनुं द्रव्य हरनारने, ते द्रव्यना मूल्यथी बमणो दंड करवो, परनुं द्रव्य जो छपापत करे तो चोगणो दंड करवो, अने चोरीनी प्रेरणा करनारने एकगणो दंड करवो.

जे माणस पूज्योनुं अपमान करे, भाइनी स्त्रीने दुःख आपे, मागतुं नाणुं आपे नहीं, घरनुं तालुं भागी नाखे, क्षेत्र, तथा घरनी सीमानो भंग करे, अने तेम करी पारकी जमीन पोतानी जमीनमाथे मेलवी आपे, तेनो राजाए सो रुपीआ दंड करवो.

स्वछंदे चालनारी विधवा स्त्री, सज्जनोनीमाथे विरोध करनारो माणस, कारणविनाज कोइनी पण साथे क्लेश करनारो, उंच जातिनो स्पर्श करनारो चांडाल, देव तथा पितृसंबंधि अन्ननुं भोजन करनारो, शूद्र तथा दीक्षितोना अन्ननुं भोजन करनारो, जुआ अने अयोग्य सोगन खानारो, तथा अयोग्य कार्य करनारो, एटला माणसोनो राजाए दश रुपीआ दंड करवो, तथा तेने तेनी ज्ञातिथी दूर करवो, तथा प्रायश्चित्त कराव्याविना तेने पाछो ज्ञातिमां दाखल करवो नहीं.

बेल आदिक तीर्यचोना तथा घोडाउंना पुल्लिंगपणानो नाश करनार, गर्भ तथा दासोनुं हरण करनार एटलाउंने हमेशां बसो रुपीआनो दंड करवो.

भाइ, माता, बाप, बेहेन, गुरु, शिष्य, मित्र, तथा पुत्रोने जे प्रयोगथी वश करे छे, तेउंनो एकसो रुपीआ दंड करवो.

धोबी जो धोवामाटे लीधेलां परना वस्त्रो कोइने त्यां गीरवी मेले, तो तेनो दश रुपीआ दंड करवो; द्रव्यना लोभथी विवाह आदिक कार्योमां कोइनां उत्तम वस्त्रो जो कोइने भाडे पेहेरवा आपे, तो तेनो एक रुपीउ दंड करवो, उत्तम नवुं वस्त्र

राखी मेली जुनुं वस्त्र बदले आपे तो तेनो पांच रुपीआ दंड करवो. अने जो कोइ बीजी रीते वस्त्रनो नाश करे, तो तेना दोषप्रमाणे तेनो राजाए दंड करवो.

एकजवार धोएलुं वस्त्र जो धोबी नष्ट करे, तो तेना मालीकने ते वस्त्रना मूल्यमांथी आठमो भाग कमती मले, बेवार धोएलानी अरधी किमत मले, तथा त्रणवार धोएलांनी पा किमत मले, चार वार धोएलांनी पानी पण अरधी किमत मले, पण जीर्ण वस्त्र नष्ट थयाथी कंइ पण न मले.

पिता पुत्रवच्चे क्लेश थती वेलाए जे अधम माणस क्लेशने वधारवामाटे साक्षी आपे, पण तेउने क्लेशथी निवारे नहीं, ते साक्षीनो राजाए त्रण पण जेटलो दंड करवो.

॥ हवे कूट व्यापारना दंडनुं स्वरूप कहे छे.

जे माणस जुनां ताजवां तोलांथी कूट व्यापार करे, तेनो राजाए उत्तम साहसना प्रमाणमां दंड करवो. जे माणस खोटा सिका पाडे, अने तेवा खोटा सिकाउनो उपयोग करे, तेने राजाए गरदन सजा करवी जोइए.

जे माणस वैद्यक शास्त्रने जाण्याविना ठगाइथी एम कहे के, हुं वैद्य छुं, अने तेम करीने ते तिर्यंचोनुं औषध करे, तेनो लघुसाहसना प्रमाण जेटलो दंड करवो. तेवो माणस जो माणसोनुं औषध करे, तो तेनो मध्यम साहसना प्रमाण जेटलो दंड करवो. वली तेवो माणस जो राजाउनुं औषध करे, तो तेनो उत्तम साहसना प्रमाण जेटलो दंड करवो

अ- जे माणस मापनी वेलाए जाल अथवा कपटनो आठमो भाग
छ. तेनो बमणो दंड करवो.

आहरण. द्रव्य, धान्य, गोल, घी, औषध विगेरेमां कपटना लोकेर तथा. [illegible] करे, तेनो राजाए दश रुपीआ जेटलो दंड करवो.

हरणादिकमाटे [illegible] करीने गीरवेध माउनुं अदलबदलथी

वेंचाण करे, (एटले वस्तु बदलावीने, अथवा तेमां हलकी उंची वस्तुने बदले हलकी वस्तु भरीने, तेपर उंची वस्तु जणावनारुं सील करीने वेंचाण करे) तेनो राजाए मात रुपीआ दंड करवो.

परस्परसाथे मलीने जे व्यापारीओ वस्तुओनी किमत वधारी मेले, तेओनो राजाए उत्तम साहसना प्रमाण जेटलो दंड करवो.

एवं संक्षेपतः प्रोक्ता, साहसस्य च वर्णना ॥
यत्फलज्ञानतो लोकाः, स्युस्तत्त्यागसमुद्यताः ॥१॥

अर्थ– एवी रीते संक्षेपथी साहसप्रकरणनुं वर्णन कर्युं, के जेना फलना ज्ञानथी लोको तेना त्यागमां उद्यमवंत थाय छे.

॥ इति साहसप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ दंडपारुष्यप्रकरणमभिधीयते ॥

नत्वा नमि जिनं सम्यक्, धर्मतीर्थप्रवर्तकम् ॥
वक्ष्यामि दंडपारुष्यं, प्रजास्थितिनिबंधनम् ॥ १ ॥

अर्थ– धर्मतीर्थने प्रवर्तावनारा एवा श्री नमिनाथ प्रभुने स म्यक् प्रकारे नमस्कार करीने, प्रजानी स्थितिना कारणरूप एवुं दंडपारुष्य कहीशुं.

पूर्वना प्रकरणमां साहसदंडनुं निरुपण कर्युं. तेना सहचारीप णाथी हवे दंडपारुष्यनुं स्वरुप निरुपण कराय छे.

जेमाणस कोपथी परा पड कोइना अंगनु छेदन करे, ते माणसनुं ते अंग छेदीने राजाए तेने नगरमांथी बहार मेकलवो. बाप अने भानुना क्षत्रिय अने ब्राह्मणने माटे बनावेलां आसनपर जो कोइ वैश्य के शूद्र बेसे, तो ते वैश्यने वीस चाबुको, अने शूद्रने पचास चाबुकोनो मार मारवो, के जेथी न्यायमार्गनी मर्यादा संचवाय छे.

चारे वर्णमानो जे कोइ माणस कोइ उत्तम माणसने ठोकने, थुंके, अथवा हसे, तो तेनो दस रुपीआ दंड करवो.

कोइने मारी नांखवानी इच्छाथी जे कोइ माणस क्रोध के मदथी तेनी गरदन, वृषण, के मस्तक पकडे तेनो राजाए एक सोनामोहोर दंड करवो.

मांस कहाडनारनो चार सोनामोहोरनो, चामडी फाडनारनो दश रुपीआ, अने हाडकुं भांगनारनो वसोनो दंड करवो.

कोइना वगीचामां जइ जे माणस अहंकारथी कोइ वेलडीने उखेडी नाखे, अथवा तेमाना वृक्षनी डाल, पत्र, विगेरे त्रोडे तो तेनो दश रुपीआ दंड करवो.

पुष्पोनो नाश करनारनो तेथी दश गणो दंड करवो. वृक्षनो नाश करनार, तथा गायोनी चोरी करनार माणसने देशनिकाल करवो. टुंकामां जे माणस जेवी रीतनी नुकशानी करे, तेना प्रमाणमां तेनो दंड करवो.

जे माणसे जेने जखमी कर्यो होय, ते जखमी माणसमाटे औषध आदिकनुं जे कंइ खरच थाय ते सघलुं खरच ते जखम करनारपासेथी राजाए (तेना दंड उपरांत) वसुल करवुं जोइए.

कोइपण दुष्ट माणस जे माणसनुं अज्ञानताथी द्रव्य नष्ट करे, ते माणसनुं तेटलुं द्रव्य राजाए तेनीपासेथी अपाववुं जोइए.

साक्षीउथी पूरवार थया छतां पण जे करजदार माणस लेणदारने द्रव्य न आपे, ते करजदारपासेथी राजाए तेना मालिकने द्रव्य अपाववुं, अने तेनो उचित दंड पण करवो जोइए.

वाजित्रोनो नाश करनारनो दशगणो दंड जाणवो, तथा माटी अने काष्टनां वासणोनो नाश करनारनो पांच गणो दंड जाणवो.

मार्गे चालतां दुखडाउथी जो सारथी गाडीनो नाश करे, तो राजाए ते सारथीनो दंड करवो. अने अकस्मात थाय तो ते सारथीनो दंड करी शकाय नहीं.

वली तेवी रीते गाडी हांकतां अकस्मात जो ते गाडीथी परनी वस्तुने नुकशान थाय, तो सारथिनो दंड नहीं थतां, ते गाडीना

मालिके ते नुकशानी जरी देवी जोइएं, अने तेने माटे जो खास सारथीनोज दोष होय, तो राजाए तेनो पण दंड करवो जोइएं.

चीजां वाहनो, गायो के घोडाओथी जो मार्ग खीचोखीच ज-
…एलो होय, अने तेथी सारथी गाडी हांकवाने जो अशक्त थयो होय, अने तेथी राजाआदिकने जो रोकाण थाय, तो तेमां सारथीनो सर्वथा प्रकारे दोष नथी.

गाडी हांकतां थकां सारथीना प्रमादथी जो कोइना जीवनी हानि थाय, तो ते सारथिनो दंड थाय, पण जो अकस्मात तेम बने तो, ते सारथिनो दंड थाय नहीं.

तेवा संयोगमां प्रमादथी जो मनुष्यनुं (गाडी तले आववाथी) मृत्यु थाय, तो राजाए तेनो चोरना जेटलो दंड करवो, तथा गाय, हाथी, उंट, अने भेंस आदिकनो नाश होते छते ते गाय आदिकना माळीकनुं मन ते सारथिए मनावी देवुं जोइएं.

वळी ते उपरांत राजाए तेवा संयोगमां ते सारथीनो दंड पण करवो जोइएं के जेथी फरीने तेवो जीवहिंसा करनारो कोइ नीकळे नहीं.

चोरी करनारा एवा स्त्री, पुत्र, चाकर, भाइ विगेरे संबंधिनो पण न्यायी राजाए दंड करवो जोइए.

एषः समासतः मोक्तो, दंडपारुष्यनिर्णयः ॥
जीवमात्रे कृपादृष्टी, रक्षणीया मनीषिणा ॥ १ ॥

अर्थ– एवीरिते दंडपारुष्यनो निर्णय अहीं टुंकामां कह्यो, …ने एम विचारि बुद्धिवान माणसे सर्व जीवोपर दया राखवी.

…इत्याचार्य श्री हेमचंद्रविरचिते चौलुक्य वंशभूषण कुमार-… परमार्हद्भुपाल शुश्रूषिते लघ्वर्हन्नीतिशास्त्रे दंडपारुष्य प्र-… समासम् ॥ श्रीरस्तु.

॥ अथ स्त्रीपुरुषधर्म प्रकरणं विविच्यते ॥

नेमिं नत्वा मुदा नेमिं, सर्वारिष्टविभेदने ॥
स्त्रीपुंधर्मव्यवहृतिः, संक्षेपेणात्र वर्ण्यते ॥ १ ॥

अर्थ- सर्व प्रकारनां दुःखोने भेदवामां चक्रसरखा एवा श्री नेमिनाथ प्रभुने हर्षथी नमस्कार करीने अहीं स्त्री पुरुषना धर्मनो व्यवहार संक्षेपथी कहेवाय छे.

पूर्वना प्रकरणमां दंडपारुष्यनुं वर्णन कर्युं, अने ते दंड धर्मनी रक्षामाटे थाय छे, अने तेथी हवे स्त्री पुरुषना धर्मनी प्ररूपणानो अधिकार कहेवाय छे.

पित्रादयः स्वबुद्ध्या यं, सुंदरं प्रेक्ष्य कन्यकाम् ॥
दद्युः सा निर्गुणं चापि, पूजयेद्देववत्तकम् ॥ १ ॥

अर्थ- पोतानी बुद्धिथी मातपितादिक जे वरने उत्तम प्रकारनो जोइने तेने कन्या आपे, पछी ते वर कदाच निर्गुणी होय तोपण तेणीए तेने देवनी पेठे पूजवो.

भर्त्रापि मिष्टवचनैः, संतोष्या सा नवांगना ॥
पक्वान्नदधिदुग्धाद्यैः, पोषणीया निरंतरम् ॥ १॥

अर्थ- भर्तारे पण ते नवी परणेली स्त्रीने हमेशां मिष्टवचनोथी तथा, पक्वान्न, दहीं अने दूध आदिकोथी पोषवी.

बालत्वे रक्षकस्तातो, यौवने रक्षकः पतिः ॥
वृद्धत्वे सति सत्पुत्रः, स्त्री स्वाधीना भवेन्न हि ॥१॥

अर्थ- स्त्रीनुं बाल्यावस्थामां रक्षण करनार पिता होय छे, यौवनवयमां पति रक्षण करनार होय छे, वृद्धावस्थामां उत्तम पुत्र रक्षण करनार होय छे; माटे एवी रीते स्त्रीने स्वतंत्रता होय नहीं.

अतीचाराद्बुधैर्नित्यं, रक्षणीया कुलांगना ॥
सम्यग् रक्षिता नारी, नो भवेदतिमार्गगा ॥१॥

अर्थ– पंडितोए हमेशां कुलांगनानुं अतिचारथी रक्षण करवुं. अने सारी रीते रक्षित करेली स्त्री कुमार्गे जइ शकती नथी.

चतुर्थदिवसे स्नात्वे-क्षेतास्यं पत्युरेव च ॥
ऋतुस्नाने न पश्येत्स्त्री, परमर्त्यमुखं कदा ॥१॥

अर्थ– (ऋतुवंती थया पछी) चोथे दिवसे स्नान करीने स्त्रीए पतिनुंज मुख जोवुं, पण ऋतुस्नानने दिवसे स्त्रीए पारका मनुष्यनुं मुख कदापी पण जोवुं नहीं. (कहुं छे के)

स्नानकाले निरीक्षेत, सुरूपं च विरूपकम् ॥
पुरुषं जनयेत्पुत्रं तदाकारं मनोरमा ॥ १ ॥

अर्थ– स्नानवखते स्त्री जेवा सुरुपवाळा अथवा कुरूपवाळा पुरुषने जुए छे, तेवा आकारवाळा पुत्रने ते उत्पन्न करे छे.

यादृशं वाप्यते बीजं, क्षेत्रे कालानुसारतः ॥
तत्पर्यायगुणैर्युक्तं, तादृगुत्पद्यते फलम् ॥ १ ॥

अर्थ– काळने अनुसरीने खेतरमां जेवुं बीज ववाय छे, तेना पर्यायना गुणोवाळुं तेवुं फळ उत्पन्न थाय छे.

यद्यज्जातीय पुरुषं, यद्यत्कर्मकरं नरम् ॥
पश्यति स्नानकाले सा, तादृशं जनयेत्सुतम् ॥ १ ॥

अर्थ– जे जे जातिना अने जे जे काम करनारा माणसने स्नान समये ते स्त्री जुए छे, तेवाज पुत्रने ते जन्म आपे छे.

न स्पृशेद्वस्तुमात्रं हि, न भुंक्ते कांस्यभाजने ॥
गृहाद्बहिर्न गंतव्यं, देवतायतनेऽपि न ॥

शयीत न हि खट्वायां, पुष्टान्नं नैव जक्षयेत् ॥
आदर्शालोकनं नैव, ऋतौ कुर्यात्कुलांगना ॥ १ ॥

अर्थ– ऋतुसमये कुलवान स्त्रीए तमाम वस्तुने स्पर्श करवो नहीं, कांसाना वासणमां जोजन करवुं नहीं, घरनी बहार जवुं नहीं, तेम देवमंदिरमां पण जवुं नहीं, खाटलापर सुवुं नहीं, पुष्ट जोजन करवुं नहीं, तेम दर्पणमां पण जोवुं नहीं.

वली मर्दन आदिकथी शरीरनो संस्कार करवो नहीं, दांतपर काष्ठ आदिकनुं घर्षण करवुं नहीं, तेम दिवसे निद्रापण करवी नहीं.

चोथे दिवसे स्नानकरीने, तथा पोताना स्वामीनुं मुख जोइने, तथा उत्तम वस्त्रो पेहेरीने अने शृंगार सजीने क्षीरनुं जोजन करवुं.

वली ते दिवसे तेणीए चित्तनो विक्षेप तथा क्रोध करवो नहीं; उत्तम वस्त्रो अने अलंकारो पेहेरीने, तथा आंखोमां अंजन आंजीने, अने उत्तम प्रकारनां पुष्पो तथा सुगंधिथी शरीरने वासीत करीने शय्यापर पतिनीसाथे सुवुं.

समरात्रि होय तो पुत्र थाय, विषम होय तो पुत्री थाय, तेम वीर्यनी अधिकता होय तो पुत्र थाय, अने रुधिरनी अधिकता होय तो पुत्री थाय.

जीवनी उत्पत्ति माटे योनिने शाश्वती जूमिरूप कहेली छे, अने तेथी जूमिना आश्रयपणाथी बीजोनी पेठे जीवोनी उत्पत्ति थाय छे.

खेडुतो खेतरमां जे बीजो वावे छे, ते बीजो कालने अनुसारे पोतपोताना स्वजावथी अनेक रूपो वालां थाय छे. जेम के, जात, घउं, मग, चणा, कलथी विगेरे बीजो पोतपोताना पर्यायने अनुसारे थाय छे.

एक जातनां वावेलां बीजमांथी बीजी जातिनुं बीज थइ श-

फलुं नथी, केमके, जे माणस जेवुं बीज वावे छे, तेवुंज उत्पन्न थाय छे.

माटे शास्त्रोना अनुसारथी एवो विचार करीने माणसे परस्त्रीनी लालच करवी नहीं.

विधिए पुत्रनी उत्पत्तिमाटे स्त्रीने बनावी छे; अने भर्तारनी संपूर्ण सेवा करवी तेज स्त्रीओमाटे उत्तम धर्म कहेलो छे.

पतिनी सेवा, पुत्रोनी उत्पत्ति, ते पुत्रोनुं रक्षण, तथा घरनुं कामकाज एटलां कार्यो मुख्यत्वे करीने स्त्रीओने करवानां छे.

भर्तारना अर्ध अंग समान, तथा भर्तारनीज भक्तिमां तत्पर, अने भर्तारनेज प्रभुतरिके माननारी एवी स्त्रीने उत्तम पतिव्रता कहेली छे.

स्नेहनी विकलताथी, चलचित्तपणाथी, तथा दुष्ट स्त्रीओनी संगतीथी स्त्रीओ दुराचारी थाय छे, माटे स्त्रीने कुसंगमां पडवा देवी नहीं.

उत्तम स्त्रीए प्रयत्नपूर्वक पोताना कुलनी रीतिनुं रक्षण करवुं, के जेथी करीने बन्ने कुलमां मलीनता लागे नहीं.

देवयात्रामां, उत्सवमां, नाटकमां, चकलामां, जागरणमां, तथा क्लेशनी जगोए कुलवान स्त्रीए एकली जवुं नहीं.

पोतानुं शील साचववामां तत्पर एवी स्त्रीए स्नान, मर्दन, तैलादिकनुं अभ्यंगन, तथा लेपन आदिक कार्यो परने हाथे कराववां नहीं.

वली कुलवान स्त्रीए पोताना घरमाटे मालिका, जोगणी, दासी, स्वेच्छाचारी स्त्री, के कारीगरनी स्त्री साथे संग करवो नहीं.

स्त्रीधर्मरूपी वृक्ष उत्तम संगतथी वृद्धि पामे छे, माटे पुरुषोए स्त्रीओने उत्तम संगतमां रखावी तेओनुं रक्षण करवुं.

रूप अने लावण्यथी रहित थएली एवी स्त्री पुरुषोरूपी रत्नोने

उत्पन्न करनारी छे, माटे गृहस्थीओने खरेखर ते लक्ष्मीसमान छे. लक्ष्मीमां अने स्त्रीमां कशो पण तफावत नथी.

वळी उत्तम स्त्रीए, मध, तैल, एवुं जोजन, कोदरा, परतुं अन्न, अने अपवित्र अन्न तथा अडद खावा नहीं. तेम मार्गमां, राखना ढगपर, गोकुलमां, खेडेलां खेतरमां, स्मशानमां, पर्वतपर, देवस्थानमां, नदीपर, जीवजंतुवाळा खाडामां, सूर्य, अग्नि, के चंद्रना देवस्थान सन्मुख तेणीए मलोत्सर्ग करवो नहीं.

॥ अथ पुरुषधर्मः कथ्यते ॥

पुरुषे प्रसन्न चित्तवाळा थइने एकांतमां मनोहर प्रसन्न मनवाळी तथा स्नेहवाळी स्त्रीने पुत्रने माटे सेववी, पण काम माटे सेववी नहीं.

प्रसन्नताथी रहेलो गर्ज जाग्यशाळी निवडे छे, जेम स्वाति नक्षत्रथी उत्पन्न थएलुं मोती तेम.

उत्तम पुरुषे एकठां थएलां स्त्रीना टोळांने जोवा जवुं नहीं, तेम तेणीनी साथे एकज बिछानापर सुवुं नहीं.

जे दुर्बुद्धिमाणस पोतानी रजस्वला स्त्रीने सेवे छे, तेनी बुद्धि, कीर्ति अने यश तुरत नाश पामे छे.

स्त्रीनी साथे बेसीने उत्तम पुरुषे जोजन करवुं नहीं, तेम जोजन करती स्त्रीने जोवी नहीं, तेम बगासुं खाती, सुतेली, तथा अशौचक्रिया करती एवी स्त्रीने पण जोवी नहीं.

वळी उत्तम पुरुषे सूर्य अस्त थया बाद कंई पण खावुं नहीं, नग्न सुवुं नहीं, तेम एवे मोहोले क्यांयपण जवुं नहीं.

वेश्या, नपुंसको, सोनी, घटलेला, नीच, भ्रष्ट थएला, मदोन्मत्त, तथा गुन्हेगारोना पडोशमां उत्तम माणसे रहेवुं नहीं.

बन्ने हाथोथी मस्तक खणवुं नहीं, चांडाल आदिक नीचोनो स्पर्श करवो नहीं, तेम मस्तकने कोरुं रहेवा देइ स्नान करवुं नहीं.

संजोग कर्याबाद, उलटी कर्याबाद, चिताना धुंवाडानो स्पर्श

थया बाद, अत्यंत दुःख थयाबाद, तथा क्षौरकर्म (हजामत) कराव्याबाद उत्तम पुरुषे पवित्र जलथी स्नान करवुं.

एवी रीतना गुणोवाला, पोताना धर्ममां तत्पर, तथा उत्तम बुद्धिवान एवा पुरुषे ब्राह्ममुहूर्त समये उठीने पंच परमेष्टीनुं ध्यान धरवुं. पछी आवश्यक क्रिया (एटले हमेशनी क्रिया) करीने स्नानादिकथी पवित्र थइ प्रभुनी सेवा करवी. पछी गुरुने वंदन करीने, तथा धर्मशास्त्र सांभलीने पोताना उचित व्यापारमां जोडावुं.

उत्तम बुद्धिवान माणसे धर्मकार्यने जेम विरोध न आवे तेवी रीते आलस तजीने कुलोचित व्यापार करवो.

जे कार्य धर्मथी, राज्यथी, के लोकव्यवहारथी विरुद्ध होय ते कार्य उत्तम माणसे वीलकुल करवुं नहीं.

भोजन वखते गुरु आदिकने दान देइने भोजन करवुं, तथा पछी बे घडी आराम लेइ व्यापार करवो.

पछी ज्यारे दिवसनो आठमो भाग बाकी रहे त्यारे भोजन करीने विचक्षण माणसे आवश्यादिकनी क्रिया करवी.

स्त्रीपुंधर्मविचारोऽयं, समासेन निरूपितः ॥
सर्वजीवोपकाराय, लोकद्वयहितावहः ॥ १ ॥

अर्थ— एवी रीते सर्व लोकोना उपकारमाटे बन्ने लोकमां हितकारी एवो स्त्री पुरुषना धर्मनो विचार टुंकामां बताव्यो.

॥ इति स्त्री पुंधर्म प्रकरणं समाप्तम् ॥

इत्याचार्य श्री हेमचंद्रविरचिते चौलुक्यवंशभूषण परमार्हत्कुमारपाल नृपालशुश्रूषिते लघ्वर्हन्नीति शास्त्रे व्यवहारनीति वर्णनो नाम तृतीयोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ अथ प्रायश्चित्तं कथ्यते ॥

चिदानंदमयं योग-ध्यानतानैकलक्षितम् ॥
नष्टाष्टदुष्टकर्मारिं, श्रीपार्श्वं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥

अर्थ– चिदानंदमय, तथा योगना ध्याननां एकज तानथी लक्षित थएला, अने नाश करेल छे, आठ दुष्ट कर्मोरुपी शत्रुओने जेमणे एवा श्री पार्श्वनाथ प्रभुने हुं नमस्कार करुं छुं.

पूर्वना अधिकारना छेल्ला प्रकरणमां स्त्रीपुरुषना धर्मनुं निरुपण कर्युं. तेमांथी स्खलना थते छते प्रायश्चित्तनी आवश्यकता थाय छे, तेथी लौकीक प्रायश्चित्त लौकिक व्यवहारमां अंतर्गत थाय छे, अने ज्ञातिनो दंड नीतिरुप होवाथी नीतिना सहचारिपणाथी तेनुं वर्णन आ अधिकारमां कराय छे.

जे माणस मातंग, यवन तथा म्लेच्छादिकना सहवासमां आवी तेमनी साथे भोजन करे तेने नीचे प्रमाणे प्रायश्चित्त लागे.

पचास उपवास, पचास एकासणा, पांच तीर्थयात्रा, पांच स्वामिवात्सल्य, जिनोनी शांतिस्नात्रादिक पांच पूजा, संघभक्ति, गुरुभक्ति, तथा यथाशक्तिदान, देवद्रव्यनी वृद्धि, ज्ञानद्रव्यनी वृद्धि, ज्ञातिभोजन, तथा तीर्थोनी माटी अने सर्व औषधिओथी मिश्रित थएलां तीर्थोदकना स्नानथी माणस पवित्र थाय छे.

उपर प्रमाणे जो क्रिया न करे, तो तेने ज्ञातिबहार मेलवो, तथा तेनी साथे एक पंक्तिए भोजन करवुं नहीं.

हवे भील तथा चमारादिकने घेर जे माणस भोजन करे, तेनी शुद्धि जिनागममां नीचे प्रमाणे कहेली छे.

चालीस उपवास, तथा तेटलांज एकासणां, चार तीर्थयात्रा त्रण साधर्मीवात्सल्य, शांतिस्नात्रादिक तथा पूर्वनी पेठे संघपूजा, गुरुपूजा, दान, देव द्रव्यनी वृद्धि, ज्ञातिभोजन अने तीर्थोदकादिकथी स्नान करवुं.

हवे दीकरी, माता तथा चांडालणीसाथे संभोग कर्याथी थतुं प्रायश्चित्त कहे छे.

पचास उपवास, त्रीस आंबेल, दश छठ, नव अठम, पचास एकासणां, एक लाख स्वाध्याय, पांच तीर्थयात्रा, पांच जिनपुजा, गुरुपूजा, संघपूजा, सुपात्र दान, तथा बाकीनुं सघलुं पूर्वनी पेठेज जाणी लेवुं. (अने तेटलुं कार्य जो न करे, तो तेने ज्ञातिबहार मेलवो.)

कारुना (कारीगरना) घरमां रहेवाथी पांच उपवासे शुद्धि थाय छे, अने तेने घेर भोजन करवाथी दश उपवासे शुद्धि थाय छे.

गौहत्या, ब्रह्महत्या, बालहत्या, साधुहत्या, अने स्त्रीहत्या करनारनुं अन्नभोजन कर्याथी दश उपवासे शुद्धि थाय छे.

जे गोत्रनुं आपणे भोजन करता न होइए, ते गोत्रनुं भोजन करवाथी त्रण उपवासे शुद्धि थाय छे.

हवे म्लेछना देशमां रहेवाथी तेउना आग्रहथी पोते म्लेछरुप थयो होय, अथवा म्लेछोना केदखानामां रहेवाथी अनदयनुं भोजन कर्युं होय, तेम अपेय पदार्थनुं पान कर्युं होय, अथवा म्लेछोनी साथे बेसीने भोजन कर्युं होय, वली विवाहना कारणादिकथी तेउनी ज्ञातिमां प्रवेश कर्यो होय, वली अज्ञान दशाथी महाहिंसादिक कार्य कर्युं होय, तो तेनी विशोधन प्रायश्चित्तथी शुद्धि थाय छे.

" हवे ते विशोधन प्रायश्चित्तनुं स्वरूप कहे छे."

त्रण दिवससुधि वमन करवुं. पछी त्रण दिवससुधि जुलाब लेवो (वमन थवाने लाघण करवी, अने जुलाब थवाने घव खावा.) पछी सात दिवससुधि भूमिपर सुवुं. ते थवाने उपरना भागमां चतुंबरना काटोनो अग्नि करवो. पछी सात दिवससुधी पाछो नीचेना भागमां अग्नि करवो. (ए थवाने फक्त एकमुठी मगनुं भोजन करवुं.) पछी दाढी मूछ तथा मस्तक मुंडाववुं.

पछी सात दिवसोसुधि पंच गव्यथी स्नान करवुं (ते वखतेपण फक्त दूध पीने प्राणाधार करवो.) पछी मुंडन करावी एकसोने आठ तीर्थोदकना घडाथी स्नान करवुं. तेम देवनास्नानना पाणीथी तथा गुरुना चरणोदकथी स्नान करवुं. एवी रीते शुद्ध थइने समता पूर्वक देवगुरुने वंदन करवुं. पछी शुद्ध बुद्धिथी साधुपूजा तथा संघ पूजा करवी.

पछी सुपात्रे दान देइ त्रण तीर्थयात्रा करवी. एवी रीते विशोधनारूप प्रायश्चित जाणवुं.

इत्येवं वर्णिता त्वत्र, विशुद्धिः सर्वदेहिनाम् ॥
समासतो विशेषोऽत्र, ज्ञेयो ग्रंथांतराद्बुधैः ॥ १ ॥

अर्थ– एवी रीते अहीं टुंकामां सर्व प्राणीओनी विशुद्धि कही, तेनुं विशेष वृत्तांत पंडितोए बीजा ग्रंथथी जाणी लेवुं.

॥ इति लौकिक प्रायश्चित्त स्वरूपम् ॥

एवी रीते श्री चोवीसे तीर्थंकरनी स्तुति करीने सर्व लोकोना उपकारमाटे, तथा प्रजा अने राजाना बोधमाटे आ लघु अर्हन्नीति नामनुं शास्त्र रच्युं छे.

एवी रीते आ अर्हन्नीति नामना ग्रंथनुं गुजराती भाषांतर डित श्रावक हीरालाल वि. हंसराज जामनगरवालाए यथाम करेलुं छे. तेमां प्रमादथी जे कंइ भूल थइ होय ते सुज्ञजनोए ारीने वांचवुं.

इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचिते चौलुक्यवंशभूषण परमार्ह- ारपाल भूपाल शुश्रूषिते लघ्वर्हन्नीतिशास्त्रे लौकिकप्रायश्चित्त वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

ीनपुण्या न पश्यंति, रागांधास्तत्वसंस्थितिम् ॥
ाभेऽलाभफलं चैव, लभंते ते नराधमाः ॥ १ ॥

सोऽयं ग्रंथः गुरुश्रीमच्चारित्रविजयसुप्रसादात् ॥ श्रीरस्तु ॥

जाहेर खबर.

सर्वे जैनबंधुओने मालम थाय जे अमारा तरफथी हालमां नीचेना नवा अपूर्व जैनी ग्रंथो, गुजराती जाषांतर साथे छपावीने पाकां पुठांथी बांधी बहार पडवामां आव्या छे.

योगशास्त्र.– (कर्ता श्री हेमचंद्राचार्य) किम्मत रु. ३–४–०
सामुद्रिक शास्त्र.(कर्ता श्री जद्रबाहुस्वामि)किम्मत रु. १–०–०
शुकनशास्त्र.– (कर्ता श्री जिनदत्तसूरि) गुजराती लीपीमां छे किम्मत रु. ०–६–०
प्रतिष्ठाकल्प. (कर्ता श्री सकलचंद्रजी) किम्मत रु. ०–८–०
जलजात्रादिविधि.–(कर्ता श्री रत्नशेखरसूरि) किम्मत रु.–६–०
अष्टकजी.–(कर्ता श्री हरिजद्रसूरि, टीकाकार श्री जिनेश्वरसूरि) किम्मत रु. १–१२–०
कल्पसूत्र.(सुखबोधिकाटीकानुं गुजराती जाषांतर चित्रोस.)२–८–०
धर्म सर्व स्वाधिकार. (कर्ता श्री जयशेखरसूरि) तथा कस्तूरिप्रकरण. (कर्ता श्री हेमविमलगणि) कि. रु. ०–८–०
शत्रुंजय माहात्म्य खंड पेहेलो(कर्ता श्री धनेश्वरसूरि)कि. रु.२-४-०
वैराग्यकल्पलता. (कर्ता श्री यशोविजयजी उपाध्याय)रु.३-०-०
हिंगुलप्रकरण.(कर्ता श्री विनयसागरोपाध्यायजी) रु. ०-५-०
जैनकुमारसंभव महाकाव्य. (कर्ता श्री जयशेखरसूरि) रु.१-१२-०
जद्रबाहु संहिता.(जैननोअपूर्वज्योतिषग्रंथ)(कर्ताश्री जद्रबाहुस्वा.)
मेघमालाविचार. (कर्ता श्री विजयप्रजसूरि.) कि. रु.-०-५-०
त्रीलोक्य प्रकाश (अथवा) चैत्यवंदन चोवीशी रु. ०-५-०

शा. भीमसिंह माणेक
ठे. मुंबई, मांडवीबंदर, शाकगली.